Gandhi Memorial College Of ... talab Jammu

कोहरा और धूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Fundi... MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोहरा और धूप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जे० एण्ड के० अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोहरा और धूप

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc. No. 566 (D)
Dated 16-9-09

संकलन एवं लिप्यंतरण

रमेश मेहता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नागरी लिपि में प्रकाशित

जम्मू-कश्मीर के प्रतिनिधि उर्दू लेखकों

की रचनाओं का एकमात्र संकलन

श्री मुहम्मद यूसुफ़ टेंग, सचिव द्वारा जम्मू एण्ड कश्मीर अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज़, नहर मार्ग, जम्मू के लिए प्रकाशित तथा कान्ति ऑफसेट प्रिंटिंग हाउस, सरवाल रोड, जम्मू द्वारा मुद्रित / प्रथम संस्करण : 1977 / सर्वाधिकार : अकादमी द्वारा सुरक्षित / मूल्य : 12.40 रुपये ।

KOHRA AUR DHOOP

Select Urdu Prose and Poetry, written by the writers of Jammu and Kashmir ; compiled and transliterated by

RAMESH MEHTA

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

ग़ज़लें

मीर गुलाम रसूल नाज़ुकी 3 / मनोहर लाल दिल 4 / नृसिंह सहाय शौक़ 5 / अर्श सहबाई 6 / आबिद मनावरी 7 / हकीम मंज़ूर 8 / इशरत कश्मीरी 9 / डॉ० सरवन नाथ आफ़ताब 10 / विजय सुमन 'सोसन' 12 / रहबर जदीद 13 / विद्या रत्न 'आसी' 15 / अजीत कुमार बक्षी 16 / ओ० पी० शर्मा 'सारथी' 17 / अशरफ़ साहिल 18 / इरज कश्मीरी 19 / फ़ारूक़ मुज़तर 20 / रफ़ीक़ राज़ 21 / रसा जावदानी 22 / बृज मोहन शफ़क़ 23 / बशीर अहमद मग्रवाही 24 / शहबाज राजौरवी 25 / जैंड सैंमी 26 / मरग़ूब बानिहाली 27

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नज़्में

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

1.	शश-रंग	केसर कलंदर	31
2.	मेरी कहानी	डॉ० हामिदी कश्मीरी	33
3.	मुझे जीने से उल्फ़त है	ग० म० ताऊस	36
4.	तसलीस	फ़ारूक़ नाज़ुकी	38
5.	सायों का तआक़ुब न करो	मुहम्मद यासीन	40
6.	बिल्ली	क़ाज़ी ग़ुलाम मुहम्मद	41
7.	मैं, उर्दू और तुम	शहज़ोर कश्मीरी	43
8.	मांग का सिंदूर	महेन्द्र रैणा	45
9.	नतीजा-ए-फ़िक्र	निशात किश्तवाड़ी	47
10.	ज़मर्रद की बस्ती	शुजा सुल्तान	49
11.	गीत	महेश शर्मा	50
12.	गुफ़तनी	फ़रहत गीलानी	51

कहानियां

1.	क़ुतबे	प्रेमनाथ परदेसी	55
2.	बंद खिड़की की रोशनी	ठाकुर पुंछी	66
3.	कश्मीर की बेटी	रामानन्द सागर	74
4.	उड़ान	मोहन यावर	81
5.	उबाल	पुष्कर नाथ	88
6.	रात इक सिमटी हुई	नूर शाह	96
7.	गले सड़े फल	तेजबहादुर भान	112
8.	और रात मर गई	अख्तर मही-उद्-दीन	123
9.	औरत और मर्द	उमेश कौल	131
10.	सराब	हृदय कौल भारती	141
11.	लम्हों की सलीब	रियाज़ पंजाबी	146
12.	सड़क इन्साफ करती है	किशोरी मनचन्दा	155
13.	बेज़ुबान	मालिक राम आनन्द	164
14.	टूटे रिश्तों का रोग	ज्योतीश्वर पथिक	168

एकांकी-नाटक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1.	घरौंदे	अली मुहम्मद लोन	175

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी बात

●

कश्मीर ! एक नाम जो सदियों से दुनियां भर के लोगों के दिलों में हलचल मचाता आ रहा है। कश्मीर ! प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त एक ऐसा अनुपम प्रदेश जिसे संसारप्रसिद्ध कवियों, कलाकारों और सामंतों ने **धरती का स्वर्ग** कह कर पुकारा··· जो आज भी भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण पर्यटन-स्थल है। इस धरती के सम्बन्ध में भारत की ही नहीं बल्कि देश विदेश की अनेक भाषाओं में रचित साहित्य में एक ही धारणा को बलपूर्वक पुष्ट करने की चेष्टा की गई कि यह सुख-समृद्धि का घर है। प्रकृति-नटी की रंगस्थली के विषय में इस धारणा से हट कर भी क्या कुछ सोचा जा सकता था ? शायद नहीं ! कारण स्पष्ट है···इस धरती के सौंदर्य से अभिभूत हो उठने वालों ने ठंड में लकड़ी काटते लक्कड़हारे के पैरों की सूजन और हाथों की जड़ता को देखने से प्रायः इंकार किया था। वे लोग केवल सुन्दर के पुजारी थे—सत्य और शिव की तलाश उनके लेखे किन्हीं और लोगों के जिम्मे लगाया गया काम था। यही कारण था कि इस प्रदेश के जन-मानस में होने वाली उथल-पुथल से आंखें चार करने की किसी भी कवि या कलाकार ने कभी कोशिश नहीं की··· उनकी आंखें सदा प्रकृति के मायाजाल में उलझ कर रह गईं।

ऐसी हालत में उन बेबस, मजबूर और लाचार लोगों की बात कौन करे जो धरती के स्वर्ग की गोद में पलते हैं किन्तु उससे प्राप्त होने वाले आनन्द से अनछुए रह जाते हैं क्योंकि उनके पेट में जलती ज्वाला को शांत करने के लिए प्रकृति के रमणीय सौंदर्य की नहीं ठोस अन्न की आवश्यकता होती है। यह लोग सुविधाओं को प्राप्त करने के साधनों के स्थान पर जीवन की मूलभूत समस्याओं से जूझते हुए ही जिन्दगी काट देते हैं। सन् 1946 में इस प्रदेश में 'अंजुमने-तरक्कीपसंद मुसन्नफ़ीन' की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Dr. R. L. Shant
Professor of Hindi

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थापना हुई। इस अंजुमन से जुड़े लेखकों ने अध्यात्म के खोल को उतार फेंका, रूढ़ियों की शृंखलाएं तोड़ डालीं तथा भीतरी गंदगी को ढांपने वाले सुन्दर आवरणों को तार तार कर दिया··· और तब कश्मीर के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ मानव-जीवन के संघर्ष का शाश्वत सत्य भी इस धरती पर रचे जा रहे साहित्य में उद्घाटित होने लगा। अन्य भाषाओं की भांति उर्दू भाषा के साहित्य ने भी दृष्टि के इस परिवर्तन को अंगीकार किया। आम आदमी की बात इस अदब में एक स्पष्ट धारणा के अंतर्गत की जाने लगी। बंटवारे के कारण झेली जाने वाली यातना, भारत-पाक युद्धों के परिणामस्वरूप उपजी वेदना, धार्मिक भेदभाव भुला कर आक्रांता का मुक़ाबिला करने की कसक, बटे हुए व्यक्तित्वों की टूटन, प्रगतिशील धारा का प्रवाह, मोह भंग की यंत्रणा और कुछ भी न घट पाने के कारण उपजी उकताहट··· सब मिलकर, प्रदेश में, स्वातंत्र्योत्तर उर्दू साहित्य को एक नया आयाम प्रदान कर रहे थे।

●

जम्मू-कश्मीर में सन् 1947 के बाद लिखी जाने वाली उर्दू ग़ज़ल को एक नया मुहावरा हासिल हुआ जिसमें वर्तमान जीवन की विसंगतियां उभर कर सामने आने लगीं। अजनबीपन का एहसास, असुरक्षा की भावना, कुंठा एवं संत्रास जन्य मानसिकता उर्दू ग़ज़ल को एक विशेष रूपाकार प्रदान करने लगी। प्राचीन और नवीन···दोनों पीढ़ियों के लोग निहायत ईमानदारी के साथ अपने अपने रास्ते पर ग़ामज़न थे और आज भी हैं···

उर्दू नज़्म ने स्वातंत्र्योत्तर काल में कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से बेहद तरक्की की है। इसका प्रमाण इस संकलन में प्रकाशित कविताएं हैं जिन्हें परम्परागत उर्दू नज़्म से एकदम अलग करके देखा जा सकता है।

●

आम आदमी की अभिलाषाओं का घेरा बड़ा सीमित होता है किन्तु कितने दुख की बात है कि वह इस सीमित घेरे में भी कभी पूरे पंख पसार कर उड़ नहीं पाता। पंखों को न फैला पाने का दर्द उसके सन्दर्भ में शाश्वत सत्य का रूप ले लेता है। जम्मू-कश्मीर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अपनी भौगोलिक एवं ऐतिहासिक सीमाओं के कारण प्रारम्भ से ही एक पिछड़ा हुआ प्रदेश रहा है। उस पर तुर्रा यह कि यह एक सीमान्त-प्रदेश है। सीमान्त पर स्थित होने के कारण इसे कुछ विशेष स्थितियों को झेलने के लिए अभिशप्त होना पड़ा है। इस अभिशाप को घाटी के उर्दू कहानीकारों ने जिस गहराई से महसूस किया है तथा जिस तीव्रता से इसे अपनी कहानियों में रेखांकित किया है ··इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। इस संकलन में ऐसी अनेक कहानियां आपको मिलेंगी जो आपको भी मेरी तरह सोचने पर मजबूर कर देंगी।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह कहानियां मशीनी युग की यंत्रनाओं को झेलने की गवाही देती हैं तो आर्थिक कारणों से पारिवारिक सम्बन्धों में होने वाले विघटन को रूपायित करके शोषण की राजनीति का भंडाफोड़ भी करती हैं। आज के समाज में, प्रायः सभी स्तरों पर, फैले भ्रष्टाचार का चित्रण इन कहानियों में बड़े कलात्मक ढंग से किया गया है। कथ्य के साथ शिल्प के धरातल पर भी इन कहानियों में पहले के मुकाबिले काफ़ी परिवर्तन आया है। मुक्ति के लिए किए जाने वाले संघर्ष का अनेक कहानीकारों ने प्रतीकात्मक शैली में सफल अंकन किया है। नपुंसक क्रोध से उत्पन्न आस्थाहीन जड़ता इन कहानियों को एक विशिष्ट आयाम प्रदान करती है। सच तो यह है कि नयी उर्दू कहानी पाठक से एक जागरूक विवेक की मांग करते हुए उसे विवश करती है कि वह आदमी और आदमी के बीच उठती दीवारों को फलांग कर समता की भावना से एक ऐसे समाज के निर्माण में जुट जाए जिसका मूलाधार सत्य, शिव और सुन्दर हो।

●

कश्मीरी जनसंख्या का एक बहुत बड़ा भाग कश्मीरी मांझियों का है···जो कश्मीर की नदियों और झीलों की गोद में पैदा होते हैं और उसी में अब्दी नींद सो जाते हैं।

उनकी सभ्यता और संस्कृतिको रूपायित करने वाला एकांकी-नाटक **घरौंदे** वास्तव में उनके सुख-दुख की कहानी कहता है। यह एकांकी–नाटक जिस प्रभाव के साथ खत्म होता है, वह प्रभाव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पूरे संकलन के मूल स्वर को ध्वनित करता है···एक गूंज के
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
साथ। कोहरा और धूप में संकलित लेखकों की रचनाओं का यह अंतिम सिरा कदापि नहीं है···यह तो कारवां का वह हिस्सा है जो खुले में चल रहा है, इसलिए सबकी नज़रों में है···वस्तुतः पहाडियों की ओट में चलने वाले लोगों को तो अभी सामने आना है और मैं मानता हूं कि सम्भावनाओं की दृष्टि से वे लोग कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

●

जम्मू-कश्मीर में उर्दू साहित्य की श्रीवृद्धि करने में इतने अधिक लोग रत हैं कि उन सबको इस ससीम संकलन में एक साथ ले पाना एक दुष्कर कार्य था। फिर भी इस संकलन में मैंने अधिक से अधिक लेखकों को रखने का प्रयास किया है। जो लोग इस संकलन में आने से रह गए हैं···उनसे मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे इसे अपनी उपेक्षा न मानकर मेरी मजबूरी मानें और मुझे क्षमा करने की कृपा करें।

●

और अब एक स्पष्टीकरण वर्तनी के प्रयोग के सम्बन्ध में। उर्दू के देवनागरी में जो मानक कोश प्रकाशित हुए हैं···इस संकलन के संदर्भ में उन्हीं को वर्तनी का आधार बनाया गया है। हिन्दी-पाठकों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए कहीं कहीं मैंने थोड़ी सी स्वतंत्रता भी ली है। भूक के स्थान पर भूख और वो के स्थान पर वह आदि शब्द इसी संदर्भ में देखे जा सकते हैं।

●

मूल फारसी लिपि से देवनागरी में लिप्यंतरण करते समय मुझे अपने डिपुटी सेक्रेटरी श्री जितेन्द्र शर्मा तथा डोगरी शब्दकोश विभाग में मेरे सहयोगी श्री शिव राम 'दीप' से जो सहयोग मिला है उसके लिए मैं उनका हृदय से आभारी हूं।

—रमेश मेहता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग़ज़लें

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मीर गुलाम रसूल नाज़ुकी

●

वह खुलूस है मेरे नाज़ में मेरी बन्दगी के गुदाज़ में
कि मैं नूरे-दीदाए-हूर हूं तू अभी है सीग़ाए-राज़ में

यह ज़हूर नूरे-सहर नहीं यह फ़रोग़ शम्सो-क़मर नहीं
शबे-ग़म उछल के सिमट गई ख़मो-पेचे-जुल्फ़े-दराज़ में

मेरे ज़िक्रो-फ़िक्र को कर अता वह अबद के ताबे-अबद रहे
मेरा ज़िक्र शामो-इराक़ में मेरा फ़िक्र रूमो-हिजाज़ में

वह शहीदे-नाज़ें-वफा हूं मैं वह न्याज़मंदे-जफ़ा हूं मैं
शबो-रोज़ जिसके बसर हुए तबो-ताब नाज़ो-न्याज़ में

न सरूर मेरे रुकूह् में न हज़ूर मेरे सजूद में
न निजाम मेरे क़याम में न गुदाज़ मेरी नमाज़ में

❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनोहर लाल दिल

ज़िन्दगी इससे परेशां[1] कभी ऐसी तो न थी
अब है जो हालते-इंसां कभी ऐसी तो न थी

थी मगर मौत का सामां मगर ऐसी तो न थी
जान लेवा शबे-हिज्रां कभी ऐसी तो न थी

अब तो हर गाम पे उठते हैं हज़ारों फ़ितने
दोस्ती हश्र-बदामां[2] कभी ऐसी तो न थी

आज कुछ लाले-जले-दिल तो नहीं रखे हैं
आपकी बज़्म चिरागां कभी ऐसी तो न थी

ज़िन्दगी खूगरे-आलाम[3] है अपनी वरना
बेअसर गर्दिशे-दौरां कभी ऐसी तो न थी

आदमीयत का इसी दौर में कुछ मोल नहीं
पहले नाक़द्री-ए-इंसां कभी ऐसी तो न थी

आज क्या बात तुम्हें जोश में लाई ऐ दिल
तब्अ-आशुफ्ता[4] ग़ज़ल-ख्वां कभी ऐसी तो न थी

1. परेशान। 2. प्रलयकारी। 3. ग़म की आदी। 4. परेशान तबीयत।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नृसिंह सहाय शौक़

●

यह क़हर है कि देख के कुछ नातुवां[1] मुझे
मंज़िल से दूर छोड़ गया कारवां मुझे

हूं इन्तहाये- इश्क में ख़ुद से भी बेनियाज़
अपने पे हो रहा है किसी का गुमां' मुझे

दुर्दे-दुई[2] न सागरे-वहदत[3] में हो कहीं
कुछ साफ सी शराब दे पीरे-मुग़ां[4] मुझे

किस वक्त आ के बैठे हो सुनने को हाले-दिल
जब भूल ही गई है मेरी दास्तां मुझे

वक्त-ए-निज़ाअ[5] है पूछते हो माजरा-ए-दिल
डर है कहीं जवाब ने दे दे ज़वां मुझे

दिल की यह आरज़ू कि करे सिजदा बार-बार
का'बे से कम नहीं है तिरा आस्तां मुझे

बिन तेरे 'शौक़' ज़िन्दगी बेकैफ़ सी रही
जुज़[6] तेरे और कौन था विर्दे-ज़बां[7] मुझे

❖

1. निर्बल। 2. द्वैत की तलछट। 3. अद्वैत। 4. अग्निपूजकों का धर्मगुरु। 5. झगड़ा। 6. अतिरिक्त। 7. किसी बात को बार बार कहना या करना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अर्श सहबाई

•

अज़ीयतों[1] से बसद शौक़ हमकिनार करो
कि हक़-परस्त हूं मैं मुझको संग-सार[2] करो
मुझे क़बूल है मैंने किया है जुर्मे-वफ़ा
किसी सबील[3] से मुझको सुपुर्दे-दार[4] करो
अगर शऊर की दौलत से तुम नहीं महरूम
ख़ज़ां के रंग से अंदाज़ा-ए-बहार करो
यह ख़ामुशी की ज़बां भी गिरां[5] गुज़रती है
बयाने शौक़ में कुछ और इख़्तिसार[6] करो
किसी जनम में मुलाक़ात हो ही जायेगी
जो बदगुमां हो तो अब मेरा इंतज़ार करो
कहीं यह तर्के-मुलाक़ात का सबब न बनें
तअ़ल्लुकात को इतना न उस्तुवार[7] करो
यहां नहीं है कोई क़द्रे-फ़िक्रो-फ़न ऐ 'अर्श'
सुख़न को तर्क करो फ़िक्रे रोज़गार करो

1. कष्ट। 2. पत्थरों से मारना। 3. तदबीर। 4. सूली। 5. बोझिल। 6. संक्षिप्त करना। 7. दृढ़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आबिद मनावरी

●

दश्ते-तनहाई[1] का आसेब डराता है मुझे
इस ख़राबे[2] में कहां छोड़ के जाता है मुझे

सूरते-मोम है ऐ दोस्त ! अभी मेरा वुजूद
मैं पिघल जाऊंगा क्यों आंच दिखाता है मुझे

कल जिसे मैंने दिखाई थी रहे-मैखाना
आज वह पीने के आदाब सिखाता है मुझे

वह अजब ढंग से करता है परेशां मुझको
इक नया रूप मिरा रोज़ दिखाता है मुझे

रात आती है तो करती है मिरी दिलजोई
दिन जब आता है तो दिन भर ही रुलाता है मुझे

सब्त[3] सदियों से हैं जिस पर मिरे क़दमों के नुक़ूश
रहनुमा आज वही राह दिखाता है मुझे

एक भी चेहरा शनासा न मिला ऐ 'आबिद'
यह भरा शहर भी सहरा नज़र आता है मुझे

❖❖

1. अकेलेपन का वीराना । 2. उजाड़ । 3. अंकित ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हकीम मंज़ूर

●

यह किसे मालूम है मैं दर्द की किस हद में हूं
मैं इक आईना हूं लेकिन पत्थरों की ज़द[1] में हूं

किस तरफ़ भागूं यहां कोई कमीं-गह[2] ही नहीं
मैं खड़ा हैरतज़ादा मैदाने-नेक-ओ-बद में हूं

देख कर इस शहर में हर सिम्त टूटे आईने
छुप के मैं बैठा हुआ एहसास के मर्क़द[3] में हूं

है कोई गौतम यहां जो इस निदा[4] को सुन सके
सुन रहा हूं मैं चला आ, मैं इसी बरगद में हूं

क्यों न ऐ 'मंज़ूर' हर लम्हे से लूं मैं इंतिक़ाम
मुझको यह एहसास है मैं ज़ीस्त के मश्हद[5] में हूं

❖

1. निशाना। 2. आड़। 3. क़ब्र। 4. आवाज़। 5. ज़िन्दगी की क़त्लगाह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by,IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इशरत कश्मीरी

ज़मीं पे बोझ बना है वह ज़िन्दगी के लिए
जो काम आदमी आए न आदमी के लिए

सहर के नूर से वह ख़ुद-ब-ख़ुद फ़ना होंगे
अंधेरे जितने भी आ जाएं तीरगी के लिए

बहार ! खूने-शहीदां से हैं वतन के चमन
गुलों पे शबनमी छींटे हैं ताज़गी के लिए

ख़ुशा[1] कि लज़्ज़ते-सोज़े-फ़िराक है वरना
ग़मे-हयात था भारी फ़सुर्दगी[2] के लिए

नहीं क़मर की दिलावेज़ चांदनी का जवाब
सितारे लाख फ़लक पर हों रोशनी के लिए

नहीं है दौलते-कोनैन[3] भी बदल इसका
यह चन्द लम्हे जो मख़सूस थे किसी के लिए

वही है आपका 'इशरत' चमन में जिसको कहा
हवा चले मेरी ज़ुल्फों की सरकशी के लिए

1. क्या खूब। 2. उदासी, खिन्नता। 3. दो जहान की सम्पत्ति।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डॉ० सरवन नाथ आफ़ताब

●

महफ़िल में आज कौन ग़ज़लख्वां नज़र आया
इल्फ़ाज़े-मा'नी का इक तूफ़ां नज़र आया

उरियां कभी देखा कभी पिन्हां नज़र आया
जलवा तिरा हर रंग दरख्शां[1] नज़र आया

हर बुत में मुझे जलवा-ए-जानां नज़र आया
हर खार में पोशीदा गुलिस्तां नज़र आया

देखे हैं बहुत अहले-हवस दैर-ओ-हरम में
हिन्दू कोई देखा न मुसलमां नज़र आया

वह वक्त गया दीद मयस्सर न थी उनकी
हर माह-वश[2] इस दौर में उरियां नज़र आया

अब पूछता है कौन भला जिन्से-वफ़ा को
हर शख्स ज़रो-माल का ख्वाहां नज़र आया

आंखों में समाया है मेरी जलवा-ए-जानां
सहरा में मुझे रंगे-गुलिस्तां नज़र आया

इस दर्जा ज़माना में क़नायत की कमी है
ज़रदार भी बाहाले-परेशां नज़र आया

1. प्रकाशमान। 2. चांद जैसी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

समझा था जिसे रिन्दे-ख़राबाते-ज़माना[3]
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
देखा जो उसे मैंने तो ईसा नज़र आया

इक दौरे-क़यामत था कि गुज़रा मेरे सर पर
अब क्या कहूं क्या क्या शबे-हिज्रां नज़र आया

किस्मत पे 'आफ़ताब' को नालां नहीं देखा
हर हाल में वह शादां-ओ-खंदां[4] नज़र आया।

❖

3. ज़माना जिसे मधुशाला का वासी मद्यप समझता था। 4. प्रसन्न।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विजय सुमन सोसन

●

तुमने जो दिल पर तीर मारे हैं
अब वही ज़ीस्त[1] के सहारे हैं

यह जो कुछ लोग प्यारे प्यारे हैं
दिल की दुनिया के चांद तारे हैं

तुम हमारे नहीं तो किस के हो
हम किसी के नहीं तुम्हारे हैं

तेरी नज़रों को कौन दे इल्ज़ाम
हम सब अपनी क़ज़ा[2] के मारे हैं

चश्म-पुर-नम है अक्से-शामे-फ़िराक़
वही जुल्मत वही सितारे हैं

जिन्दगी का तो आसरा टूटा
ऐ अजल अब तेरे सहारे हैं

सफ़ा-ए-हुस्न के नक़्शे-जमील
निगह-ए-इश्क ने उभारे हैं

शामे-ग़म मेरे आंसुओं पे न जा
ये मेरे सुबह के सितारे हैं

दिले-'सोसन' फ़रेब खाता है
फिर तो कहना कि हम तुम्हारे हैं

---

1. ज़िंदगी 2. मौत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहबर जदीद

●

ख़ाक के ज़र्रे हीरे मोती लाल-ओ-गुहर हैं सारे पत्थर
दूर से चाहे कुछ भी कह लो हैं यह चांद सितारे पत्थर

पत्थरों के इस शहर में अब इख़्लासे-महब्बत[1] तौबा ! तौबा !
नाम वफ़ा का लब पर लाकर खाएगा बन्जारे पत्थर

पत्थर के बुत देख के अक्सर दिल ने मुझ से यह भी कहा है
जीना है तो बुतख़ाने में जा तू भी बन जा रे पत्थर

ज़ीस्त की इस हीरा मंडी में हमने यह देखा है अक्सर
हमने जिसको फूल दिए हैं उसने हमको मारे पत्थर

जिनके सामने जाकर अक्सर पत्थर हो जाते हैं होंट
वह जो हाथ लगा दें इनको बन जायें मह-पारे पत्थर

क़ौम की बुनियादों में उनका ख़ौफ़ अभी तक जारी है
तपती धूप में जिन हाथों ने तोड़े और संवारे पत्थर

मेरी राहों में कोई भी चांदी की दीवार नहीं है
मैं मुफ़्लिस की आंख का तारा मेरे हैं यह सहारे पत्थर

ऊंचे महलों में रहते हैं ऊंची ज़ात के ऊंचे लोग
उनकी ठोकर में रहते हैं मुफ़्लिस और बेचारे पत्थर

---

1. निष्कपट प्रेम।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिन लोगों ने जीते जी मूंग दले थे सीने पर
मेरी तुर्बत[1] पर रखने को लाए हैं वह भारे पत्थर

संगे-राह समझकर जिसने हमको ठोकर मारी है
उसके पांव के नीचे 'रहबर' बन जायें अंगारे पत्थर

1. समाधि।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विद्या रत्न 'आसी'

●

बेहाल से हम क्यों रहते हैं क्यों चाक है दामन क्या कहिये
यह जोग लिया है बरसों से हमने किस कारण क्या कहिये

ऐ मंज़िले-हक़ के दीवानो ! कुछ होश करो कुछ कर गुज़रो
क्या जानिये कब क्या कर गुज़रे यह वक्त का रावण क्या कहिये

इक वह भी आलम था कि तिरी पल भर की जुदाई डसती थी
अब सोच है क्यों कर काटेंगे परबत सा यह जीवन क्या कहिये

ज़ख्मों पे ज़ख्म भी खाता है इस पर भी यह कब बाज़ आता है
फिर प्यार के नग़मे गाता है इस दिल का लड़कपन क्या कहिये

जब याद किसी की आती है हम खून के आंसू रोते हैं
ऐ 'आसी' ! यूं भी आंखों से बरसा है सावन क्या कहिये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अजीत कुमार बक्षी

●

वह दिल बुझा कि दर्द का एहसास मिट गया
मैं डर के अपनी ज़ात के अन्दर सिमट गया

बिखरे पड़े हैं आईने चारों तरफ़ मेरे
मेरा वुजूद सैंकड़ों अक्सों में बट गया

दर्द-आश्ना मिले कोई शायद यह सोच कर
हर राहगीर से मेरा साया लिपट गया

आबाद जिसमें शहरे-ग़ज़ालां था इक कभी
वह दिल वह रंग-ओ-नूर का गहवारा लुट गया

शहरों में आ बसे हैं अब आवारगाने-इश्क[1]
वह बस्तियां बसी हैं कि सहरा सिमट गया

वां मेरे ख़ूं की मौज का साहिल था मैं न था
तेरे बदन का लम्स[2] जहां से पलट गया

पूछा जो उसने हाल तो आंखें उमड़ पड़ीं
बरसों का इक गुबार सा दिल पै था छट गया

❖

1. इश्क के दीवाने। 2. स्पर्श।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्रो० पी० शर्मा 'सारथी'

लम्हों के ज़ख्म सोएंगे, गर तुम सुला सको,
जाग्रो पकड़ के सुब्ह को लाग्रो जो ला सको।

वो मैं ही था कि भूल गया ज़ख्म रात के,
वो तुम नहीं कि शब के मुक़ाबिल भी ग्रा सको।

कांटों का है फसाना तो डरते हो किस लिये,
सुन लेंगे ग्रहल-ए-दर्द ग्रगर तुम सुना सको।

शीशे की ग्रांख काम न देगी उतार दो,
निय्यत की ग्रांख चाहिये गर तुम लगा सको।

मैंने तो रेत छान-के ग्रपने जलाए हाथ,
मुमकिन नहीं कि तुम कोई जादू जगा सको!

चिल्ला रहे हो, जान, ग्रदा, जिस्म, लब, विसाल,
ग्रावाज़ दो लहू को ग्रगर तुम बुला सको।

तुम 'सारथी' के दोस्त हुए हो बजा मगर,
वो तुम नहीं कि ग्राशियां उसका जला सको।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अशरफ़ साहिल

●

हर सुबह ले के आई नई ख्वाहिशों के दाम
हर शाम ले के आई नए हादिसों के जाम

मुझसे सफर हयात का तन्हा न कट सका
चलता है मेरे साथ सवालों का अज़दहाम

इक याद बन गई थी कभी फ़िक्र का जमाल
अब कर रही है मेरे ख्यालों का कत्ले-आम

टकरा के मुझसे गर्दिशे-दौरां भी रुक गई
अब थक गई है मुझसे ये ले ले के इन्तिक़ाम

शायद यह मेरी प्यास का है आखरी मुक़ाम
हाथों में जाम और ज़ुबां पर खुदा का नाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इरज कश्मीरी

●

इस आलमे नफ़सा-नफ़सी में हम चाक़-गिरेबां क्या ढूंढें,
आदाबे-सुख़न मालूम नहीं, अंदाज़े सुख़नदां क्या ढूंढें।

एहसास के सांचे में बरसों पिसते आए जज़बे अपने,
दुनियां में सुकून की बज़्म कोई ऐ गर्दिशे-दौरां क्या ढूंढें।

हर फूल है अंगारे जैसा हर शाख़े चमन सूखी-सूखी,
आग़ाज़े गुलिस्तां ठीक नहीं अंजामे-गुलिस्तां क्या ढूंढें।

हर ज़ख्मे-जिगर महका-महका हर दाग़े-वफ़ा उजला उजला,
इस बर्क़ो-शरर के तूफ़ां में इक शम्मे-फ़िरोज़ां क्या ढूंढें।

हर ग़ोशा सूना सूना है हर सिम्त बरसती है वहशत,
वीरानी घर की कम तो नहीं हम दश्तो-ब्याबां क्या ढूंढें।

'इरज' सब शेख़ो-बिरहमन के झगड़े हैं दिखावे की बातें,
हिन्दू बन कर भी कुछ न मिला अब हो के मुसलमां क्या ढूंढें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फ़ारूक़ मुज़तर

●

रोज़ इन ऊंची छतों को ग़ौर से देखा करें,
अपने बौनेपन को आओ और भी बौना करें।

ठोकरें खा खा के इस मंज़िल में और अब क्या करें,
आईनों से अपने चेहरों का पता पूछा करें।

हर नये चेहरे की ख़ातिर दो क़दम ठहरा करें,
जब किताबों को पढ़ा जाये तो फिर सोचा करें।

उलझनें फ़िक्रो-तरद्दुद[1] इज़तिराब[2] आवारगी,
एक दो लम्हों तो अपने आप में ठहरा करें।

दिन के हंगामों ने ख़ुद से बेखबर रखा हमें,
शाम जब आए तो गोया ख़्वाब से चौंका करें।

वक्त से पहले न हो जाएं हवादिस का शिकार,
आने वाले ज़र्द लम्हों को न यूं सोचा करें।

आओ 'मुज़तर' अजनबी लोगों को चाहें टूट कर,
शहर तनहा हो गया है महफ़िलें बरपा करें।

❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

1. चिन्ता एवं असमंजस 2. व्याकुलता।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रफ़ीक़ राज़

●

या उदास आंखों में बादलों का लश्कर है,
या हमारे दिल ही का आईना मकद्दर[1] है

शक्ल से है दीवाना, चाल से है मस्ताना
पत्थरों की बारिश है और वह खुले सर है

चांदनी तो सड़कों पर बाल खोले सोई है
रात की स्याही सब मेरे घर के अन्दर है

या महीब[2] नज़रों को चाटना नहीं आता
या वजूद मेरा ही खण्डहरों का मंज़र है

क्या लिपट गया मुझसे यख़-ज़दा ख़लाओं में
तुम तो हो नहीं सकती पैकरों की चादर है

'राज़' तेरे मिट मिट कर वह उभरने का मंज़र
उन उदास नज़रों में फिर उगा कि महशर[3] है

---

1. धुंधला 2. भयानक 3. महाप्रलय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रसा जावदानी

ताबिशे-हुस्ने-बुत से मैं दिल को गुदाज़[1] क्या करूं
दिल है हक़ीक़त-आशना रंगे-महाज़[2] क्या करूं

हंस के सबा के कान में गुल ने दमे-सहर कहा
रंगे-चमन ख़ज़ां पज़ीर हुस्न पे नाज़ क्या करूं

मैंने कहा था हो कहीं किस्सा-ए-हिज्र मुख्तसर
इश्क ने दी दुआ कि हो उम्रे-दराज़ क्या करूं

जितना भी मैं झुका रहा उतने ही वह खिंचे रहे
काम न अपने आए कुछ रस्मे-न्याज़ क्या करूं

सिद्क़-ओ-सफ़ा तो कुछ नहीं रंग-ए-रया में ऐ 'रसा'
अहले-हरम में बन गई रस्मे-नमाज़ क्या करूं

1. पिघलना 2. युद्ध-स्थल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बृज मोहन शफ़क़

●

यह सोचा था कि राज़ अपना रहेगा राज़दारों तक
मगर हर लब है अब वह जो था महदूद यारों तक

तड़पते हैं अबस[1] उसके लिए जब मौत आयेगी
क़रार आ जायेगा ख़ुद चल के उस दिन बेक़रारों तक

ख़ला[2] में घूरता रहता हूं शायद इसलिए शब भर
नज़र आ जाये कोई राह जो जाती हो तारों तक

ग़म-ए-अय्याम[3] ने हस्ती मिला दी ख़ाक़ में जिनकी
छिड़ा जब ज़िक्र उन यारों का जा पहुंचा मज़ारों तक

सफ़ीना घिर गया ऐसा तलातम[4] - खेज़ मौजों में
नज़र आता है नामुमकिन पहुंचना अब किनारों तक

तम्मना-ए-दिले मुज़तर[5] मेरे लब तक नहीं आई
तेरी रुसवाई के डर से रही महदूद इशारों तक

मुलाक़ातें हुआ करती थीं तुमसे जिनकी छांव में
चला जाता हूं अब भी बेख़ुदी में उन चिनारों तक

न होता ज़िक्र फूलों का क़फ़स में ऐ 'शफ़क़' लेकिन
छिड़ी जब कुछ ख़िज़ां की बात जा पहुंची बहारों तक

---

1. व्यर्थ 2. शून्य 3. समय का दर्द 4. तूफ़ान 5. परेशान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बशीर अहमद भद्रवाही

●

ले चले बारे-अलम[1] हम भी जहां तक पहुंचे
खो गए शौक में फिर जाने कहां तक पहुंचे

कितना एहसान किया मुझ पे सितमगर तूने !
तेरे नशतर जो मेरे दाग़-ए-निहां[2] तक पहुंचे

हमने कब तेरे तग़ाफ़ुल[3] की शिकायत की है ?
मेरे नाले भी कहां नोक-ए-ज़बां तक पहुंचे

दानाए-जौ के बहाने से निकाला हमको
कितने मासूम थे हम कैसे यहां तक पहुंचे

ज़ब्त कुछ कर भी सके ज़ुल्फ की छांव में 'बशीर'
अश्क-पिनहां थे मगर सैल-ए-रवां[4] तक पहुंचे

---

1. श्रम का बोझ 2. छुपा हुआ दाग़ 3. लापरवाही 4. बहती धारा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहबाज़ राजौरवी

छोड़ दे साहिल और पतवार
देख ले है क्या यह मंझधार

आस का पंछी कहाँ उड़े
शाख़ो - शजर[1] हैं सब नादार[2]

उड़ता हूं हर ख्वाब के साथ
बस की बात नहीं रफ़्तार

शबनम शोले कांटे फूल
ताबीलों[3] का बोझ उतार

दर्द की किरचें और भी चुन
जिस्म हैं ख्वाबों के बेकार

साज़िश - साज़िश सारी रात
कुछ लम्हे बेदार गुज़ार

शे'र - ओ - सुख़न 'शहबाज़' कहां
दोशे - हवा के नक्श उतार

1. वृक्ष और डालियां । 2. दरिद्र । 3. स्पष्टीकरण; स्वप्नफल कहना ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़ैड सैमी

●

आज भंवरों ने महब्बत की कसम खाई है
हर कली देखिये किस तौर से शर्माई है

आज हर गुल पै' वह शोखी है वह रा'नाई[1] है
मैकशो ! जाम उठाओ कि बहार आई है

जिन शहीदों के लहू से हुई तज़ईने[2] - चमन
उन शहीदाने - वतन की हमें याद आई है

ज़ाहिदे - खुश्क भी अब तोड़ ही देगा तौबा
जाम - ओ - मीना की कसम ऐसी घटा छाई है

दिले - बरबाद में उभरी यूं तिरी शक्ले - जमील[3]
जैसे सहरा में कोई झील नज़र आई है

मुर्दा चेहरे भी मुसर्रत से चमक उठे हैं
दौरे - जम्हूर की 'सैमी' यह मसीहाई है

---

1. सुन्दरता । 2. सजावट । 3. सुन्दर चेहरा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मरग़ूब बानिहाली

●

ओजे - कमाल पर है जुनूं इंतज़ार का
रक्सां है डल की मौज पर साया चिनार का

जादू जगा गई है किसी की निगाहे-नाज़
बर्फ़ाब है शोरीदा[1] मेरे कोहसार का

हीमाल से करे है तक़ाज़ा - ए - इल्तफ़ात
बेजा नहीं है फोड़ना सर आबशार का

माना कि मसले - बर्क़ ही आई वह अपने हां
देखे कोई शबाब पे आना बहार का

मक़्तल पे मेरे देर से सरगोशियां हैं क्या
समझाये कोई मुद्दआ ग़फ़लत - श'आर का

गुलचीं की दस्ते - बर्द[2] के ख़तरात टल गए
अफ़वाह को मिला है शरफ़ ऐतबार का

मुझको यकीं है हश्र[3] बपा होगा मेरे बाद
है दूर रस असर मेरे दिल की पुकार का

ख़ुद ज़िक्र अपने हाल का अच्छा नहीं 'मरग़ूब'
हक़ छीनते हो पैरहने - तार तार का

---

1. दीवाना । 2. शीत । 3. क़यामत ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नज़्में

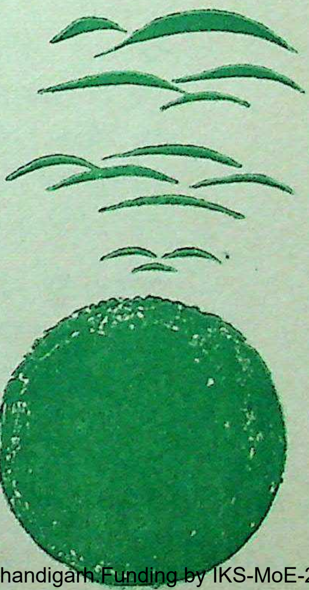

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शश - रंग

कैसर कलंदर

●

याद की हर आहट पर चौंका रात का वीरां बन
ग़म की हल्की आंच से सुलगा आस का पैरहन
दर्द के मारों के घर उतरी ज़ख्मों की बारात
इस्तकबाल के नग़मे गुम सुम अरमानों के साथ
हद्दे - नज़र तक मायूसी के फैले काले हाथ
सदमों के लश्कर आये हैं घायल मेरा मन
याद की हर आहट पर चौंका रात का वीरां बन

दिल के शालामार में महकते कैसे गुल - बूटे
ध्यान के हाथों से लम्हों के सागर भी छूटे
इक इक करते वा'दों के रंगीं' सपने टूटे
नग़मों की हूरों ने छोड़ा खुशियों का गुलशन
याद की हर आहट पर चौंका रात का वीरां बन

शहरों शहरों बात जो फैली खुशबू की मानिंद
गलियों-गलियों फिरता रहूं किस किस का करूं मुँह बंद
इक जवां लम्हे की किस्मत में ग़म का पैबंद
प्यार के गीत सुनाती जाए दिल की हर धड़कन
याद की हर आहट पर चौंका रात का वीरां बन

ज़िंदा लम्हों के नग़मों का डल में धड़का दिल
नाज़ुक [illegible] की परियों का है ये हासिल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लहर लहर तूफ़ान सफ़ीनो लहर लहर साहिल
मल्लाहों की हैरां आंखें हसरत के मसकन
याद की हर आहट पर चौंका रात का वीरां बन

नोश लबों के झुरमुट निकले शोख़ कबाओं में
गुल बदनों की महक भी है नर्म हवाओं में
घोल दिया नग़मों ने अमृत मस्त फ़िज़ाओं में
सीमीं पाजेबों से जागा लम्हों का जोबन
याद की हर आहट पर चौंका रात का वीरां बन

अपने अरमानों की शम्ऐं ले के निकला हूं
वक्त के तीरा जंगल में हूँ राह तो देख सकूं
'क़ैसर' तुझको आज मैं अपने मन की बात कहूँ
रोज़े-अव्वल से हुस्न का शैदाई हूँ जाने-सुख़न
याद की हर आहट पर चौंका रात का वीरां बन
ग़म की हल्की आंच से सुलगा आस का पैरहन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरी कहानी

डॉ० हामिदी कश्मीरी

●

कभी कभी मुझे तख़य्युल के दरीचों से
दिखाई देते हैं बीते दिनों के वीराने
वो दिन कि जब मेरे जज़बात थे सोगवार
लबों पै रक़्सां थे हसरतों के अफ़साने

वो दिन कि जब रुखे एहसास पर थी गर्दे-जमूद[1]
रहीने-ख्वाब गरां था मेरा शऊरे हयात
नज़र तरसती थी उम्मीद की किरण के लिए
मेरे ख्यालों पै छाई थी इक भयानक रात

रहे-हयात पै यूं थक के गिर पड़ा था मैं
हो जैसे खाक बसर तायरे-शिकस्ता-पर[2]
कोई सितारा भटक जाये जैसे ज़ुलमत में
ख़िज़ां में जैसे हो पामाल कोई बर्गे-शजर

अभी हुआ ही न था दामने जिगर सद चाक
मेरे जुनूं को जगाया न था बहारों ने
हज़ार तल्खी-ए-ग़म थी मेरे तआक़ुब में
पनाह मुझ को न बख्शी थी ख्वाबज़ारों ने

1. गतिरोध। 2. परकटा पक्षी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहां थी अश्कों में खूने जिगर की ताबानी
बुझे बुझे से थे पलकों पर आंसुओं के चिराग
दिलो - निगाह पै थे ग़म की ज़ुल्मतों के हिजाब
गुदाज़ शौक़ से सुलगे न थे जिगर के दाग़

किसी की मस्त निगाहों ने यूं न देखा था
हयात झूम के हो जाती ग़र्के कैफ़े - शराब
किसी की ज़ुल्फ की खुशबू से दिल न महका था
अभी खिले ही न थे दिल में आरज़ू के गुलाब

किसी के लब पै न पाई थी शोखी - ए - गुफ़तार[1]
जो मेरे दिल में जगाती नया जनूनो - फसूं
समाई थी न निगाहों में कोई ज़ोहरा - जबीं
जो लूट लेती इशारों से मेरा सबरो - सुकून

वो एक लम्हा तू जब मेरे सामने आई
रुखे - जमीलो - हसीन से नक़ाब सरकाये
तेरे जमाल की गुलरेज़ नज़हतों की क़सम
निगाहो - फ़िक्र की वुस्अत में फूल मुस्काये

तू बन के क़ौसे - क़ज़ाह मेरे दिल पै लहराई
हज़ार रंग ख्यालों में झिलमिलाते हैं
तू आई शानों पै बिखराये रेशमी ज़ुल्फें
मेरी नज़र में हसीं ख्वाब सरसराते हैं

बिखर गये तेरे आरज़ के सीमगूं जलवे
पिघल गये मेरे अहसास में नजूमो - क़मर
तेरी बहारे - तबस्सुम की जलवा सामानी
चमन में जैसे खिल उठे शगूफा - हाए सहर

बहक गए मेरे अरमां वफ़ूरे - मस्ती में
निगाहें तेरी हैं गोया छलकते पैमाने

1. बातचीत का अल्हड़ अंदाज़ ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ये किस अदा से मेरी सिम्त तूने देख लिया
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जहां में आम हुये दो दिलों के अफ़साने

तेरे शबाब की दोशीज़गी[1] की खुशबू से
मेरी हयात के शामो - सहर महकते हैं
तू आई मौज - ए - बादे बहार की मानिंद
मेरी उम्मीद की कलियों के दिल धड़कते हैं

तेरी नज़र ने दिया कैफ़े - सोज़ो - साज़े हयात
भड़क उठी मेरी आहों में ज़मज़मों की आग
हर इक सिम्त मुसर्रत के फूल खिलते हैं
बहारे - कैफ़ में डूबे हैं साज़े शौक के राग

ये क्या असर है तेरे प्यार की लताफ़त में
मैं तल्खियों से भी शिद्दत से प्यार करता हूं
तेरे जमाल की रंगीनियों में गुम होकर
मैं ज़िन्दगी के तसव्वुर में रंग भरता हूं

हंसी का महल नहीं फिर भी आओ मिल के हंसें
हमारे हाल पै अहले - ज़माना हंसते हैं
हमारे शौक़ की नौखेज़ शाखे - गुल की तरफ़
न जाने कितनी ख़िज़ाओं के हाथ उठते हैं

मगर जो आग हमारे दिलों में रौशन है
ये आग ज़ुल्मते - गेती[2] में जगमगाये गी
खिलें गे सिर्फ़ इसी आग से हज़ारों फूल
ये आग हुस्ने - चमन बन के मुस्करायेगी

अब आओ हमको गुज़रना है जिन मराहल से
ग़मे - हयात के उन मरहलों की बात करें
झुकेगा खुद ही ज़माना हमारे कदमों पर
हम अपने दिल के नये वलवलों की बात करें ।

1. अल्हड़पन। 2. जीवन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे जीने से उल्फ़त है

ग० म० ताऊस

क़सम उस आह की जो रात की गहरी ख'मोशी में
किसी मज़लूम के मजरूह सीने से निकलती है

क़सम उस आरज़ू की जो ब - हंगामे - सहर गाही
हज़ारों हसरतों की गोद में करवट बदलती है

क़सम उस शोख़ की जो मुज़मिहल[1] होता है मंजिल पर
क़सम उस आस की जो यास के साये में पलती है

क़सम उस रंग की जो नौजवां मैय्यत[2] पै छाता है
क़सम उस ख़ाक की जो हुस्ने - रानाइ को निगलती है

क़सम उस जबर की जो रूह को पामाल करती है
क़सम उस तेग़ की जो ज़ुल्म के सांचे में ढलती है

क़सम उस क़ौम की जो आफतों सदमों के नर्ग़े में
कभी उठ उठ के गिरती है कभी गिर कर संभलती है

क़सम उस पाप की जो इब्ने - आदिम पर मुसल्लत है
क़सम उस खून की जो आज भी धरती उगलती है

---

1. [illegible]। 2. अर्थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

क़सम उस ज़िंदगी की जो बवाले-दोश बनती है
क़सम उस मौत की जो आज भी धरती उगलती है
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे इस ग़मकदे से फिर भी उल्फ़त है
ये जीना कुछ भी हो लेकिन मुझे जीने से उल्फ़त है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तसलीम

फ़ारूक़ नाज़ुकी

मैं कि हूं अमन के गुलशन का शफ़क़ रंगे - गुलाब
मेरे होंटों पै है शबनम की मुलायम तहरीर
मेरे अवराक़ पै मरक़ूम[1] है उल्फ़त की कथा।

क़िस्सा - ए - ज़ौके - नज़र
क़िस्सा - ए - नग़मो - वसल
और मुलाक़ात की शामों के सुहाने किस्से
आतिशे - लाला - ओ - गुल मुझ से जिला[2] पाती हैं
चश्मे नरगिस को दिया मेरे ही जलवों ने खुमार

मैं हूं पैगम्बरे - गुल और बहारों का रसूल
मेरी खुशबू से सबा अपना बदन धोती है
पैकरे - शाख़ से जब कोई हटाता है मुझे

तो किसी शोख़ के जूड़े में सजा रहता हूं
मैं कि तहज़ीबे-महब्बत से हूं वावस्ता कई सदियों से
मैं वफ़ाओं की अलामत हूं जफ़ाओं का रक़ीब

मैं कि हूं अमन के गुलशन का शफ़क़ - रंगे - गुलाब
किसने सोचा है लूटे मेरी अज़मत का शबाब
आतिशे गुल से वो बदज़ौक़ झुलस जायेगा

---

1. लिखित। 2. जिन्दगी, सुन्दरता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मैं कि हूं वक्त की जुल्मत में फ़रोज़ां क़न्दील
मेरी किरणों में नहा उठते हैं लाखों ज़र्रे
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है मेरी ताबिशे - खुद - सोज़ का हासिल इतना

गर्मी - ए - महफ़िले दिल
क़ामते - सरो ख्याल
रक्स परवाना - ए - ग़म

शोला आरज़े खंदां का जमाल
निगह जिस पै बिखरे हुये ख्वाबों का सीमाब

अज़मते - शोला - रुखां
नज़हते - माहो - शां

मेरी ताबिश से है बाज़ारे बुतां में रौनक़
मैं कि हूं वक्त की आंख पै छाये हुये ख्वाबों का अमीन
दोस्तो, जलवागह - ए - अमन की क़न्दील हूं मैं

सर - सरे - वक़्त मुझे कैसे बुझा सकती है
मैं कि हूं आग के दरिया की तड़पती हुई मौज

मेरी सीमाब तबीयत[1] ने दिया
दर्से - जनूं[2] मजनूं को

लैला - ए - वक्त की कश्ती को लिये दोश पै मैं
ख़ारज़ारों से बियाबानों से हो आता हूं

जब भी रुकता हूं तो इक कोहे गरां की मानिंद
जब भी चलता हूं तो मैं जां से गुज़र जाता हूं

1. चंचल स्वभाव। 2. दीवानगी का पाठ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सायों का तआक़ुब न करो

मुहम्मद यासीन

दोस्तो ! इस तरह बेख्वाब निगाहें लेकर
शब के ढलते हुये सायों का तआक़ुब[1] न करो

हम भी इक कैफ़े-गहे-नाज़ से जब निकले तो
देर तक कुंजे-ग़मे-जां में बड़ी धूम रही

मुज़मिहल[2] हो के सुलगता रहा दिल और दिमाग़
याद के ताक़ पे जलते रहे ज़ख्मों के चिराग़

फिर किसी ख्वाब के मजरूह तसव्वुर की तरह
मुन्दमिल[3] हो गए जब ज़ख्म तो सोचा भी नहीं

याद क्या है, फ़क़त इक मलगज़ी परछांई है
दिल बहल जाये तो फिर दर्द उभरता भी नहीं

चन्द गुज़रे हुये लम्हों को सदा देने से
कारवां उम्र-ए-गुरेज़ां[4] का ठहरता भी नहीं

वक्त बेदर्द सही लाख सितमगार सही
वक्त जैसा कोई ग़मख्वार-ओ-मसीहा भी नहीं

1. पीछा। 2. ग़मगीन। 3. वह घाव जो भर आया हो। 4. बीती हुई आयु।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिल्ली

क़ाज़ी ग़ुलाम मुहम्मद

●

तेरा जिस्म इक हुजूमे-रेशमो-किमख़ाब है बिल्ली
ये तेरी चाल महबूबों में भी कमयाब है बिल्ली

तेरे पंजों के गुण जब मुझसे शायर लोग गाते हैं
गुलाबी नाख़ुने-तदबीर उनको याद आते हैं

उछल कर तेरे मुंह में खुद ही जो चूहा चला आया
वो क़ैदे-ज़िन्दगी और बंदो-ग़म दोनों ही से छूटा

कभी चूहों के रूमानों में शामिल हो गई तन कर
सफाई से तू हीरोइन को ले भागी विलन बनकर

ख़ुदातरसी कहां अब मेरी इस दुनिया में बाकी है
तेरे मुंह से मगर वह राल बन बन कर टपकती है

बुढ़ापे में 'ज़राहे-मसलहत हज को चली जाना
तो फिर चूहे क़दमबोसी को खुद आयेंगे रोज़ाना

अजब क्या है अगर चूहों की हैट अक्सर उछलती है
तेरी रफ़्तार में आवाज़ का कुछ शायबा भी है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तेरी आंखों में ये जो आसमानी रोशनी सी है
प[illegible] है
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरी तय्यन्नत की पाकी ज़हद का ईमान हो जाये
तेरी संजीदगी पर फलस्फी कुर्बान हो जाये

अगर बिल्ली न हो चूहों का ऐसा प्रॉब्लम होगा
हसीनाने-जहां का नाक में हर वक्त दम होगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं, उर्दू और तुम

शहज़ोर कश्मीरी

●

मैं गुल-अंदामों की ज़ुल्फ़ों की महक हूं गोया
दिले-अशा'क की आतिश की दहक हूं गोया
तायराने - चमनिस्तान की चहक हूं गोया
हर गुले - तर्के - तबस्सुम की लहक हूं गोया

यानी उर्दू हूं मैं तुम साथ मेरा छोड़ोगे
हो के शैदाई मेरे मुझ से ही मुंह मोड़ोगे

मैंने जज़बात को कोनीन की वुस्अत दी है
फ़िक्र को किंगरा - ए - अर्श की रिफ्अत दी है
नतक़ को कौसरो-तसनीम की लज़्ज़त दी है
और तख़य्युल को शादाबी-ए जन्नत दी है

तुम मुझे ज़हन-बदर मुल्क-बदर कर दोगे
ज़हर से साग़रे-उम्मीद मेरा भर दोगे

झूम उठा है मेरे नग़मात से हर कोहे-गरां
मुझसे साकत हुई ये मौजे रवां बर्के-तपां
मैंने ख़ामोश मनाज़िर में लगा दी है ज़ुबां
और जज़बाते फरसूदा में भी डाली है जां

मेरे ही तारे-नफ़स तक को भी तोड़ोगे तुम
क्या मुझे चीरोगे, फाड़ोगे, निचोड़ोगे तुम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हुस्ने - तहज़ीबो-महब्बत को निखारा मैंने
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
शौक़ से मुल्के तमद्दुन को सँवारा मैंने
सब को इक मरकज़े उल्फ़त से पुकारा मैंने
क्या कोई रूप है ऐसा जो न धारा मैंने

हैफ़ तुम ग़ैर समझकर मुझे ठुकराओ गे
मेरी तज़लील करोगे मुझे तड़पाओ गे

मैंने आज़ादी-ए इन्सान का तक़ाजा बनकर
आग भरदी है ग़ुलामों की रगों में यकसर
सूर फूंके हैं मुसलसल हरकत के घर घर
और शबिस्तानों में फैलाए हैं अनवारे-सहर

तुम तो आज़ाद हुये क़ैद करोगे मुझको
बनके सैयादे-अजल सैद करोगे मुझको

मैं कि मस्जिद में बसाती रही मन्दिर के सनम
और रौशन की गुरद्वारों में कंदीले-हरम
गोशे गोशे पै वतन के हैं मेरे लुत्फो-करम
और तुम मुझ पै सितम करने की खाते हो क़सम

इक ज़रा सोचो - सितमरानो ज़रा सोचो तो
हिन्दुओ, सिक्खो, मुसलमानों ज़रा सोचो तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मांग का सिंदूर

महेन्द्र रैणा

●

सोचता हूं—
रंग भर दूं क्या तुम्हारी मांग में
ऐ निगारे-ज़िंदगी

ये मेरा माहौल गोया
मेरे दिल की आरज़ुओं का क़फ़न है
अब भी गीतों की कंवारी नग़मगी
ख़ामशी के क़ैद में महबूस है
हर सदा, हर राग, हर आवाज़ संगीन जुर्म है
फिर भी मैंने गीत कुछ छेड़े तो थे
अपने दिल की धड़कनों के साज पर
खामशी को तोड़ देने के लिये
आह ! लेकिन गीत लब तक आते आते खो गये ।

अब भी सपनों के चमनज़ारों के फूल
ख़ार बन कर सांप की मानिंद डसने के लिये
ढूंढ लेते हैं किसी माली का दिल
फिर भी मैंने सपन अपनाने की हिम्मत की तो थी
खून देकर सींच ही डाले थे सपनों के चमन
ताकि कांटों के इवज़ भी फूल ही खिलते रहें
आह ! लेकिन फूल खिलने ही से पहले सपन सारे मर गये ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अब भी [illegible]
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बेच देते हैं कि गोया
ये बाज़ारों में बिकती हुई बेसवा का जिस्म हो
फिर भी मैंने प्यार की दरगाह में सिजदे किये
कायनाते-दिल की हर शै शौक़ से कुर्बान की
ताकि तकदीसे-महब्बत का न हो नीलाम अब
आह ! लेकिन मेरी कुर्बानी पै भी प्यार लुटता ही रहा।

सोचता हूं—
क़ैद में महबूस गीतों से मैं कैसा रंग लूं
सपने डसते ही रहे जो उनसे क्या रंग लूं
बाज़ारों में बिकते प्यार से क्या रंग लूं
ये घिनावने रंग, मैले, मलगजे
तेरी दिलकश मांग का सिंदूर बन सकते नहीं

रंग भरदूं क्या तुम्हारी मांग में
ऐ निगारे ज़िंदगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नतीजा-ए-फिक्र

निशात किश्तवाड़ी

कलम क्यों चल रहा है पेच-ओ-ख़म से
यह जाकर पूछिये अहले-कलम से

कलम इतना सुबक रफ्तार क्यों है
कलम से मुंशियों को प्यार क्यों है

अजायब इसकी सब गुलकारियां हैं
ताजुबखेज़ गौहर बारियां हैं

कहीं यह बादशाह का हाथ बन कर
हुआ है अदल परवर या सितमगर

कहीं यह हाथ में आलिम के आया
तो दरया इल्म-ओ-हिकमत का बहाया

मिला गर शायर-ए-शीरीं बयां को
तो हैरां कर दिया अहल-ए-जहां को

मुसव्वर के जो यह हाथों में पहुंचा
तो खींचा हुस्न का अनमोल नक्शा

कहीं है साक़ी सरशार होता
कहीं है मैकशो - मैख्वार होता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं है [illegible]
कहीं महकूम के दिल पर तसरुफ़

कहीं बनकर फरिशता मौत का यह
है करता रूह को तन से जुदा यह

किसी की ज़िन्दगी वापिस दिलाये
तो मुश्किल में किसी के काम आये

किसी की आन में किस्मत पलट दे
किसी बद-बख़त का तख़ता उलट दे

किसी को ग़म का है पैग़ाम देता
किसी को है खुशी का जाम देता

जहां में है यह क्या क्या गुल खिलाता
हज़ारों अपने जौहर है दिखाता

यह प्यारा शे'र इक हमने सुना है
किसी खुश - फ़िक्र शायर ने कहा है

"कलम गोयद कि मन शाह - ए - जहानम
कलमकश राबदौलत मीर सानम"

❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़मर्रद की बस्ती

शुजा सुल्तान

शब गज़ीदा जबीं
होंट लम्हों की तुंदी में बहते हुये
आंखें सरशारियों के कफ़न में लिपटी हुई सर्द लाशें
बदन राह गुज़ारों पै कटते हुये
काले करीनों में लिपटे हुये शहर के बामो-दर
हर तरफ दूर तक
तीरा-सफ़ाकियों के उभरते हुये तुंद साये
सहर ताब:-ए-शब
हुक्मरां तीरगी......!

ये ज़मर्रद की बस्ती की तस्वीर है
काफिले काफिले
सिलसिले सिलसिले
यांद याराने-शब
ग़म गुसाराने-शब
सब कहीं खो गये
आज़री के तिलिस्मात से आशना
हाथ कट कर गिरे
सारे तारीख़ गो
आज दरयूज़ा गर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत

महेश शर्मा

मैंने गीत छेड़ दिया साज़ तुम उठाओ ना
मेरे साथ मिल के ज़िन्दगी का गीत गाओ ना

तुम उदास हो गये जहां उदास हो गया
इस हसीन शाम का समां उदास हो गया
गुल के साथ गुल का राज़दां उदास हो गया

अपने गीत से फ़िज़ा को नग्मा-ज़न[1] बनाओ ना
मेरे साथ मिल के ज़िन्दगी का गीत गाओ ना

कौन है जो ज़िन्दगी के बोझ से दबा नहीं
कौन सा है दिल जो ग़म की आग में जला नहीं
कौन सा जो अश्क पी के मुस्करा रहा नहीं

अश्क मुस्करा उठें कुछ ऐसे मुस्कराओ ना
मेरे साथ मिल के ज़िन्दगी का गीत गाओ ना

कल गुज़र गया है कल कभी न लौट आयेगा
और आने वाला कल फिक्र-ए-दिल जलायेगा
'कल' की सोच सोच में यह आज बीत जायेगा

'आज' को संवार दो इसे हसीं बनाओ ना
मेरे साथ मिल के ज़िन्दगी का गीत गाओ ना

1. संगीतमय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुफ़्तनी

फ़रहत गीलानी

●

वही नग़मा जो पलता है तेरी ख़ामोश सांसों में
बड़ी मुद्दत से मेरी तीरगी[1] में रंग भरता है
बिखर जाते हैं जब हर सू सलोनी रात के साये
तो तेरी याद का हर ख़ुशनुमा पैकर[2] निखरता है

गुज़िश्ता रात मैंने याद की पुरपेच वादी में
वो बूढ़ा पेड़ देखा जिस पै हमने नाम लिखा था
हवायें ग़बर-अफ़शा और फ़िज़ायें गुल-बदामां थीं
सक्तूते-नीम-शब में दूज का महताब चमका था

जुदाई की सुलगती रात हो या शामे-मैखाना
मैं अपने दिल में तेरी दास्तां लेकर गुज़रता हूं
फराज़े-दार हो या दश्ते-ग़म या कुंजे-तन्हाई
मैं तेरी याद का इक कारवां लेकर गुज़रता हूं

ये दुनिया जिसकी वीरानी में लाखों बस्तियां गुम हैं
मेरे आबाद वीराने से कितनी दूर बस्ती है
ये बस्ती जिसके पर्दे में हज़ारों फूल पिन्हां हैं
मेरे वीरान आबादे से कितनी दूर बसती है

मैं तन्हाई की वीरान रात का देरीना साथी हूं
मेरी ख़िलवत में लाखों जन्नतें आबाद रहती हैं

---

1. अंधकार। 2. अस्तित्व, ढांचा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मुझे अपने अकेले-पन से घबराना नहीं आता
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मेरी ख़िलवत में लाखों जलवत आबाद रहती हैं

शफ़क़ की शिंगरफ़ी झालर फ़िज़ा का रेशमी आंचल
सुबह का नर्म झोंका, शाम का पहला सितारा, शब की अंगड़ाई
हवा की ताज़गी, फूलों का रस, तारों की ताबानी
अदायें, हुस्न, ग़मज़े, नाज़ुकी, अंदाज, रा'नाई
तबस्सुम की किरण, आंखों की ठंडक, रूप की ताबिश

निगाहों में लरजते अनकहे गीतों की अस्थाई
छनक पाज़ेब की, झनकार में संगीत का तूफ़ान
हिना का रंग, आतिशबाज़ियों का रक्स, शहनाई
मेरी ख़िलवत में लाखों जन्नतें आबाद रहती हैं

सरे बाज़ार जो अपना गिरेबां चाक करते हैं
मेरी ख़िलवत ग़ज़ीनों को जुनूं का नाम देते हैं
मुझे शिकवा नहीं लेकिन मेरा दिल ऊब जाता है
ख़ता काराने-महफ़िल जब मुझे इलज़ाम देते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहानियां

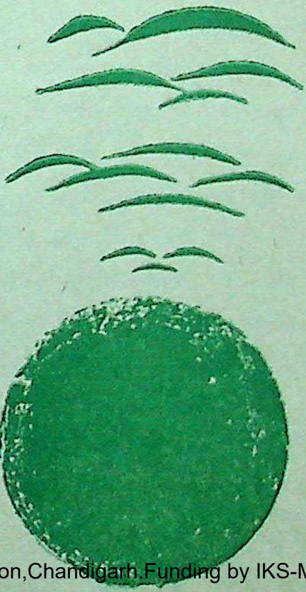

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुतबे

प्रेम नाथ परदेसी

●

दरिया के किनारे सफेद शाही मेहमानखाने के बाहर रहीमअली ग़ैर-इरादी तौर पर ऐसे घूम रहा था जैसे नया-नया जानवर जंगल से पकड़ कर पिंजरे में डाल दिया गया हो। आज उसकी चार घंटों वाली ड्यूटी का अभी तीसरा ही दिन था और जैसे उसके तमाम दाख़ली[1] और खारजी[2] हिस[3] यकलख्त बेदार होकर झिंझोड़ रहे थे। शाही कोठियों के दरवाज़ों की पहरेदारी किस क़दर कठिन और हौसला-शिकन होती है यह उसे मालूम न था। वह आज तक हमेशा मुफ़स्सलात के थानों में रहने का आदी था जहां उस जैसा अदना सिपाही भी अपनी इनफ़रादी शख्सियत की अहमियत को शिद्दत से महसूस करता है। सिर्फ ख़ुद ही महसूस नहीं करता बल्कि औरों को भी अहसास दिलाता रहता है। मगर श्रीनगर जैसे पुर-रौनक़ शहर में जहां सैंकड़ों छोटे-मोटे अफसर गली-गली की खाक़ छानते फिरते हैं—वह कौन था ? और यही सवाल बार-बार न जाने कहां से रींग-रींग कर उसके सामने आता था और उसके क़दम तेज-तेज उठते थे, रुकते थे, फिर उठते थे। उसे अपनी शख्सियत लम्हा-ब-लम्हा मिटती हुई सी नजर आती थी। उस तिनके की तरह बहती हुई जिसे पहाड़ी नदी चट्टानों से टकराने के बाद

1. अन्दरूनी 2. बाहरी 3. संवेदन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कहीं गुम कर देती है। कहां मुफ़स्सलात की नौकरी और पांचों घी में और कहां मेहमानखाने के बाहिर ज़लील कुत्ते की तरह पहरा देना। वहां वह जिसे चाहता ज़लील करता, जिसे चाहता गांव-गांव पर सवार करता। लेकिन यहां क्या था ? कुछ भी तो नहीं। ज्यादा से ज्यादा मेहमानखाने के अन्दर किसी को दाखिल होने से रोक सकेगा या बंड पर किसी को शोर मचाने न देगा ताकि अन्दर वजीर साहब का ख्वाब खराब न हो जाये।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दिन के बारह बज चुके थे। मेहमानखाने में मुकम्मिल सकूत था। वह सकूत नहीं जो तूफान से पहले समन्दर में होता है बल्कि वह जो पहाड़ियों से घिरी हुई झील के पानी में होता है। बालाई मंज़िल की खिड़कियां खुली थीं और कमरे की मुनक्कश छतें और छतों के वस्त पर लटकी हुई झालर साफ नज़र आ रही थी। बंड और मेहमानखाने के दरमियान एक सफ़ेद ऊंची दीवार हायल थी जिसके वस्त में एक छोटा-सा चोर दरवाज़ा था। इसी चोर दरवाज़े की बग़ल संतरी-बक्स था जहां क़रीब के थाने से हर चार घंटे के बाद नया सिपाही पहरा देने के लिए आया करता था।

सड़क के किनारे किनारे, दरिया की तरफ, लकड़ी का जंगला लगा हुआ था। नीचे दरिया का घाट बांझ औरत की तरह खाली और बे-रौनक़ था। लकड़ियों की सीढ़ी जो मेहमानखाने के चोर दरवाज़े से दरिया तक जाती थी, चान्दी उसकी चम्पाकली की तरह साफ और सुथरी थी जो किसी बूढ़ी तवायफ़ ने नुमाइश के लिए पहन रखी हो।

रहीम अली कंधे पर बंदूक रखे अपनी ज़बान की ताल पर दीवार की लम्बाई नाप रहा था और फिर संतरी-बक्स तक वापिस आ जाता था। उसे दिल ही दिल में ऐसी नौकरी पर गुस्सा आ रहा था। ज़लील नौकरी ! किसी ने उसके तज्रिबे की क़द्र न की थी वरना उस जैसा सिपाही मेहमान-खाने के बाहर पहरा देने के लायक था ? उसे तो ऐसी जगह लगाया जाना चाहिए था जहां वह अपना जमाल दिखा सकता और दुनियां को दंग कर सकता। उसे यह फलसफा भी समझ में नहीं आया कि शाही कोठियों के दरवाज़ों पर पहरा बिठाने की क्या ज़रूरत थी। क्या मेहमानखानों के अन्दर रहने वाले इस क़दर कमज़ोर और डरपोक होते हैं कि सिपाहियों का पहरा जरूरी है ? वह यही सोचता-सोचता क़दम उठा रहा था। कभी उसकी निगाहें बालाई मंज़िल की खुली खिड़कियों से घुस कर मुनक्कश छत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ग्रौर झालरों से टकराती थीं। वह हैरान था कि इतने बड़े मकान में कौन लोग रहते हैं। कितने हैं वह ? कैसे हैं ? पिछले दो दिन से उसने वहां किसी की सूरत तक न देखी थी। वह यह भी न जानता था कि यह खिड़कियां कब खोली गई थीं, कब बन्द की जायेंगी। उसने उन्हें खुला ही देखा था ग्रौर वह ग्रब भी खुली थीं। एक ग्रजीब खामोशी, ग्रजीब दबदबा सारे मेहमानखाने पर छाया हुग्रा था ग्रौर सफेदी की हुई दीवारों ने जैसे वहां किसी को बोलते, हंसते या क़हक़हा लगाते नहीं देखा था।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले ग्रौर दूसरे दिन का पहरा उसके सर पर से भारी बोझ की तरह कट गया था। चार चार घंटे ही तो थे ग्रौर फिर नया पहरा, नई जगह, नया माहौल—सब कुछ हसीन ही नजर ग्राया हत्ताकि सड़क के नीचे खाली ग्रौर बेरौनक घाट भी। फिर नौजवान मेमों ग्रौर ग्रंग्रेजों का ग्राना जाना। उनके क़हक़हे, सरगोशियां, नंगी टांगें, बिल्लौरी बाहें, कटे हुए बाल, मुतनासिब[4] एज़ा ग्रौर गोल गोल कूल्हे···लेकिन ग्राज पहरे का तीसरा दिन था ग्रौर ग्रभी से उसे ग्रपने सिर पर बोझ का ग्रहसास हो रहा था। रात की देखी हुई चीज़ों का नयापन जैसे खत्म हो गया था ग्रौर दरिया का बांझ घाट, बंड की सुरमई सड़क, मेहमानखाने का बैरूनी मंज़र ग्रौर उसकी खुली खिड़कियां जैसे उसने बहुत पहले देखी थीं। माना इन सबमें हुस्न है, मगर खाली हुस्न से पेट तो नहीं भरता ग्रौर रहीम ग्रली को ज्यादा ग्रफसोस यही था कि पेट कैसे भरा जाये। शाम के ग्रखराजात, जो दो-ग्रढ़ाई रुपये से ऊपर ही उठते थे, क्योंकर पूरे हों। मेहमानखाने के बाहर पहरा देते हुए कमाई की कोई सूरत न थी। "गधे थे वह जो चार घंटे ग्रसील गाय की तरह जहां संतरी-बक्स के पास बंधे रहे", वह सोचने लगा।

सोचते-सोचते उसका दिमाग थक गया। सामने संतरी-बक्स था जिसका खुला दरवाज़ा जैसे कह रहा था, "थक गए हो तो यहां ग्राग्रो, सभी यहां बैठा करते हैं।" वह कुछ ग्रौर सोचे बगैर संतरी-बक्स में दाखिल हुग्रा ग्रौर लकड़ी के तख्ते पर जो ग्रामने-सामने की चोबी[5] दीवारों में कीलों से बन्द था, बैठ गया। उसने कंधे से बन्दूक उतार कर रख दी ग्रौर बंड की तरफ देखता रहा। लंच का वक्त हो रहा था। श्रीनगर क्लब से रेडियो की ग्रावाज़ गूंज रही थी। शहद ग्रौर शराब से बनी मेमें ग्रौर ग्रंग्रेज़ क्लब

---

4. सन्तुलित। 5. लकड़ी की।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

की तरफ भाग रहे थे और रहीम अली अपने दिल में खलिश सी महसूस
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कर रहा था। वह उड़ना चाहता था...कहां ? वहां, जहां उसे तस्कीन मिले। बन्दूक कन्धे पर उठा कर वह दोबारा बाहर निकला। दो हांजी संतरी-बक्स से परे जंगले के सहारे बातें करते-करते जा रहे थे। एक कह रहा था, "दुनियां में लेना देना क्या है। चार दिन का जीना है। और फिर कब्र का हिसाब-किताब ? हां ! नाम रह जाए तो सब कुछ रह जाता है।" दूसरा हांजी खामोशी से सिर झुकाए सब कुछ सुन रहा था जैसे उसने बहुत बड़ा गुनाह किया हो और उसकी तलाफ़ी[6] के वसायल तलाश कर रहा हो।

रहीम अली उनकी बातें सुन चुका था और दिल ही दिल में हंस रहा था। नाम...नाम...क्या है नाम में...पैसा होना चाहिए। पैसे के बग़ैर इंसान ऐसा है जैसे कुत्ता बालों के बग़ैर। उसने चाहा कि नाम का फलसफ़ा छांटने वाले हांजी के मुंह पर थप्पड़ मार कर कहे, "क्यों इस बेचारे की ज़िन्दगी तबाह कर रहे हो...? यह कौन सा अशोक है कि इसे अपना नाम ज़िन्दा रखने की ज़रूरत है। दुनियां में करोड़ों मल्लाह और हांजी पैदा हुए और मर गए। सिर्फ वही ज़िन्दा हैं जिन्होंने अपने बच्चों के लिए ताजमहल, सानसुई, मिस अमरीका और न्यू ग़ज़ल जैसे हाऊस-बोट छोड़े।" लेकिन दोनों नज़रों से ओझल हो चुके थे और उसके होंटों पर शरमाई हुई सी मुस्कराहट आहिस्ता-आहिस्ता गायब हो रही थी। वह जंगले का सहारा लेकर बहते दरिया को देखने लगा। पार झोंपड़ियों और बंगलानुमा मकानों से बनी हुई आरामदारी की बस्ती थी। दरिया के किनारे मोहन बोट, किचन बोट और शिकारे थे और उनसे परे माहीगीरों के जाल धूप में फैले हुए थे। "हाऊस-बोटों में यह लोग क्योंकर रह सकते हैं...?" वह सोचने लगा...."न सहन, न बाग और न घूमने की जगह। यह भी क्या ज़िन्दगी है कि बीस फुट लम्बी और आठ फुट चौड़ी कश्ती में क़ैदियों की तरह रहो।" उसे अपना घर याद आया। उड़ी से नीचे सलामाबाद में पहाड़ियों के दामन में वह कितना हसीन दिखाई देता था। आगे बाग और पीछे झाड़ियों से भरा जंगल। तीन बरस मुतवातिर उड़ी के थाने में रह कर उसने मौरूसी जायदाद को कितनी वुस्अत दी थी। नया मकान, नई ज़मीन, नया बाग...कुछ अपने रसूख से हासिल की हुई, कुछ रोब-दाब

6. क्षतिपूर्ति।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

से, कुछ मिन्नत-समाजत से। और फिर इतना बड़ा मकान, जैसे महल हो। इसीलिए उसने दूसरी शादी भी की थी कि मकान में हर वक्त गहमा-गहमी रहे। दोनों बीवियां बहनों की तरह रहती थीं और उनके इस सलूक में भी रहीम अली के तज्रिबे का बड़ा हाथ था। वरना सौकनें कभी यूं भी रहती हैं। कितना ही बड़ा महल क्यों न हो, दिनों में उसे मरघट बना देती हैं। लेकिन नहीं, रहीम अली की दोनों बीवियां और उनके बच्चे आपस में ऐसे घुल-मिल गए थे कि कोई फर्क ही नज़र न आता था। बच्चों के शोर-ओ-गुल से मकान के तमाम कमरे सारा दिन गूंजा करते थे। खिड़कियां खुली रहती थीं और क़हक़हे हवा में तैरते-तैरते सारे सलामाबाद में बिखर जाते थे।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रहीम अली काफी देर सोचता रहा। घर के तसव्वुर[7] की मीठी याद ने उसके उखड़े-उखड़े जज़बात में एक रंगीनी सी भर दी। काश! उसके बाजुओं के बदले दो पर लग जाएं और वह उड़ता-उड़ता सलामाबाद पहुँचे। अपने मकान की खुली खिड़कियों के नीचे अखरोट के दरख्त की ओट में रात गए तक खड़ा रहे और अपने बच्चों के क़हक़हे सुन सके।

उसी वक्त शाही मेहमानखाने की एक खिड़की ज़ोर से बंद हो गई। रहीम अली का सुनहरा ख्वाब टूट गया। उसने मुड़ कर देखा—खिड़की बन्द होने के बाद दोबारा खुल रही थी। हवा के एक झोंके ने उसे धकेल कर फिर खोला था। वह जंगले के साथ चहल-क़दमी करने लगा। बिल्लौर की तरह साफ सीढ़ी के नज़दीक पहुंच कर यकायक उसे ख्याल आया, "कितनी होंगी? बीस से कम क्या होंगी?" उसकी ज़हानत ने जवाब दिया, "नहीं, ज़्यादा नहीं, तीस से ऊपर···पांच कम या पांच ज्यादा···।" उसने खड़े-खड़े ही सीढ़ियों को गिनना शुरु किया, लेकिन दस सीढ़ियों के बाद तमाम सीढ़ियां एक-दूसरी से मिलती हुई नज़र आती थीं जैसे वह सीढ़ियां न हों तराशे हुए पत्थर की एक बड़ी सिल हो जो जन्म-जन्म की प्यास जेहलम के पानी से बुझा रही हो, और प्यास बढ़ती ही जा रही हो।

उसे अपने आप पर गुस्सा आया बल्कि कोई चीज़ कांटे की तरह चुभती हुई महसूस हुई। थाने में वह नोटों और रेज़गारी के ढेर महज़

---

7. अनुध्यान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एक नज़र से गिन डालता था। और यहां उससे चन्द बेजान सीढ़ियां तक
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
नहीं गिनी जा सकतीं। कांटा चुभता गया और रूह तक पहुंचा। उसे लकड़ी के ज़ीने गिनने चाहिएं। ज़रूर गिनने चाहिएं। क्या हुआ दस के बाद वह मिल बनते हैं, आखिर ज़ीने ही तो हैं, नोट नहीं। उसने मेहमानखाने की तरफ ऐसी नज़रों से देखा जैसे इत्मिनान कर रहा हो कि अन्दर सफेदी किए हुए ख़ामोश कमरों में तो कोई नहीं? खिड़कियां खुली थीं और छत से लटकी हुई मायूस सी झालर जैसे कह रही थी, "यहां कोई नहीं।"

वह आहिस्ता-आहिस्ता सीढ़ियां गिनता हुआ नीचे उतरा। कुल सैंतीस थीं। यानी तीस और सात। उसे फ़ख्र था कि तज्रिबे ने ज़हानत को शिकस्त दी। बीस और तीस में कितना फ़र्क है, इसका अंदाज़ा उसकी ज़हानत ने नहीं लगाया था। मगर तज्रिबा फ़ौरन ताड़ गया था—तीस से ऊपर होंगी, पांच कम या पांच ज्यादा। जब वह वापिस सीढ़ियां चढ़ने लगा तो वह बेहद खुश था। रूह तक पहुंचा हुआ कांटा गर्मी लगते ही घी की तरह पिघल कर गोश्त और पोस्त में तहलील[8] हो गया था।

चढ़ते-चढ़ते पसीने की चन्द बून्दें उसके चेहरे पर नमूदार हो गईं। आसमान पर सूरज चमक रहा था और बंड पर जंगले के साथ दो अखबारफ़रोश बच्चे उसे देख कर हंस रहे थे।

"नया सन्तरी है।" एक कह रहा था।

"परसों एक पंडित था जो सारा दिन कोठड़ी में चिलम पीता रहता था।"

"ही...ही...ही...शोहदा होगा।"

"रोज़ बदलते हैं यह।"

"मगर यहां क्या करते हैं?"

"पहरा!"

"पहरा...?"

"हां, इस कोठी में जो रहता है, उसका..."

"उसका...? उसने क्या किया है जो पुलिस का पहरा लगा?"

---

8. विलयन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"हरामी ! मिनिस्टर जो है, नहीं लगता पहरा···बड़ा दरवाज़ा नहीं देखा ? वहां दो होते हैं।"

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"दो ! बखुदा मुझे मालूम न था। मगर पहरा क्यों लगता है ?"

"यूं ही। ···हाकिम जो है।"

दोनों बच्चे खिलखिला कर हंस दिए जैसे उन्हें एतबार न आया हो कि ऐसी कोठियों में रहने वाले हमेशा हाकिम ही होते हैं जिनके दरवाज़ों पर सन्तरी पहरा देते हैं।

रहीम अली अब चार सीढ़ियां नीचे था। उसने उनकी आखिरी बातें सुन ली थीं और वह भी मुस्कराने लगा था···सच है, हाकिम जो हुए···वह दिल ही दिल में कह रहा था।

ऊपर पहुंच कर उसने बयकवक्त दोनों से सवाल किया, "क्या है ?"

बच्चों ने झट अपनी गोद में अपनी अखबारों को फैला कर कहा, "आज का ताज़ा अखबार—स्टेट्समैन, सिविल-मिलिटरी, डान···पढ़ोगे···?"

रहीम अली अंग्रेज़ी नहीं पढ़ सकता था। अपनी कमज़ोरी को छुपाते हुए बोला, "पढ़ने की फुरसत कहां···लाओ, ज़रा तस्वीरें देखें।"

"सिविल-मिलिटरी" के सरवरक पर अबूरी[9] हकूमत के सरकरदा रुक्न पंडित जवाहर लाल नेहरू की ताज़ा तसवीर देख कर उसकी आंखों में चमक सी पैदा हो गई। होंट मुस्कराहट में फैलते-फैलते कानों तक पहुंचने लगे। "वही तो है।" ···उसने इतमिनान करने के बाद अपने आप से कहा। लेकिन ऐसे भी तस्कीन न पाकर यकायक बच्चों को तस्वीर दिखाते हुए बोला, "जानते हो कौन है ?" और फिर उनके जवाब का इन्तज़ार किए बग़ैर ही बोला, "जवाहर लाल है जिसे मैंने उड़ी में रोका था और उस पर दो दिन पहरा दिया था।"

बच्चे हैरत से उसे देखते रहे। उन्होंने आज से पांच माह पेशतर यह कहानी सुनी थी और आज उनके सामने जवाहर लाल पर पहरा देने वाला सिपाही खड़ा था। उनकी आंखें फैलने लगीं···जवाहर लाल पर,

---

9. आरज़ी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो शेर [illegible] लेकिन नहीं आ सका। सिर्फ इसलिए कि रहीम अली ने उस पर पहरा दिया था और उसे रोका था। उसी वक्त हवा के एक झोंके से मेहमानखाने की खुली खिड़की फिर ज़ोर से टकराई। दोनों अखबारफ़रोश बच्चों और रहीम अली ने उसकी तरफ देखा। हवा का दूसरा झोंका फिर खिड़की खोल रहा था और अन्दर लटकी हुई झालर झूम रही थी जैसे कह रही थी, "झूठ, सरासर झूठ !"

उसी वक्त दो अंग्रेज़ क्लब से वापिस आ रहे थे। बच्चों ने उन्हें देखते ही झट रहीम अली के हाथ से अखबार का परचा छीना और "साहब अखबार···साहब अखबार" पुकारने लगे। दोनों अंग्रेज़ अखबार देख कर रुक गए और अखबारों की सुर्खियां देखने लगे। एक ने जेब से दवन्नी निकाल कर एक बच्चे के हाथ में रखी और 'सिविल-मिलिटरी' लेकर दोनों चल दिए। रहीम अली उन्हें देखता रहा। उसके होंट बड़बड़ाने लगे। पलकें तेज़-तेज़ झपकने लगीं, शायद वह उन्हें कहना चाहता था, "साहब, हमने इस जवाहरलाल पर उड़ी में पहरा दिया है। हम सलामाबाद का राजा है। हमारे घर में दो बीवियां हैं।" लेकिन अंग्रेज़ जा चुके थे और रहीम अली के होंटों का इतिआश[10] आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो रहा था। उसे अखबार के बिक जाने का बेहद अफसोस हुआ। एक ही पर्चा था और वह भी उठ गया ! कबल इसके कि रहीम अली थाने के अफसर, मुहर्रिर और सिपाहियों को तस्वीर दिखा-दिखा कर कहता कि मैंने उसे रोका था और उस पर दो दिन पहरा दिया था।

मअ'न[11] उसकी नज़रें चिनार पर पड़ीं जो सन्तरी-बक्स के पीछे चन्द गज़ के फासले पर सड़क के एक तरफ खड़ा था तो वह भौंचक्का-सा रह गया। पिछले दो दिन उसने यह चिनार देखा ही न था। एक तो इसलिए कि चिनार सन्तरी-बक्स के अक़ब[12] में बहुत पीछे था और दूसरे इसलिए कि दोनों दिनों का पहरा तमाशा देखते-देखते ही गुज़र गया था। मगर इसके मोटे तने पर यह कौन लोग थे—मुहम्मद अकबर, फ़िरोज़खान, चैन सिंह, अब्दुल-मजीद शाह, रागू बट···

---

10. कंपकंपी। 11. सहसा। 12. पीठ पीछे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शायद यह नाम इसी तरह कई बरसों से खुदे हुए थे और यकीनन उन पहरेदारों के होंगे जो मेहमानखाने के बाहर नौकरी कर चुके थे। बाज़ नामों के साथ नम्बर भी खुदे हुए थे और बाज़ के साथ घर का पता भी। बाज़ तेज चाकू से छील-छील कर खोदे गए थे और बाज़ कुन्द हथियारों से। बाज़ से फनकाराना सलाहियत झलकती थी और बाज़ से अल्हड़पन।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हैरत से रहीम अली की आंखें फैलने लगीं। उसे यह जिद्दत बेहद पसन्द आ गई। शायद बेकैफ़ पहरे के वक्त को टालने के लिए सिपाहियों ने इसे ईजाद किया हो। वह सोचने लगा जिद्दत भी क्या है, अच्छी-खासी यादगार है जो सैंकड़ों बरस तक कायम रह सकती है। उसने मदरसे में अशोक के कुतबों के मुत्तालिक पढ़ा था जिसने शहर-शहर अपने अहकाम पत्थरों पर खुदवाये थे। आज अशोक इसी तरह ज़िन्दा है कि उसके कुतबे ज़िन्दा हैं वरना हज़ारों अशोक आए और गए। सिर्फ वही अशोक ज़िन्दा है जिसके कुतबे बिखरे हुए हैं। यकीनन अगर आज अशोक होता तो पत्थरों के बजाये वह भी चिनारों को ही पसन्द करता। हरी-भरी टहनियों की छांव तले मोटे और खुरदरे तने पर खुदवाये हुए नाम···लाफ़ानी कुतबे[13] !

उसे चिनारों की अज़मत का शदीद अहसास होने लगा जिसने अपनी नंगी छाती मामूली सिपाहियों के तेज़ और कुन्द हथियारों से छलनी कर दी थी और अब उन सबके नाम अपने सीने पर लिए दुनियां को दिखा रहा था। उसे दिल ही दिल में नाम खोदने वालों से नफरत होने लगी। इस्लाम किसी को ईज़ा[14] देकर अपना नाम ज़िन्दा रखने का हामी नहीं मगर यहां नाम लिखने वालों में सिख भी थे और पण्डित भी। और नाम इस तरतीब से खोदे गए थे कि अन्दाज़ा लगाना मुश्किल था कि सबसे पहले किसके दिमाग़ ने इस जिद्दत को जन्म दिया। रहीम अली ने इससे क़बल कई जगह पर ऐसी बेहूदगियां देखी थीं लेकिन इतनी अहम नहीं जितने अहम यह कुतबे थे। जहां पर सिपाही सिर्फ चार घंटे का पहरा देता है और जहां अन्दर, खामोश मगर पुररो'ब कोठी में वह जादूगर रहता है जिसकी सूरत सिपाहियों को दिखाई तो नहीं देती लेकिन जिसके सांस की हर धड़कन चालीस लाख आदमी महसूस करते हैं।

---

13. मक़बरों एवं धर्मशालाओं के द्वार पर अंकित लिखावट। 14. कष्ट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

वह हैरान था कि इन सिपाहियों में इतनी जुर्रत कहां से आ गई

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि उन्होंने चिनार के तने पर अपने कुतबे लिखे। लेकिन नहीं···वह सिपाही थे जो डरते नहीं हैं, जो बेताज बादशाहों पर भी पहरा देते हैं। बशाशत[15] की इसी लज्ज़त ने उसमें नई कुव्वत पैदा कर दी। उस उकताहट और बेज़ारी का अहसास जैसे यकलख्त मिट गया। उसने जङ्गले के साथ खड़े अखबार-फ़रोशों की तरफ देखा और पूछा, "चाकू है ?"

बच्चे उसका मतलब न समझ सके। सहमी-सहमी सी नज़रों से उसे देखते रहे। उसने फिर पूछा, "चाकू है ?"

"क्या करोगे ?" एक बच्चे ने हिम्मत करके पूछा।

रहीम अली के होंटों पर खुद-ब-खुद मुस्कराहट बिखर गई। बोला—"नाम लिखूंगा।"

"नाम !"

"हां, अपना नाम।"

"लेकिन इस पर नाम लिखना अब मना है।"

"मना ?" रहीम अली की आंखों में हैरानियां फिरने लगीं। उसे महसूस हुआ कि जैसे उसका सब कुछ यही एक लफ़्ज़ कह कर छीना गया··· बहादुरी, बशाशत, लाजवाल बनने की आरज़ू···!

"किसने मना किया है ?" उसने नज़दीक जा कर पूछा।

"हाकिम ने; और किसने !" बच्चों ने मुस्करा कर कहा।

थोड़ी देर के लिए रहीम अली खुदे हुए नामों की तरफ देख कर सोचता रहा। शायद फैसला न कर सका कि उसे मर्गे-अम्बोह[16] में शामिल होना चाहिए या नहीं। कानून का एहतराम करना सिपाही का फर्ज़ है। उसे नाम नहीं लिखना चाहिए। हाकिम ने मना किया है। इस्लाम भी ईज़ारसानी का हामी नहीं, मगर अशोक ! ···जो अब तक ज़िन्दा है, बच्चों की किताबों में, लोगों के दिलों में, उजड़े शहर के खण्डहरों में, हिन्दोस्तान की तारीख में···जो अमानत की तरह सदियों से सीना-ब-सीना चला आता है और खुदा जाने कुतबे कहां तक उसे ले जाएं। सलामाबाद

---

15. प्रसन्नता। 16. मर्दा लोगों की भीड़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

का महल किसी दिन गिर जायेगा; वहनों की तरह रहने वाली बीवियां मर जायेंगी। वुस्अत दी हुई मौरूसी जायदाद धूप-छांव की तरह कभी एक के पास रहेगी कभी दूसरे के पास···मगर चिनार का नाम हमेशा ज़िन्दा रहेगा। कोठियां बदलेंगी, घाट आबाद होंगे, वज़ीर बदलेंगे और तने पर लिखा हुआ कुतबा अमर हो जायेगा। उसे कोई नहीं मार सकता, कोई नहीं मिटा सकता, कोई नहीं बदल सकता। वह तारीख़ बन जायेगा। अशोक का कुतबा होकर रहेगा···लाफ़ानी और लाज़वाल !

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इसी जज़्बे से मुत्तासर होकर फौरन बन्दूक को एक तरफ रखकर उसने संगीन उतारी और उसकी नोक से चिनार की नंगी छाती छीलने लगा। यह ईज़ा जरूर है मगर जब ईज़ा के पीछे अब्दियत उभरने वाली हो तो ईज़ा ईज़ा नहीं रहती। वह अपना नाम खोदता रहा; खोदता रहा। ऐसी जगह जहां उसकी इन्फ़रादी शख्सियत उड़ी के थाने की तरह जुदागाना हैसियत रखती थी। खोदते खोदते उसे यकीन होता जाता था जैसे वह अशोक बनता जा रहा है। सलामाबाद का अशोक···पुलिस का अशोक··· जैसे वह अब कभी नहीं मर सकता, उसे कोई नहीं मार सकता। और जब वह नाम खोद चुका तो संगीन की नोक चिनार के सफेद खून से भीग चुकी थी मगर उसी लहू के नीचे से एक नई हस्ती, नया अशोक उभर आया था—रहीम अली !

और जब पहरा खत्म करके वह थाने की तरफ जाने लगा, उसने एक बार फिर अपने कुतबे पर नज़र डाली। फ़र्त-ए-मुसर्रत[17] से उसका सीना फटा जा रहा था। उसके पांव ज़मीन पर थे लेकिन उसकी रूह, उसका दिमाग़, उसका ज़ेहन बादलों को चीर-फाड़कर आस्मान की वुस्अतों में उड़ा जा रहा था। जैसे ही वह आस्मान की नीलाहट को छूने का क़सद[18] कर चुका तो उसे महसूस हुआ जैसे चिनार पर लिखे हुए नाम मुस्करा रहे हों और चिनार का छिला हुआ तना कह रहा हो— "जाओ, यह कुतबे मेरे पास अमानत हैं, उस वक्त तक जब तक कि मुआवज़े के लिए इंसाफ की अदालत फैसला करने बैठेगी और हाकिम-ओ-महकूम की सच्ची तारीफ करेगी।"

17. प्रसन्नता की अधिकता। 18. निश्चय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बंद खिड़की की रोशनी

ठाकुर पुंछी

●

शकुन्तला अब खिड़की के आईने में अपनी महब्बत का इन्तज़ार नहीं कर रही और टूटा-फूटा चांद अब और दूर हो गया है...... सोचों के सपनों से भी दूर। अब सिर्फ झरोकों की आंखें हैं, इन्तज़ार की महरावें हैं और बे-रस कहानियों की उदासियां और यह यादों के कभी न ख़त्म होने वाले फासले। रूह, जिस्म और बे-रस सांसें और चारों तरफ धुंध... कभी चांदनी रातों के अंधेरों की, कभी यादों की कसमसाहट की; कभी शहनाइयों की सर्गोशियों की और यह धुंध...काश कि शकुन्तला के प्यार का दामन बन जाती। उसके मिलन की उम्मीद बन जाती। उसकी थकी हारी धड़कनों की रात बन जाती। उसकी भटकी हुई रूह का सुकून बन जाती और वह आज एक वीरान, उजड़े दोराहे पर खड़ी अपने जीवन की शान्ति की भीख न मांगती।

पहले जीवन के हंगामों की तलाश
बाद में जीवन की शान्ति की जुस्तजू[1] !

लेकिन शकुन्तला, अब जीवन की शान्ति तुम्हारी झोली में कैसे डाली जाये। तुम्हारे खूबसूरत अंग की कौन सी थिरक से सोच की इब्तिदा

1. तलाश।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

की जाये। मन की कौन सी खिड़की खोली जाये ? हां ! इतनी सी बात जरूर है कि तुम्हारी हसीन-तरीन जवानी मेरे सामने जागी, बनी-संवरी भी मेरी निगाहों के सामने ही। यह भी सच है कि जब तुमने उम्र के आईने में पहली बार अंगड़ाई लेता हुआ अपना भरपूर गुदाज़ जिस्म देखा था तब भी मेरी आंखें तुम्हें झांक रही थीं और मैंने आंखों ही आंखों में तुमसे इल्तिजा की थी— मैंने मासूम फूलों की खुशबू को मरते देखा है, तुम न मरने देना। और तुमने आंखों ही आंखों में जवाब दिया था— यह तुम्हारी अधेड़ उम्र की सोच है, जो अपनी हर चीज़ समेटती फिरती है। मेरी उम्र की सोच नहीं जो हर चीज लुटाने की कायल होती है।

और मेरी तुम्हारी दूरी में भी कितना क़ुर्ब था !

जब भी बीच का फासला हट जाता, मैं अपने दिल की आवाज़ तुम तक पहुँचाता लेकिन तुम सुनी-अनसुनी कर देतीं। एक ऐसे ही लम्हे में, मैंने कहा था— जवानी का आंचल अपने हाथों में लहराना बंद कर दो कि तुम्हारे नाज़ुक हाथ अब कांपने लगे हैं और जज़्बात की आंधी मुंह-ज़ोर होती जा रही है। कहीं यह आंचल तुम्हें उड़ाकर किसी अन्जानी फ़िज़ा में न ले जाये। लेकिन तुम्हारा जवाब वही था— यह उम्र के दिल का लर्ज़ः[2] नहीं, कुंवारी हवाओं का सरसराना है जो जानी पहचानी फ़िज़ाओं की देन होता है।

इक उम्र का टकराव।
इक वक्त का तक़ाज़ा !

लेकिन एक खास उम्र की धड़कनों के हादसे कौन रोक सका है, और फिर इन लम्हाती जज़्बाती हादसों की तक्मील···एक आम सी गली-कूचों की कहानी जिसकी इब्तिदा तो बड़ी हसीन और जाज़िब लेकिन इख्तिताम बड़ा घिनौना। अब यही कहना पड़ेगा न कि एक तरफ झूठ था, हवस थी लेकिन दिमाग़ का प्यार था जिसमें अच्छी बुरी सोच का दख़ल होता है और दूसरी तरफ मजबूरी थी, मासूमियत थी और सिर्फ दिल का बेसमझ प्यार था। दिल को तनहा छोड़ देंगे। उसे सोचों का

2. [illegible]

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिबादा [illegible] मी है। कोई नई बात नहीं। बस जज़्बात के आंगन में बिजली चमकी, एहसास की हरारत पैदा हुई, तने हुए जिस्म ने एक फुरेरी ली और उसके बाद जज़्बात की बारिश की नमनाक धुंध छा गई। पहले भी तो एक गीत में एक मासूम प्यारी अल्हड़ शकुन्तला ऐसी ही नमनाक धुंध की लपेट में आ गई थी। ठीक है। लेकिन वह तो जंगलों और दरियाई बेलों का मुकद्दस अबदी[3] प्यार था। हवसनाक होटलों और आवारा बहकी हुई अधजली सड़कों की बहस नहीं। उस युग का श्राप तो वक्ती था, आंसुओं के दर्द से धुल गया लेकिन यह श्राप जो शकुन्तला तुम अपने कोठे की छत पर लिए लिए फिर रही हो, उसे दर्द की किस बारिश से धोया जाये ?

और फिर इस बारे में क्या सोचा जाये। समाज को कोसा जाये, माहौल को कोसा जाये, घर की चारदीवारी को कोसा जाये या फिर उन गुन-गुनाती हुई जदीदतर जज़्बाती राहों को जो कोई मंज़िल नहीं दिखातीं; कोई ज़िन्दगी-बख्श मुस्तक़बिल नहीं लातीं, सिर्फ कच्ची मासूम सी धड़कनों को उकसा कर उन्हें ज़हर-आलूद बना देती हैं— और फिर क्या सिर्फ मां-बाप का फ़र्ज़ रह गया और औलाद के फ़र्ज़ का बोझ भी बूढ़े कमज़ोर कंधों पर···आखरी सांस तक···सुख अपनी जवान झोली में और दुख बूढ़ी गोद में। हकीकतों के अज़दहे तो सामने आकर फुंकारेंगे ही। ···लाख घोड़े की तरह आंख मूंद लो···

अब मेरी बात मानो। जवानी के जिस आंचल को, शकुन्तला, तुम अपने सुहाग का दुपट्टा बनाना चाहती थीं न, उसे अब अपनी मौत का क़फ़न बना लो। तल्ख बात है, लेकिन अब इसी में तुम्हारे जीवन की शान्ति है !

शहर तक पहुँचते चांदनी रात भी अधेड़, अधमरी सी हो जाती है। कभी कभी सोचता हूं, शहर में हर चीज़ मरी मरी सी क्यों दिखाई देती है। क्या अब इन पहाड़ों और मैदानों के बीच का फासला इतना तवील है कि ज़िन्दगी सफ़र की मौत बन जाती है। इन पहाड़ों के चीड़ और देवदार के दरख्तों पर चांदनी रात की भरपूर जवानी कैसे उतर रही है।

---

3. सार्वकालिक।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शर्माती, लजाती···किसी अनब्याहता पहाड़ी दोशीज़ा की तरह। कितनी तक्दीस[4] है माहौल में। कितनी गहरी खामोशी है चारगिर्द···अपनी सांसें भी शोर महसूस होती हैं। कितनी मद्धम सी सर्गोशी थी डाक बंगले की मेहतरानी की। बड़े भाग्यवान हैं आप! कदम पड़ते ही नया मेहमान आ गया। छटा मेहमान और वह खतरे का निशान। रास्ते की लाल तिकोन एक धुआंदार धमाका बन के रह गई। अब सिर्फ एक खला है और एक महीब सवालिया निशान और सामने दर्शनी की आंखें···नये मेहमान की हयात-परवर रमक़[5] लिए हुए। इस मासूमियत की रिवायती मेहमान-नवाज़ी को सम्भाला दिया जाये या उस लाल तिकोन के बेआवाज़ खतरे के घड़ियाल की सदा सुनी जाये। सुबह-शाम की बढ़ती हुई मंहगाई और नित नई परेशानियों के इस दौर में नये मेहमान तो खतरे की सलीब होंगे ही। पर गरीब की मुसर्रतें महदूद होती हैं। उन हदूद को और क्यों कम किया जाये। कौन तोड़े उसकी खुशियों के धागों को? किस भाषा में समझाया जाये कि इन मेहमानों की बरात कितनी अज़ीयत नाक[6] और भयानक हो जाती है अपने बेगानों की दुनिया के लिए और फिर भगवान की देन का ज़माना। अपनी तकदीर मां के पेट से अपने साथ लाने का वक्त तो अब रहा नहीं। घोर कलियुग है। इस हाथ दे उस हाथ ले का ज़माना है। सोचना पड़ेगा। अपने हाथ को देखना पड़ेगा कि लेने वाले हाथ कितने हैं और देने वाले कितने। उम्र के न सही लेकिन ज़रूरियात के तकाज़ों का पेट भरना ही पड़ेगा। दीना नाथ वर्तमानी का गिला-शिकवा कहां तक दरुस्त है कि खानदानी मन्सूबाबन्दी, जिसे वह हिन्दी का शायर होने के नाते परिवार नियोजन का नाम देता है, का हंगामा अब शुरू हुआ वर्ना आध दर्जन नये पुराने मेहमानों को कन्धे पर उठाये उठाये न फिरना पड़ता। किस को ब्याहें, किस को पढ़ायें, किस को खिलायें। दो हाथ समेटने वाले, बारह हाथ लुटाने वाले।

लाल तिकोन तो नई ईजाद सही लेकिन इक्नॉमिक्स के प्रोफैसर से यह तवक्क़ो तो नहीं की जा सकती कि वह सप्लाई और डिमांड का तनासुब[7] ही भूल जाये और अपने सारे जिस्म को शायर बना दे और उन लाखों हाथों को भूल जाये जो सुबह से शाम और शाम से रात तक खलाओं में

---

4. पवित्रता। 5. थोड़ी सी जान। 6. कष्टदायक। 7. संतुलन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सवाली बन कर लटकते रहते हैं, अपने सारे वजूद को पेट बना कर। और कोई बन्द खिड़की नहीं खुलती, अन्दर की रोशनी अन्दर ही दुबकती बैठी रहती है। भूख के कोढ़जादा अंधेरे कैसे उजले होंगे और फिर लाला कर्म चन्द तो अपने कर्मों का फल खा रहा है। वह तो अपने किवाड़ खोलने से रहा। ग़ल्ले के अम्बार, नोटों के ढेर, एक मुकम्मल आरास्ता हवेली। औलाद कोई नहीं। जहां मेहमानखाने होते हैं वहां मेहमान क्यों नहीं आते। जहां रोटी है वहां भूख क्यों नहीं आती। क्या लक्ष्मी नाम की संग-मरमर की मूर्ति को बच्चे प्यारे नहीं। क्या रोटी नहीं चाहती— कोई मेरी भूख बने। लेकिन लाला कर्म चन्द की पचास साला उम्र खुश है कि उनकी दौलत का, उनकी रोटी का और उनकी जायदाद का कोई हिस्सेदार नहीं। किसी उम्र में एक हिस्सेदार बनने आया था, अपनी मौत मर गया। लाला कर्म चन्द को कोई तरद्दुद[8] नहीं करना पड़ा। शाह्नी जी का तो पता नहीं लेकिन लाला जी को अपने मेहमान की मौत पर कम ही दुख हुआ। वह सब कुछ अपने साथ ले जाना चाहते हैं। लेकिन वह लाखों सवाली हाथ जो ख़ला में लटक रहे हैं उनकी छाती पर गिरने ही वाले हैं। क़ब्र में खाली हाथ ही उतरना पड़ेगा। शाह्नी जी से ज्यादा अपनी नोटों भरी तिजौरी को अपनी बीवी समझते हैं। उसे अपनी आंखों से ओझल नहीं होने देते।

अब चांद भी लाला जी की तिजौरी बन गया है। क़ुदरत की सारी रा'नाइयां समेट कर किसी चोर की तरह अंधेरों की तरफ भाग रहा है। सारा माहौल उदास हो गया है। कायनात ने चांदनी का जो मरमरीं लिबास पहन रखा था, वह अब तार तार हो गया है। शायद इसीलिए हर बेजान और जानदार चीज़ ने अपनी आंखें मूंद ली हैं।

हर चीज अपने लिबास से पहचानी जाती है। भाषा हो, चरिन्द-परिन्द हों, फूल-पत्ते हों, पेड़-पौदे हों या पत्थर-चट्टानें। तीन घंटे की जुस्तजू कहीं न पहुँचा सकी। साथ का कमरा पास है। अन्दर की रोशनी भी कोई कम नहीं लेकिन पहचान की आंख अंधी हो कर रह गई है। यह जानना मुश्किल हो गया है कि इस नौजवान जोड़े में लड़का कौन है और

---

8. चिन्ता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लड़की कौन। लिबास एक जैसा हो सकता है लेकिन अंदाज-अदाएं तो मुख्तलिफ़ हों। [illegible] Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu हो गई। अब ढूंढते फिरो, कौन कहां है, क्या है! वक्त की धारा तो हर दौर में तेज़ो-तुन्द रही लेकिन तहजीबो-तमद्दुन के भी तो अपने मज़बूत पांव होते हैं। पहचान की आंख का अन्धापन कब तक नंगेपन की मशालें जलाए रखेगा। ज़िन्दगी जितनी मुख्तसर है, उतनी ही तवील भी। एक दिन या एक रात के लिए जीने की सोच से उम्र तो नहीं कट सकती। लम्हा लम्हा मरना और बूंद बूंद जीना तो अजीयतनाक होगा ही। बड़ी अजीब बात है। प्यार के रिश्ते अबदी हुआ करते थे। जन्म जन्म का साथ दिया करते थे; अब वक्ती हो गए और उम्र जो वक्ती थी, अबदी हो गई। इसीलिए ज़ात की मायूसियों और दिल की खुदसाख्ता उदासियों और मजबूरियों की घोर घटायें छटने में नहीं आतीं। सिगरेट का बदबूदार धुआं उड़ाते हुए इस पर ज़रा भर सोचो, यह फ़ैशन की कौन सी करवट है, कौन सी अदा है?

आसपास की डूबती हुई खामोशियां और गहरी हो गईं लेकिन बन्द खिड़की की रोशनी अभी तक कायम है। झूठे वादों, झूठे कौल-ओ-इक़रार, झूठे प्यार की लम्बी रात होती है। शायद रोशनी बुझे ही न।

पहाड़ों की शाम का ठहराव बदस्तूर क़ायम है। शहरों की शाम का ठहराव अब कहां गया। क्यों शाम को भी दिन की सी हरारत, तेज़ी और तुंदी[9] होती है। क्या बात है? अपने मेहमाननवाज़ शहर की शाम भिखमंगी क्यों हो गई? हर कोई अपनी ज़ात का सलीब उठाये एक दूसरे के आगे हाथ फैलाए खड़ा है। शाम के बे-ऐब धुंधलके इतने नशा आलूद कैसे हो गए। देर की आदतें छोड़ी भी तो जा सकती हैं। हमेशा अपने दिल का साथ देने वाला वक्त के कदम नहीं नाप सकता। फिर यह भाग दौड़ चन्द आदी मुजरिम लम्हों को सुलाने के लिए ही तो है। लेकिन जुर्म तो नहीं सोता। वह हक़ायक़ के मुर्दे सम्भाले जागता ही रहता है। और फिर इज्जत सिर्फ अपनी ज़ात की ही नहीं होती। बीवी - बच्चों और मां-बाप की भी होती है। पहले घर का चूल्हा देखा जाए उसके बाद अपने

---

9. तीव्रता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मुहल्ले का धुआं दिखाई दे तो अपने अन्दर के आदी मुजरिम की आग बुझाइये। यूं तो कोई शक नहीं कि मुहल्ला पेट भर सोये, अपना आंगन भूखा जागे। ज़िन्दगी का ग़म तो मुशक़्क़त के बल-बूते पर ही उठाया जा सकता है। गंगा सिंह नाम लेने से गंगा जल का एहसास तो नहीं हो सकता। पानी का भी अपना रंग है। उसमें अपना बूंद बूंद खून निचोड़ कर रंगदार बनाने की क्या ज़रूरत। अपने मन में झांको, अधजले धुंधलकों को कुरेदने से कुछ नहीं मिलेगा !

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे मुलाज़िम की हैरानी जायज़ है कि नसवार वाले शाह की बीवी भाग गई है क्योंकि भागती तो जवानी ही है अक्सर। लेकिन शाह जी को खुशी है— बंद खिड़की की रोशनी मुअत्तर[10] ही नहीं हुई उनकी नई महबूबा की रसीली सांसों से भी मा'मूर[11] है। बिला-ऐतराज़ दूसरी शादी। दौलत की कोई उम्र नहीं होती। और शाह जी का बरमला[12] कर कहना है कि औरत भाग जाये या भगा दी जाये, बात एक ही है। और लोग तो आज-कल काग़ज़ी नोट कमाते हैं, रोटी नहीं। और ब्लैक का धंधा क़ायम! दूसरी तरफ नत्थी टांगे वाला, मग़मूम बैठा है। उसकी प्यारी राधा शाम से ग़ायब है और शायद उसे कोई भगा ले गया है। लेकिन भरोसे पर ही दुनिया की सड़क चलती है। राधा ज़रूर लौट आयेगी। नत्थी टांगे वाले को यकीन है। सोच का धागा खोलो। इंसान और हैवान की बात है। बीवी भाग जाने पर क्यों खुशी हुई और टांगे की घोड़ी राधा को कोई भगा ले जाए तो दुख क्यों ?

यह क्या समाज है। खाने की ख्वाहिश मर जाती है। हज़म करने की ताक़त नहीं रहती। रोटी बख्शी जाती है। दिल में वसवसों[13] की उम्र मिट जाती है। खूबसूरत सा घर-गृहस्त मिलता है। हाथों में काम करने की सक़त खत्म हो जाती है, काम मिलता है; जब हम गंदी नाली के कीड़े बन जाते हैं, खुली फ़िज़ायें दी जाती हैं···इसीलिए शायद हम सब आदी मुज़रिम हैं।

रोटी रोज़ी की भी उम्र होती है। जैसे घर-गृहस्त की भी उम्र होती है। अब शाम लाल को ही देख लो। चालीस बरस से ऊपर उम्र

---

10. सुगन्धित। 11. आदेशित। 12. खुल्लमखुल्ला। 13. शंका।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

और एक कमसिन बीबी। जवानी की उम्र तो दो सौ रुपये तनख्वाह, मास्टरी और बुज़ुर्गों की इयालदारी[14] को सम्भालते निकल गई। भूखे जंजाल में कौन अपनी बेटी फेंकता। डिग्रियां, शराफ़त, दयानतदारी और लगन-रियाज़ तो अब लोक-कहानियों की बात रह गई। बात दौलत और रुतबे की है। उम्र कौन देखता है। सूखा सड़ा चालीस साला जिस्म कौन देखता है। एक हज़ार तनख्वाह हुई; सब कुछ आंखों से ओझल हो गया। समाज की रीत-रिवायत ही यही है। अब मुजरिम कौन है—समाज या शाम लाल। जो अब एक बड़ा अफसर होने के बावजूद भी शाम लाल मास्टर पुकारा जाता है…कभी कभी पेशा भी ज़ात के साथ चिपक सा जाता है।

अब मेरे क़रीब की बंद खिड़की की रोशनी बुझ गई है। लम्बी बातें, लम्बे इश्क। लम्बी बातें छोटी होती हैं। प्यार की कोई तशरीह नहीं। मन सच्चा हो तो आधी बात से सारी बात का पता चल जाता है। कच्ची सोचों की गिरिफ़्त बड़ी ढीली होती है और अधूरी कहानियों के नाम बड़े खूबसूरत। वक्ती खुशी से ज़माने की ग़मनाक धारा तो नहीं बदली जा सकती। बन्द खिड़की की रोशनी का दायरा तो तंग होगा ही। वह चांदनी रात की वुस्अत तो नहीं बन सकती। सोचो और अपनी ज़ात के बंद किवाड़ों के अंधेरों में झांको। शायद कहीं मुसर्रत का लम्हा जागा हुआ मिल जाये और बंद खिड़की की रोशनी बाहर भाग आए।

**
**

---

14. कुटम्ब।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कश्मीर की बेटी

रामानन्द सागर

उड़ी के पास एक छोटा सा नाला पुंछ की पहाड़ियों से निकलकर जेहलम नदी में आकर मिलता है। इस नाले के इस तरफ आजकल हिन्दुस्तानी सेना का डेरा है और दूसरी तरफ पाकिस्तानी फौजों का पड़ाव है जिन्होंने सन् १९४७ में कश्मीर पर हमला करके उसके एक बहुत बड़े इलाके पर कब्जा कर लिया था। कश्मीर के जिस टुकड़े पर पाकिस्तान का कब्जा है उसे वह लोग आज़ाद कश्मीर कहते हैं और उड़ी के पास यही छोटा सा नाला कश्मीर के उन दोनों टुकड़ों की सरहद बन गया है।

एक अंधेरी रात में उस नाले के किनारे पहरा देने वाला पाकिस्तानी सिपाही जाने किस की याद में एक लोक गीत गुनगुना रहा था, "चन्नां वे तेरी चाननी मेरे यार नूं डरावे" अपने गांव से सैंकड़ों मील दूर अनजाने पहाड़ों की सर्दी में ठिठुरता हुआ वह कुछ इस तरह गा रहा था जैसे उन लोगों की शिकायत कर रहा हो जिन की सियासी चालों ने उसे अपने वतन पंजाब से दूर कर दिया था। नाले की दूसरी तरफ हिन्दुस्तानी फौज का सिक्ख सिपाही अपनी चौकी पर पहरा देता हुआ उस पंजाबी धुन को सुन रहा था और उसके दिल में बरसों पुरानी यादें बेदार हो रही थीं जब उसका अपना गांव मुल्क के बटवारे की नज़र होकर पाकिस्तान का हिस्सा बन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

गया था। वह सोच रहा था कि किसने एक ही वतन के दो साथियों के दरमियान एक अंधेरी खड्ड पैदा कर दी थी। और उनके होंटों से मुश्तरिका
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
रूमानी गीत छीन कर किसने उनके हाथों में अंग्रेजों के कारखाने की बनी हुई बंदूकें दे दी थीं ?

पाकिस्तानी सिपाही गाता रहा और कोहरे से भरी हुई खड्ड के दूसरे किनारे हिन्दुस्तानी सिपाही अपने वतन के सपने देखता रहा और उन दोनों को पता ना चल सका कि ठीक उस वक्त, उस कोहरे की आड़ लेकर, काली लोई में लिपटा हुआ एक पाकिस्तानी जासूस उस छोटे से नाले को पार कर के हिन्दुस्तानी इलाके में आ गया था। उसका नाम हसन अली था। हसन अली बारामूला का रहने वाला था और जब पाकिस्तानी हमलावरों ने बारामूला को लूट लिया था तो वह उस वक्त वहीं था। लेकिन जब हिन्दुस्तानी फौजों के सामने वह लोग पसपा होकर पीछे रह गए तो हसन अली भी बारामूला से गुम हो गया। बारामूला के लोग यह समझते थे कि वह इस कत्ल-ए-आम में कहीं मारा गया था या जब उन लुटेरों ने शहर के बड़े हिस्से को जला कर राख कर दिया तो शायद उसमें वह भी जल गया होगा। क्योंकि जिस इलाके में आग का बहुत जोर था उस इलाके में उसकी मंगेतर नूरां रहती थी। और बहुतों का यह ख्याल था कि वह नूरां को बचाने के लिए जरूर वहां गया होगा। यहां तक कि नूरां को भी इस बात का नाकाबिले बरदाश्त दुख था कि उसे बचाने के लिए हसन अली खुद जलकर खाक हो गया और वह तड़पने के लिए ज़िन्दा रह गई। यहां तक कि एक बार वह शहर के बीचों बीच बहती जेहलम नदी में छलांग लगा कर दूसरी दुनियां में हसन अली के पास पहुंचना चाहती थी मगर उस वक्त पंडित नीलकंठ ने उसे ऐसा करने से रोक लिया था। पंडित नीलकंठ ने ही उसे जलते हुए मकान से बचा लिया था। पंडित नीलकंठ का मकान उन्हीं के मुहल्ले में था और नूरां का बाप पंडित नीलकंठ के हां काम करता था। जब पठान लुटेरे उस मुहल्ले में पहुंचे और नीलकंठ का बड़ा मकान देखकर उसे लूटने लगे तो नूरां के बाप ने उस वक्त तक उन्हें ड्योढ़ी में रोके रखा जब तक कि पंडित नीलकंठ और उसके बाल-बच्चे पिछली खिड़की से कूद कर एक मुसलमान हमसाए के मकान में छुप न गए। इस धोखेबाजी पर गुस्सा खाकर पठानों ने नूरां के बाप को वहीं गोली मार दी और सारे मुहल्ले में आग लगा दी। इस अफरा-तफरी में किसी तरह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

नीलकंठ अपने बीवी बच्चों समेत घाट तक पहुंच गए और एक कश्ती में बैठकर [illegible] कश्ती खोलने से पहले ही वह अपनी बीवी को यह कह कर चले गए थे कि अगर मेरे लौटने से पहले पठान यहां आ जाएं तो कश्ती खोलकर वितस्ता मां की लहरों पर छोड़ देना। वह चाहे हिफ़ाज़त से किसी किनारे लगा दे, चाहे अपनी लहरों की गोद में तुम्हें छुपा ले; मगर तुम्हारी लाज जरूर बचा लेगी। और वह खुद नूरां के मकान तक जा पहुँचे और इस जलती हुई ड्योढ़ी में से गुजरकर धुएं के मारे बेहोश हो गई नूरां को अपनी पीठ पर उठा कर वापिस घाट तक पहुँचे। खुशकिस्मती से पठान उस घाट तक नहीं पहुंचे थे। और इस तरह पंडित नीलकंठ के बच्चों के साथ नूरां की ज़िन्दगी और आबरू दोनों बच गईं।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब उनकी कश्ती बांडीपुर पहुंची तो उन्हें हिन्दुस्तानी फौज के आने और बारामूला के आज़ाद होने की खबर मिली। बारामूला में लौटने के बाद पंठित नीलकंठ ने हसन अली को ढूंढने की कोशिश की ताकि नूरां का हाथ उसके हाथ में दे दें। लेकिन हसन अली कहां था? यह वह वक्त था जब नूरां खुदकुशी करने पर तैयार हो गई। मगर उस वक्त भी पंडित नीलकंठ ने उसकी जान बचाई और उसे समझाया कि खुदा ने ज़िन्दगी मरने के लिए नहीं दी बल्कि इसलिए दी है कि उसकी मदद से कायनात को ज्यादा से ज्यादा हसीन बनाया जाये···अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी। नूरां ने भरी हुई आवाज़ में कहा, "मगर मेरे लिए ज़िन्दगी का हुस्न किस काम का है?" बूढ़े नीलकंठ ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा, "तो क्या हुआ बेटी, तुम्हारे किसी काम की नहीं तो यह ज़िन्दगी दूसरों के लिए वक्फ़ कर दो। जिस ज़िन्दगी को तुम मौत के अंधेरे में खो देना चाहती हो, वही ज़िन्दगी तुम वतन के हवाले कर सकती हो। तुम चाहो तो यह ज़िन्दगी कितने ही दुखी दिलों में उम्मीद की रोशनी भर सकती है। तुम नूरां हो तो चारों तरफ नूर फैलाओ। मौत का अंधेरा क्यों बढ़ाती हो?"

बूढ़े की बात नूरां के दिल में घर कर गई और तब उसकी ज़िंदगी का नक्शा ही बदल गया। वह कश्मीर की 'नेशनल मिलेशिया' में दाखिल हो गई, जहां उसने अपने वतन की हिफ़ाज़त के लिए बन्दूक तक चलाना सीख लिया। उसने अव्वल रात के स्कूलों में जाकर खुद लिखना - पढ़ना

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सीखा और फिर अपने जैसी हजारों पिछड़ी हुई कश्मीरी औरतों की खातिर
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
उनके मुहल्लों और घरों में जाकर इल्म की रोशनी फैलानी शुरू की। और तब उसने देखा कि इस काम में वह अकेली नहीं है बल्कि कश्मीर की वादी में, जहां सदियों से जहालत के अंधेरे ने एक बुज़दिलाना सी सुस्ती तारी कर रखी थी, वहां चन्द सालों में चारों तरफ ऐसी ही हज़ारों रोशनियां टिमटिमाने लगी हैं। जाहिल कहलाने वाले कश्मीरी गोया लम्बी नींद से बेदार हो रहे हैं। अब वह न सिर्फ पड़ोसियों से नहीं डरते बल्कि खुद अपने देस वाले भी उनके अंधे एतक़ाद का नाजायज़ फायदा उठा कर उन्हें बुद्धू नहीं बना सकते। इस तारीखी बेदारी में नूरां जैसी जनता के आम इंसानों का भी उतना ही हाथ था जितना जनता के नेताओं का हिस्सा था। चुनांचे नूरां अपने आपको कश्मीर की नई तारीख का एक हिस्सा समझने लगी थी।यह सब कुछ था मगर हसन अली की जुदाई के ग़म ने ही उसे दूसरों के दुख का साथी बना दिया। चुनांचे इन सात बरसों में उसे किसी और मर्द का ख्याल भी नहीं आया था। वह समझती थी कि हसन अली से अब मरने के बाद ही मुलाकात होगी और उसी मुलाकात के लिए वह अपने आपको हर वक्त तैयार रखती थी। लेकिन जब इसी दुनिया में अचानक एक दिन नूर के तड़के हसन अली उसके सामने आ खड़ा हुआ तो नूरां का यह हाल था जैसे किसी पर अचानक बिजली गिर जाए। थोड़ी देर तो उसे अपनी आंखों पर ऐतबार नहीं आया मगर जब हसन अली ने उसी पुराने अंदाज़ में उसे प्यार से पुकारा— 'नूरां', तो वह किसी टूटे हुए फूल की तरह हसन अली के सीने पर गिर गई और फिर यूं मालूम हुआ जैसे जेहलम नदी का सारा पानी उसकी आंखों में उमड़ आया। वह 'नेशनल मिलेशिया' की परेड में जाने के लिए बहुत सवेरे उठती थी, मगर हसन अली के आ जाने से वह अपनी सारी तैयारी भूल गई। हसन अली ने उसे बताया कि वह रात भर उड़ी से बारामूला तक पैदल चलता रहा है।

सर्दी के मारे हसन अली का सारा बदन ठिठुरा हुआ था। जहां तक कि उसने जो ऊनी लोई लपेट रक्खी थी वह बर्फ की एक चादर मालूम होती थी। चुनांचे नूरां ने फौरन समावार में कोयले भरे और चाय में डालने के लिए बादाम कूटने लगी। वह काम करती जा रही थी और साथ साथ बातें भी हो रही थीं। हसन अली ने उसे बताया कि पठान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हमलावर [illegible] इतने बरस वह पाकिस्तानी इलाके में रहा।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नूरां ने पूछा, "तो जेल से किस तरह भागे ?"

हसन अली ने मुस्करा कर कहा, "मैं जेल में तो नहीं था।"

"जेल में नहीं थे तो फिर तुम्हें जबरदस्ती किसी मजदूरी पर लगाया गया होगा।"

"नहीं।"

"तो फिर वहां क्या करते थे...?"

"बस आज़ादी से घूमता था।"

नूरां समावार में डालने के लिए सब्ज चाय की पत्तियां हथेली में मसल रही थी। हसन अली का जवाब सुन कर उसके हाथ वहीं रुक गए। वह गौर से हसन अली को देखने लगी, जिसके होंटों पर अब तक मुस्कराहट फैली हुई थी। थोड़ी देर तक जैसे वह हसन अली की मुस्कराहट तौलती रही और फिर खुद भी मुस्कराने लगी। उसने समावार के उबलते पानी में चाय की पत्तियां डाल दीं और हसन अली के क़रीब आ कर उसे प्यार से देखती हुई बोली, "मुझे तुमसे इसी बहादुरी की उम्मीद थी कि तुम अपनी मुसीबतों का ज़िक्र मुझसे कभी नहीं करोगे और मेरे सवालों को हंस कर टाल जाओगे। लेकिन अब मैं ऐसी बुद्धू नहीं हूं जैसी तुम मुझे छोड़ गए थे। कश्मीर अब नया क़श्मीर बन रहा है और हम लोगों को दुनियां-भर की सियासी चालों की खबर है क्योंकि दुनियां के बहुत से मुल्क हमारे कश्मीर के बारे में तरह तरह की चालें चल रहे हैं। मैं जानती हूं कि कश्मीर का सच्चा सपूत जो पाकिस्तानी लुटेरों का साथी बनना मंज़ूर न करे उसे वे जेल के सिवा कहीं नहीं रख सकते। तुम जरूर उनकी जेल से भागे हो। मुझे तुम्हारी बहादुरी पर नाज़ है...!"

हसन अली ने कुछ जवाब देना चाहा मगर नूरां ने प्यार से उसका मुंह बंद कर दिया और कहने लगी—"अब और झूठ मैं तुम्हारे मुंह से नहीं सुनना चाहती। चाय तैयार हो गई है, मैं तुम्हारे लिए क़तलम ले आती हूं।" और वह मुस्कराती हुई घर से बाहर निकल गई। गली के मोड़ पर हुसना नानबाई की दुकान अब तक खुल गई थी। नूरां ने दो क़तलम्मे खरीदे तो हुसना ने पूछा, "नूरां ! कौन मेहमान आया है जिसके लिए [illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हो ?" नूरां ने कहा, "हसन अली पाकिस्तानियों की जेल से भाग कर आ
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
गया है।" और उसका मुंह न जाने क्यों लाज के मारे सुर्ख हो गया।

हुसना नानबाई और उसकी दुकान पर बैठे हुए दो ग्राहक इस खबर से चौंक पड़े और उन्होंने बहुत से सवाल पूछे जिनके मनगढ़ंत जवाब देकर नूरां अपने मकान की तरफ भागी। उसने मन ही मन हसन अली की बहादुरी का जो नक्शा बना लिया था उसमें जैसे एक नशा था। और उस पंछी की तरह जिसे एक मुद्दत तक पिंजरे में बंद रखने के बाद अचानक हवा में छोड़ दिया जाए, नूरां का मन कभी अपने पंख खोल कर एक उड़ान भरता लेकिन फ़ौरन उड़ने से पहले ही जैसे किसी संकोच के मारे वह पंख खुद-ब-खुद बंद हो जाते। उसका मन जैसे कोई फैसला न कर पा रहा था। और वापिस आकर उसने हसन अली को चीनी के प्याले में उबलती हुई चाय पिलाई, क़तलम्मा खिलाया और खुद जल्दी कहीं जाने के लिए तैयार होने लगी। "कहां जा रही हो ?" हसन अली ने पूछा।

"आज हमारी 'नेशनल मिलेशिया' की परेड है।" नूरां ने वालों में कंघी करते हुए कहा।

"लेकिन तुम्हें इस परेड से क्या लेना है ? अब तो मैं आ गया हूं !"

"एक तुम उनकी जेल से आज़ाद हो कर भाग आए तो इसका यह मतलब तो नहीं कि उस इलाके में रहने वाले हमारे सारे कश्मीरी आज़ाद हो गए हैं। जब तक हम अपना छीना हुआ इलाका इन हमला-आवरों से वापिस न ले लें, हम मादरे-कश्मीर को भूल नहीं सकते।"

जूं-जूं वे घाटी में उतरते गए उन्हें मोड़ के दोनों तरफ दूर-दूर तक सड़क दिखाई देने लगी। अपनी-अपनी जगह खड़े वालंटियरों की सुर्ख झण्डियां हवा में लहरा रही थीं। उन्हें देख कर नूरां की आंखें भर आईं। उसकी अपनी झंडी उस पुल के ऊपर बड़ी तम्कनत से लहरा रही थी जिसके नीचे हसन अली का रखा हुआ बम एक वहशियाना क़हक़हा लगाने की इन्तज़ार में था और हसन अली उसके आगे-आगे पिस्तौल थामे पत्थर से नीचे उतर रहा था।

अचानक नूरां ने एक जस्त लगाई और हसन अली के ऊपर धड़ाम से गिर गई। हसन अली लड़खड़ा कर गिर गया लेकिन फौरन तेज़ी से
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उठ खड़ा हुआ मगर इतनी देर में उसके हाथ से गिरा हुआ पिस्तौल नूरां के हाथ में आ चुका था। नूरां ज़मीन से उठ ही रही थी कि हसन अली ने पत्थर उठा कर उसके माथे पर दे मारा। मगर नूरां की अंगुलियां उससे भी कहीं ज़्यादा तेज़ थीं। इधर नूरां को पत्थर लगा और उधर पिस्तौल की गोली हसन अली के सीने के पार हो गई और वह पानी के किनारे जा गिरा।

नूरां का सर पत्थर की चोट से जैसे टुकड़े-टुकड़े हो चुका था। खून ने उसकी आंखों के आगे एक सुर्ख़ पर्दा डाल दिया था और अंधेरा चारों तरफ फैलता जा रहा था लेकिन उसने अपनी तमामतर क़ुव्वतों को जमा करके अपने-आपको सम्भाला। पिस्तौल की आवाज़ पहाड़ों से टकरा कर वापिस आ रही थी। हसन अली के हाथ में पकड़ी हुई लोहे की तार उसके गिरने से इस तरह खिंच गई थी कि पुल के नीचे रखा हुआ बम शोर मचाते हुए नाले में गिर कर इस तरह फटा कि एक और आवाज़ चारों तरफ गूंज गई। लेकिन पुल सलामत था और नाले की दूधिया लहरें इस बम की मायूसी पर क़हक़हा लगा कर हंस रही थीं।

मरने से पहले उसने सिर्फ इतना किया कि जिस हसन अली की गोद में लेट कर कल रात वह सुहाने सपने देखती रही थी, उसी हसन अली की लाश को गोद में लेकर, पानी में किसी तरह धकेलती हुई, वह जेहलम नदी की लपकती हुई लहरों तक पहुंच गई।

जब वालंटियर वहां पहुंचे तो उन्होंने किसी को भी वहां नहीं देखा। उसी वक्त सरकारी मोटरें वहां पहुंच गईं। सब वालंटियरों ने झंडियां उठा कर 'कश्मीर ज़िन्दाबाद' के नारे लगाये।

जेहलम की लहरों पर सवार नूरां का जिस्म उन सरहदों को पार करके एक फातिहाना अंदाज़ से उस इलाका में आगे बढ़ रहा था जिस पर दुश्मनों का कब्ज़ा था। खून ने उसके चारों तरफ पानी की लहरों को इस तरह रंग दिया था गोया नया कश्मीर का सुर्ख़ झण्डा कश्मीर की एक बहादुर बेटी के एज़ाज़ में लहरा रहा हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उड़ान

मोहन यावर

राम पाल का मुंह तअ्राज्जुब से खुला का खुला रह गया और मधु भी राम पाल की तरफ देखती रह गई।

—तुम पहले कहां थीं। राम पाल ने पूछा।

मधु ने जवाब दिया—तुम्हें तलाश कर रही थी।

राम पाल ने कहा—सच तो यह है कि हम दोनों ही एक दूसरे को तलाश कर रहे थे।

मधु ने कहा—खूब गुज़रेगी...

फिर दोनों हंसने लगे।

राम पाल ने कभी एक जगह डट कर काम नहीं किया था और यही वजह थी कि वह किसी भी जगह इससे ज्यादा नहीं टिक सका। अगर किसी फर्म में मुलाज़मत मिली तो सिर्फ चन्द महीनों के लिए और अगर गलती से कोई सरकारी कुर्सी मिल गई तो चन्द ही दिनों के बाद कुर्सी वहीं रह गई, खुद गायब। छोटे से छोटे काम भी उसने ज़िन्दगी में करके देख लिए और बड़े से बड़ा काम भी कर लिया। लेकिन उसकी तबीयत ही न जम सकी। वह किसी तरह भी उन जगहों, उन कुर्सियों से समझौता न कर सका। और समझौता किए बगैर काम कैसे चले? और काम किए बगैर तनख्वाह कौन दे?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बस, सोच का शहजादा यही सोचता रहा कि यह बिल्डिंगें उसकी
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अपनी क्यों नहीं ? वह इन बड़ी बड़ी फैक्टरियों का मालिक क्यों न बन सका।

और जब वह फैक्टरियों और बिल्डिंगों का मालिक न बन सका तो उसने अपने ज़हन में नये स्टाइल के बेशुमार बंगले तामीर कर लिए—और अपने दिलो-दिमाग के अहाते में कई फैक्टरियां तामीर कर लीं।

यही सोच उसके दिलो-दिमाग में एक ख़लबली मचाए रखती थी।

राम पाल हमेशा उन लोगों की तरफ देखता जो खूबसूरत कारों में घूमते थे—हमेशा उनकी बातें करता जिनके अपने बंगले थे, अपनी फैक्टरियाँ थीं। जिनके दायें—बायें नौकरों का तांता सा बंधा था। वह उस दुनिया के ख्वाब देखता था...हसीन ख्वाब।

राम पाल का अपना कोई मकान न था और न ही माल-वाल पास था और न ही भाई, मां-बाप। बस आ जा के मौसी ही थी जो उसका बाप भी थी और मां भी, बहन भी, भाई भी।

जब वह पैदा हुआ था तो उसके बाप को भगवान ने अपने पास बुला लिया था। और जब वह तीन बरस का हुआ तो उसकी मां भी मर गई। और जब दूर दूर तक उसे अपना कोई नज़र नहीं आ रहा था तो भगवान ने मौसी को भेज दिया......और मौसी ही राम पाल का सब कुछ बन गई।

मौसी राम पाल को देख देख कर जीने लगी और राम पाल मौसी को देखकर। ...राम पाल दौड़ता हुआ स्कूल पहुँचा फिर फलांगता हुआ स्कूल से कालेज तक।

मौसी सोचती कि उसकी मेहनत अकारत न गई। अब राम पाल ज़रूर पढ़ लिख कर बड़ा आदमी बनेगा।

मौसी की दुनियां सिर्फ राम पाल थी। वह सिर्फ राम पाल के लिए जी रही थी......उसने स्कूल नहीं छोड़ा। उसका काम बच्चों को पढ़ाना था। वह एक स्कूल से दूसरे में, फिर तीसरे में, चौथे में बच्चों को पढ़ाती ही रही और राम पाल को पालती रही।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ग्रौर यही वजह थी कि राम पाल सपने देखने लगा था ग्रौर मामूली काम, मामूली तनख्वाह उसको पाबन्द न कर सकी।
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब मौसी ने यह देखा कि राम पाल कहीं भी टिकता नहीं तो उसने उसका हल खुद ही तलाश करना शुरू किया। ग्रौर हल था—सिर्फ एक छोटी सी बहू...चांद सी बहू...

ग्रब मौसी की ज़िद थी कि बस घर में बहू ग्रा जाये तभी उसका बेटा टिक कर काम कर सकेगा ग्रौर बेटे की ज़िद थी कि पहले वह बड़ा ग्रादमी बन जाये फिर एक लड़की क्या सैंकड़ों लड़कियां मिल जायेंगी...।

ग्राखिर एक दिन बेटे की ज़िद मौसी की ज़िद के ग्रागे घुटने टेकने पर मजबूर हो गई। मौसी ने दुखती रग पर ग्रंगुली रखी। 'बेटे तुम बड़े ग्रादमी बनना चाहते हो न ...तुम चाहते हो न कि तुम्हारे पास बंगला हो, मोटरकार हो ग्रौर......"

"हां मौसी ! मैं यह सब कुछ चाहता हूं। यह सब कुछ।" राम पाल ने बिल्कुल फिल्मी हीरो की तरह ग्रदाकारी की, मौसी का तीर निशाने पर बैठ गया था...।

"एक लड़की......"

"लड़की !" राम पाल मौसी की तरफ देखता रह गया, "कैसी लड़की ?"

"बहू...मेरी बहू...।"

"ग्रो' मौसी...तुम..."

मौसी ने बात काट दी, "पगले मौसी को मस्का लगाने की जरूरत नहीं।"

"लेकिन मौसी, कोई लड़की मुझ जैसे..."

मौसी ने फिर बात काट कर कहा, "बेटे, तू तो लाखों में एक है।"

ग्रौर लाखों में एक राम पाल ग्रपनी मौसी के साथ लड़की देखने मरी चला गया। लड़की वहीं रहती थी। लड़की...ग्रमकोटी लड़की। लड़की के नाम पर काफी रुपया-पैसा था। उसके कई बंगले थे। कई कारखानों में पार्टनरशिप थी। उसने कई एक फर्मों के हिस्से खरीद रखे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

यह सब कुछ राम पाल को उस लड़की ने ही बताया था। लेकिन उसकी सादगी को देखकर यह गुमान हरगिज़ नहीं होता था कि यह लड़की इतनी अमीर हो सकती है। लेकिन यह सब कुछ उसके सामने था। यकीन न करने से क्या होता था......

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम पाल मौसी की तरफ देखता ही रह गया कि मौसी उसे किसी गलत क़दम पर तो नहीं ले आई...इतनी अमीर लड़की क्यों कर इस भूके-नंगे से ब्याह रचायेगी...?

लेकिन राम पाल के अन्दर का राम पाल जागा और अन्दर के राम पाल ने बाहर के राम पाल को भी बेदार कर दिया।

राम पाल ने लड़की से दरख्वास्त की कि अब वह उनके घर आए और अच्छी तरह देख भाल ले क्योंकि शादी का मुआमला है। गुड्डे-गुड़ियों का खेल नहीं और फिर वैसे भी इसमें ठोंक-बजा कर देख ही लेना चाहिए।

—अच्छा। आप चाहते हैं तो जरूर आऊंगी...

और जब वह लड़की राम पाल के शहर आई तो उसने होटलों के दरवाज़े खुलवा दिए। हर सिनेमा हाल में उनके लिए सीटें रिज़र्व हो गईं। अभी वह...जा रहे थे तो अभी वह...। अभी प्लाज़ा जा रहे हैं तो अभी मैट्रो। अभी फलां टैक्सी में बैठे हैं तो अभी फलां टैक्सी में घूम रहे हैं।

लड़की हैरान-ओ-शशदर[1] रह गई कि राम पाल वाकई शहज़ादा है। और अगर शहज़ादे से फ़रेब, धोखा, मक्कारी की गई तो नतीजा बहुत ही बुरा निकलेगा...और ज़िन्दगी भर रोना पड़ जायेगा। इसलिए लड़की के चेहरे से नकाब उतरने लगा और लड़की का असली चेहरा सामने आ गया।

वह एक मामूली सी लड़की है। उसका इस दुनिया में अपना कोई नहीं। छोटी छोटी बच्चियों को पढ़ाती है और बस। वह बंगले, वह

1. चकित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कारें, वह ठाट-बाट, उन्हीं लोगों का है जिनके बच्चों को वह पढ़ाती है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब वह उदास थी। ...उसके चेहरे से नकली चेहरा उतर चुका था।

राम पाल ने प्यार से कहा, "बस ! बिगाड़ दिया न तुमने सारा खेल। अपने आप से यह फरेब, यह धोखा...क्या जरूरत थी हसीन सपनों को तोड़ने की..."

लड़की ने कहा—मैं आपसे धोखा...

राम पाल ने बात काट दी—कैसा धोखा...?

लड़की ने धीरे से कहा—आप तो······

—यही कि फरिश्ता हूं न······! रहने दो तारीफ़। तारीफ़ तो उस भगवान की जिसने हम दोनों को बनाया।

—मतलब ? लड़की ने पूछा।

उसने जवाब दिया—शादी !

और लड़की शर्मा गई। फिर थोड़ी देर सकूत[2] तारी रहा। दोनों चुप हो गए। आखिर लड़की ने सकूत तोड़ा, "मैं फिर भी कहूंगी कि आप······"

लेकिन राम पाल हंसने लगा और लड़की का जुमला भी हंसी में डूब कर रह गया। लड़की ने पूछा—आप हंसते क्यों है ?

—तुम्हारी सादगी पर। राम पाल ने कहा। तुम बहुत ही मासूम हो जो मुझे अभी तक समझ न सकीं। तब राम पाल ने अपना नकली चेहरा उतार कर दिखा दिया। लड़की बेसाख्ता हंस दी। "बस······या कुछ और ! मैं तो पहली मुलाकात में ही यह सब कुछ भांप गई थी। लेकिन आपका नाटक कामयाब रहा और आप जीत गए······"

एक हफ़्ता के बाद वह दोनों फिर मिले !

---

2. चुप्पी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अजीब मसला था । शादी कैसे होगी । सूट-बूट कहां से आएंगे ।
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दावत कैसे उड़ेगी । बैंड-बाजा कैसे बजेगा ।

लड़का खामोश था । ······लड़की भी खामोश थी······और दोनों सोच रहे थे ।

थोड़ी देर के बाद लड़की उछल पड़ी । बस काम बन गया । मैंने···

और राम पाल भी चिल्लाने लगा—मैंने भी सोच लिया ।

और दोनों की सोच एक दूसरे से टकरा गई—अजीब इत्तफ़ाक था । टेलीफोन डायरेक्टरी दोनों के ज़हन में घूम गई । सिर्फ दो सौ नाम······ बड़े बड़े लोगों के पते······

फिर टेलीफोन डायरेक्टरी हासिल की गई और उसमें से खास खास लोगों के दो सौ के करीब नाम-व-पते नोट किए गए । फिर दोनों ने मिल कर बड़ी मेहनत के साथ एक अपील तैयार की जिसमें लिखा था कि वह एक हुस्न की देवी का परस्तार है । वह एक लड़की से प्यार करता है जो चलती है तो हवा चलने लगती है, और रुकती है तो हवा रुक जाती है । ······लड़की भी उस पर सौ जान से आशिक़ है । वह दोनों शादी करना चाहते हैं लेकिन इक्तिसादी बुह्रान[3] इस क़दर गहरा है कि वह उभरते ही नहीं बल्कि······

अपील में यह भी लिखा था कि दोनों की हालत ख़स्ता है । लड़की उस्तानी है और वह बेकार है । इसलिए फरिश्ता सीरत लोगों की इमदाद के बग़ैर यह नेक काम सिरे नहीं चढ़ सकता । इसलिए ऐ फरिश्ता सीरत लोगो ! इस महब्बत को रोशन रखने के लिए चन्दा दीजिए ताकि दोनों की उम्मीदें बर आएं !

अपील में शादी की तारीख भी दर्ज थी······जो दो माह बाद की थी ।

और इस अपील को खूबसूरत ढंग से नफ़ीस काग़ज़ पर छपवाया गया और दो सौ अश्ख़ास के नाम पर पोस्ट कर दिया गया ।

---

3. संकट ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चन्द दिनों के बाद धड़ाधड़ चैक़, ड्राफ्ट ग्रौर मनी-ग्रॉर्डर ग्राने लगे। जब शादी को सात दिन बाकी रह गए तो उन्होंने हिसाब किया—पचास दिनों में साठ मनी-ग्रॉर्डर, पचास चैक ग्रौर बीस ड्राफ्ट ग्राए थे—यह कुल रक़म सात हज़ार तीन सौ उनचास रुपये थी। ······प्यासे को समन्दर मिल गया। इसके इलावा ख़तूत भी थे जिनमें वादे किए गए थे कि बहुत जल्द उनकी मदद की जायेगी ग्रौर कई ख़तूत में सिर्फ वादा ही था······

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राम पाल ने कहा—बताग्रो मधु कैसी रही ?

मधु ने जवाब दिया—खूब !

ग्रौर सात दिन के बाद दोनों की शादी धूम-धाम के साथ हो गई।

शादी में ख़ूब जश्न रहा। काफी हमाहमी, गहमा-गहमी, रौनक, चहल-पहल। बहुत से वह लोग भी ग्राए थे जिन्होंने शादी रचाने के लिए दिल खोल कर इमदाद दी थी ग्रौर ग्रब तोहफ़े-तहायफ़ दे कर ग्रपनी ग्रपनी खूबसूरत कारों में बैठ कर चले गए।

मधु दुल्हिन बनकर ग्राकाश की ग्रप्सरा दिखाई दे रही थी······ राम पाल को ऐसी ही लड़की की तलाश थी।

ग्रौर राम पाल किसी फिलम का हीरो नज़र ग्रा रहा था······मधु को ऐसे ही खूबरू[4] नौजवान की खोज थी।

ग्रौर यह उनकी पांचवीं शादी थी। हर छः माह के बाद वह किसी ग्रनजाने शहर में ग्रजनबी बन कर जाते ग्रौर वहां यही नुस्खा ग्राज़माते। ग्रौर छः माह ऐश-ग्रो-इशरत के साथ गुज़ार कर किसी दूसरे शहर का रुख़ करते।

ग्रब छटी बार शादी रचाने के लिए उन्होंने बम्बई का इन्तिख़ाब किया था।

❖

4. सुन्दर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उबाल

पुष्कर नाथ

कई दिनों से आसमान की हंडिया पक रही थी। मटियाले से गंदले गंदले रंग की, धुआं धुआं सी आंच पर। और सुबह अचानक उसी में उबाल आ गया। सवेरे से ही चन्द आवारा चीलें बहुत ऊपर मटियाली फ़िज़ा पर मंडला रही थीं। जाने कब किस आवारा चील ने चोंच की ठोकर मार कर ढक्कन गिरा दिया और फिर देखते देखते ही सारी भाप बाहर उमड़ आई।

बड़ा हंगामा हुआ। हाथियों की धक्कम पेल, शेरों की गरज, ग़ज़बनाक शोले लपके, बुलन्द हुए और फिर चारों तरफ जल थल। चन्द एक फुहारें मेरे तपते चेहरे से टकराईं। ऐसा लगा जैसे किसी शरीर बच्चे ने गर्म तवे पर छींटे दिए हों। एक झुरझुरी सी सारे बदन में आई। ठंडी हवा का एक झोंका न जाने किस ख़ूबसूरत गली से आया और कमरे में लटके हुए झील की तसवीर वाले केलण्डर को गुदगुदा गया—सिर्फ एक झोंका...सिर्फ एक लम्हा...उसके बाद मैंने आसमान की तरफ देखा। हंडिया पर ढक्कन बदस्तूर रखा हुआ था और हंडिया अन्दर ही अन्दर पक रही थी, धुआं धुआं सी आंच पर...उफ नजर का यह धोखा !

1. [illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

—ऐ शान्ति ! देखा तुमने । दो छींटे बरसाये और बस की । यह दो छींटों की बारिश आग लगा देती है ।...गली के पार एक मकान की बाल्कनी से आधा धड़ निकाल कर एक औरत ने फरियाद की ।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ठीक ही कहा सौभाग्यवती ने । वाकई दो छींटों की बारिश आग लगा देती है । आदमी का दिल चाहता है कि कपड़े फाड़ दे और दीवानों की तरह सिर पर खाक डालकर बाज़ारों और गलियों से गुजर जाये । पर जिसकी ज़िन्दगी की किस्मत में इस फुहार की दो छींटें भी न लिखी हों ...उस ज़िन्दगी की आग और जलन और तपिश कितनी शदीद होगी ।

उफ ! दम घुट रहा है मेरे मा'बूद[1] । एक, सिर्फ एक सर्द हवा का झोंका इधर भेज दे ताकि यह आग इक जरा काबिले - बरदाश्त बन जाए ।

मगर बात आवारा चीलों की हो रही थी । गंदली मटियाली सी फ़िज़ा में उड़ती हुई यह आवारा चीलें आंखों में हिरस की चमक लिये घूमती रहती हैं । एक झपटा मारा तो वनस्पति का काल पड़ गया ।

"सेठ जी, आपका ट्रंक काल ।"

"बोल रहा हूं जी । हां जी हज़ार एक टन तो होगा जी ।...अच्छा अभी करता हूं जी ।...अरे बांके छोड़ यह खाता और गोदाम में चला जा । मुरारी तुम दो ट्रक ले कर आ जाना ।"

इधर बांके और मुरारी गोदाम में पहुंच गए । चील फिर मटियाली फ़िज़ा में उड़ गई । उसे उड़ान में कितना इत्मीनान है । कितना लाउबालीपन[2] है । इन परों में कितना तवाज़न[3] है । थोड़ी मौसीक़ी भी है । कत्थाकली न सही धमाचौकड़ी ही सही । गली के पार एक मकान की बाल्कनी से आधा धड़ बाहर निकाले एक औरत ने ठोड़ी पर अंगुली रख कर आवाज़ दी, "ऐ शान्ति...! सुना तुमने । अब तो वनस्पति घी नहीं मिल रहा है । आज सब्जी तेल में पकाई है ।"...मुझे याद आ रहा है, सिर्फ तीन साल पहले जब इस शहर में घी नया नया दाखिल हुआ था तो कम्पनी की मशहूरी के लिए बाज़ार में वनस्पति के पकवान तैयार किए गए थे

2. निश्चिन्तता । 3. सन्तुलन ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Grant

ग्रौर लोगों को पकड़ पकड़ के चखाए गये थे , ग्रौर फिर लार्ड क्लाइव की
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कम्पनी की तरह वनस्पति कम्पनी ने शहर को ग्रपना गुलाम बना दिया। ग्रब इस गुलामज़ादे को एक बार फिर नीलाम पर चढ़ाया गया था। लानत भेजो ! बात ग्रसल में हंडिया की हो रही थी जो धीमी धीमी ग्रांच पर पक रही थी। जाने उस हंडिया में उबाल क्यों नहीं ग्रा रहा है, गर्मी बहुत तेज़ हो गई है। दीवारों को पसीना ग्रा रहा है।

—ग्रोए काका, यह पंजी लेकर बर्फ तो पकड़ा दे। हलक सूख रहा है प्यास के मारे।

—एक किलो बर्फ ? पांच पैसे में ? खुद ही जा के ले ग्राग्रो बाबू। हमें तो बीस पैसे में मिलती है।

—क्या बकवास कर रहे हो ? ग्रभी सुबह ही तो पांच पैसे में एक किलो ले ग्राया था।

—इस टैम दोपहर है बाबू...सुबह से दुपहर तक तो ग्रादमी मिनिस्टर बन जाता है।

बाबू ग्रफ्लातूनी है। काके की बात उसकी समझ में ग्रभी तक नहीं ग्रा रही है। समझ समझ का फेर है या हेर फेर है, कुछ समझ में नहीं ग्राता ग्रौर गर्मी है कि ग्रल्लामा[4] !

होंटों के कोहान सूख गए हैं ग्रौर ऊपर मटियाला सा—ज़रकान के मरीज़ के चेहरे जैसा—ग्रासमान ग्रौर ग्रावारा चीलें... तेज़ उकाबी नज़रें मटियाली फ़िज़ा को चीर कर, पर्तों को चीर कर खोज रही हैं, टटोल रही हैं, तलाश कर रही हैं कि कहीं कोई चिड़िया का बच्चा तो नहीं हुमकता, कहीं किसी ग्रंडे से कोई चूज़ा तो नहीं बाहर ग्राया, कहीं किसी बिल से कोई चूहा तो नहीं झांक रहा है।

हाए ! जाने किस जादूगर ने ज़िन्दगी को ग्रंडे के खोल में बंद कर के उबालने के लिए ग्रांच पर रख दिया है।

वह उधर कोई दरवाज़ा चरमराया, सीढ़ियों पर सीता खड़ी राम को जाते हुए देख रही है। ग्रांखों के गिर्द स्याह हल्के हैं। बालों के ढीले

4. तौबा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ढाले जूड़े में पाकीज़गी की खुशबू मचल रही है । माथे पर सुहाग की निशानी एक लाल रंग के छोटे पैसे की तरह चमक रही है । इस छोटे पैसे की वुक़्क़त क्या है । मामूली सी साड़ी तो दो साल की कफ़ायतश'आरी से हासिल होती है । जाने एक आठ गिरह कपड़े का ब्लाऊज़ खरीदने के लिए कितने सौ अरमानों का, कितनी हज़ार ख्वाहिशों का, कितनी लाख तमन्नाओं का खून करना पड़ता है ।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

—यह किस जिल्दसाज़ से बनवाई है ?...राम की चप्पलें देखकर उसका साथी लछमन उससे पूछ रहा है और राम एक आह भर कर आकाश की गंदली गंदली फ़िज़ाओं में ठंडी ठंडी यख़–बस्ता बारिश की दो बूंदें तलाश कर रहा है । मगर आसमान तो चीलों की उड़ान से भिनभिना रहा है । काली चीलें, गोरी चीलें—जिनके कब्जे में दालें हैं, जिनके पंजों में मुल्क भर की तमाम कपास उलझ गई है ।

इस राजपाट से तो बनबास ही अच्छा था ।

'सियासी गुफ्तगू करना मना है'—बस की अन्दर वाली दीवार पर लिखा है । जाने यह कण्डक्टर व्हिसल क्यों नहीं देता । बंकिम बाबू ऐटम बम बनाने के सिवा और कोई चारा नहीं है । एक नहीं हमें सौ ऐटम बम बनाने चाहिएं । इसके लिए चाहे हम सब को एक एक टाईम का खाना क्यों न छोड़ना पड़े ।

मैं कहां जाऊं ? क्या करूं ? मैं और मेरी घर वाली और हमारे तीन बच्चे तो पिछले नौ बरसों से सिर्फ एक ही टाईम खाना खाते हैं । —गोदी मज़दूर अपना सिर खुजा खुजा कर सोच रहा है ।

—हां तो बंकिम बाबू ! हमारी तमाम समस्याओं का सिर्फ एक ही हल है । और वह है ऐटम बम । मैं कहता हूं मेरी आधी तनख्वाह ले जाओ मगर मुझे ऐटम बम दे दो ।

मगर बंकिम बाबू परेशान है । वह अपने साथी के कान में कहता है, "यार कहीं से एक बोतल का तो इंतज़ाम करो ,"—ऐटम बम या मिट्टी का तेल ?...एक कहां, यह दो दो समस्याएं हैं ।

गली के पार एक मकान की बाल्कनी से आधा धड़ बाहर निकाले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
एक औरत अपनी हथेलियों से अपनी आंखें मलती हुई कह रही है, "ऐ शान्ति ! देखा तुमने, यह उपले मुए जलने का नाम नहीं लेते । आंखों की रोशनी खा जाते हैं ।"

जाने यह औरत हर समस्या के बाद बाल्कनी से आधा धड़ बाहर निकाले शान्ति को क्यों पुकारती है ? जाने इस औरत का चेहरा साफ क्यों दिखाई नहीं देता ? किसी पी. डब्ल्यू. डी. ओवरसियर की बीवी तो नहीं लगती जिसकी तनख्वाह दो सौ रुपये होती है और जो एक शाम को दो सौ रुपये की शराब पीता और पिलाता है । किसी बनिये की धर्मपत्नी भी नहीं लगती जो खद्दर का कुर्ता और पाजामा पहन कर अपनी हट्टी पर बैठता है और हर देहाती से, हर मज़दूर से रुपये की जगह डेढ़ लेकर किलो की जगह आठ सौ ग्राम तोल देता है । किसी स्मगलर की मिसेज़ भी नहीं लगती जो दो लाख का मन्दिर बनवा देता है और मूर्ति के नीचे अस्सी लाख का सोना छुपा देता है । किसी सिविल सर्विस आफिसर की वाइफ भी नहीं लगती जो बीवी के नाम पर विलायती फर्मों में शेयर्ज़ खरीदता है और अपने नाम इन फर्मों को सरकार से कर्ज़े देता है । किसी मिल मालिक की मिलाइन भी नहीं लगती जो सरकार से स्टील का कोटा हासिल करके उसे चोर बाज़ार में फरोख्त कर देता है ।

आखिर यह औरत कौन है ?

आज हवा इस कदर बन्द क्यों है ?

हर चीज़ उबल रही है, धीमी धीमी आंच पर और चीलें सरों पर मंडला रही हैं । यह लो, चील ने झपटा मारा और पानी की सतह पर से एक छोटी सी मछली को उठा कर ले गई । मुअर्रिख[5] का कहना है कि जब सोमनाथ के मंदिर पर ग़ज़नवी ने धावा बोल दिया तो मंदिर के बेबस पुजारी सिर्फ टुकर टुकर देखते रहे । महमूद के बारे में कहा गया कि वह आंधी की तरह आया और बगूले की तरह चला गया ।

सिकन्दर भी चला गया और ग़ज़नी का वह जियाला भी चला गया मगर डाक्टर धर्म दास वर्मा अभी तक गली के नाके पर अपनी दुकान

5. इतिहासकार ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सजाए बैठा है । मुअर्रिखों का यह कहना है कि धर्म दास फ़सादात से एक साल उधर तक Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu गिलगित में महकमा माल में पटवारी था और फ़सादात के दौरान एक गिलगित्ती औरत के साथ दिल-लगी करने के जुर्म में बरतर्फ किया गया था और वह बगूले की तरह वहां से चला आया था । आजकल यह गली के नाके पर अपनी दुकान में बैठा तमाम लोगों से दिल-लगी करता है और डाक्टर बन कर जनता की सेवा कर रहा है । नतीजा—तीन मकान दो दुकानें, एक मोटर कार और सात औरतों, नौ बच्चों और दो मर्दों की बेवक्त मौत बल्कि तिब्बी[6] मौत...और आगे चल कर मुअर्रिख लिखते हैं कि सोमनाथ का लुटेरा...मगर जाने डाक्टर धर्म दास के बारे में मुअर्रिख क्या कुछ लिखें ।

उफ इस दुकान में कितना हुब्स है, जैसे एक साथ कई यमदूत गला घोंट रहे हों ।

बेबस पुजारियों की संतान सिर्फ टुकर टुकर देखती रही ।

सरकार माई बाप ! मेरा नाम तो शाम नाथ है । मैं पंडित मनसा राम का एक मामूली दुकानदार हूं । कत्ल सुना है कि सौ मील दूर हिन्द थाकरान में हुआ था । पुलिस खूनी की तलाश में थी । मैं शहर दुकान के लिए सौदा सुल्फ लेने आया था मुझे पकड़ के यहां लाया गया है । मैंने कोई जुर्म नहीं किया है माई-बाप ।

—ओ बुड्ढे ! चुप रह । भगवान के घर में 'खप' डालता है । यहां देर हो तो हो अंधेर नहीं है ।

—मगर हुजूर माई बाप...

—देखो, कत्ल हुआ है । कत्ल का मुकद्दमा भी पेश हुआ है । फांसी तो किसी न किसी को मिलनी ही चाहिए ।

—मगर सरकार, माई बाप, मैं शाम नाथ हूं । मैं पंडित मनसा राम का पंसारी हूं ।

मटियाला गंदला गंदला सा जाल आसमान के एक कोने से दूसरे कोने तक तन गया है । कितनी घुटन है । हवा का एक झोंका नहीं । पानी की

---

6. चिकित्सा-सम्बन्धी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बूंद नहीं। रोटी का एक निवाला नहीं। कपड़े का एक भी चीथड़ा नहीं...

सुना है आज बादशाह सलामत की ताजपोशी है। स्कूलों के बच्चे बच्चियों में मिठाई तक्सीम हुई है। नानकू सुनियारे का कहना है कि उसने खुद दीनू हलवाई और सरकारी कर्मचारी की बातें सुनी हैं। दीनू कह रहा था, "आठ सौ दूंगा।" कर्मचारी कह रहा था, "हज़ार लूंगा।" वही निन्नानवे और सौ का फ़ेर !

—चुप रह नानकू सुनियारे। तेरे एक जवान बेटे ने तो पहले ही खुदकुशी की है। बुड्ढा खूसट सत्तर बरस का हो गया पर अक्ल अभी तक नहीं आयी। यह सरकारी बातें क्या समझे ?

गली के पार एक मकान की बाल्कनी से आधा धड़ बाहर निकाले एक औरत रुपये का नोट हाथ में लेकर हैरत से पुकार रही है, "ऐ शान्ति ! सुना तुमने। अब तो इस नोट की कीमत सिर्फ चालीस और तीन पैसे रह गई है। कल तक तो सौ पैसे थी।"

उफ़। यह औरत मुझे पागल कर देगी। जाने कौन है, किसकी बीवी है। चुड़ेल लगती है। अभी छः महीने पहले तक कितनी सुन्दर लगती थी। बाल संवारे, होंट अखरोट के छिलकों से लाल किए, आंखों में कजरे की हल्की सी तहरीरें डाले, जूड़े में मोतियों का हार सजाए...तब तो यह बाल्कनी से आधा धड़ बाहर निकाले शाज़ो-नादिर[7] ही शान्ति को पुकारती थी। अब क्या जाने क्या हो गया है। बाल उलझे हुए, होंटों पर पपड़ियां जमी हुई हैं, आंखें लाल, चेहरे की हड्डियां उभरी हुई। जिस्म में जैसे एक बूंद लहू भी बाकी न रह गया हो। बहुत बुझी बुझी निढाल सी पसमुर्दा सी चाल में आकर बाल्कनी पर खड़ी हो जाती है और हसरत की एक नज़र इर्द-गिर्द डाल कर आह भरती है।

यह औरत सिर्फ कोई जादूगरनी लगती है। मैं खिड़की बंद कर लेता हूं—न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी !

दीवार पर लगा हुआ झील की तस्वीर वाला केलण्डर साक़ित है।

7, कभी-कभी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जब मैं पांच साल का था तो अपने बाप की अंगुली पकड़ कर मैं इस झील के किनारे सैर करने जाया करता था—आजकल इस झील पर सिर्फ पौंड, शिलिंग और डालर, सेंट नामी लोग जाते हैं। देशवासियों और कुत्तों का दाखिला बन्द है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मास्टर जी जनता किसे कहते हैं," कोई नादान बच्चा अपने उस्ताद से पूछ रहा है।

"जनता? अबे तुझे जनता के मानी नहीं आते। जनता उस ताकत को कहते हैं जिससे रेल का इंजन चलता है। हवाई जहाज़ का प्रोपैलर घूमता है। राकेट का बदन कांपता है। चांद की धरती नाचती है। दुनियां का निज़ाम क़ायम रहता है। मगर मेरे नादान बच्चे! जनता के यह मानी दस हज़ार बरस पहले के लिखे हुए क़लमी नुस्खों में दर्ज हैं। बाद में बड़े बड़े विद्वानों ने खोज करके पता चलाया कि सुर्खाब की तरह जनता नाम का भी कोई जानवर हकीकी नहीं है। कभी हुआ करता था मगर बाद में उस जानवर की बेपनाह ताकत से घबरा कर उसे बोतल में बंद कर दिया गया था और हिमालय की तराई में या खलीज बंगाल में फ़ैंका गया था।"

❖❖
❖❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रात इक सिमटी हुई

नूर शाह

रात के आंचल से लिपटी हुई भीगी भीगी सी खामोशी में सुर्ख रंग के ठर्रे की एक बोतल उंडेलने के बाद मैं एक बार फिर अपने कमरे में तनहा रह गया हूं। सारा कमरा धुआं धुआं है और मैं इस धुएं में उस रोशनी को तलाश कर रहा हूं जो कहीं खो गई है। अभी कुछ देर पहले पुरशिकवा ताबनाक दिन एक रोज़ गुलाब की तरह मुरझा गया और आसमान की वुसअतों में जलता हुआ गोल गोल अंगारा ग़रूब हो गया, जैसे शर्मा कर पहाड़ों की ओट में नहाने चला गया हो—और मैं चाहता हूं कि इन गज़बनाक अंधियारों में मेरा यह कमरा एक बिल्लौरी नाव का रूप अपना ले और इस बस्ती की सारी खूबसूरत लड़कियां जलपरियों का लबादा ओढ़ कर पनाह की तलाश में यहां चली आएं और मैं उनके तहदार मौजों की तरह फैलते हुये जिस्मों से लिपट लिपट कर सिमट जाऊं और सिमट सिमट कर एक कतरा बन जाऊं। लेकिन मेरा दिल थका हुआ है, रूह भटकी हुई है और जिस्म निढाल है।

बाहर ब्लैक आऊट है!

कोई आवाज़ नहीं, कदमों की चाप नहीं, धड़कनों की सरगोशी नहीं और सामने तिपाई पर सुर्ख रंग के ठर्रे की खाली खाली बोतल मेरी प्यास बढ़ा रही है! मैंने आहिस्ता से खिड़की का एक पट खोल दिया है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

और उस पर लटका हुआ काले रंग का रेशमी पर्दा ज़रा सा सरका दिया
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है। अब मैं बाहर देख रहा हूं। हर सिम्त तारीकी है और इस तारीकी
में इस बस्ती के सारे मकान चुपचाप ऐसे खड़े हैं जैसे इनके मकीनों[1] ने भी
पत्थरों का रूप अपना लिया हो। बेहिस और बेजान पत्थर! मेरा मन
कर रहा है कि मैं इस तारीकी को चीरकर इन मकानों के दरो-दीवारों पर
जोर जोर से पत्थर मारूं ताकि इनमें बेशुमार शिगाफ़ पैदा हों और मैं इन
शिगाफ़ों में से उतर कर इन बेहिस और बेजान पत्थरों में जान डालूं......
पर मैं ऐसा नहीं कर सकता। मेरे एक पत्थर मारने से इस बस्ती के वीरान
सन्नाटों में एक हल्का सा इरतआश[2] पैदा होगा और फिर जाने कितनी
बन्दूकें एक साथ गुनगुना उठेंगी। आसमान की गहरी काली वुस्अतों में
कितने जहाज हरकत में आकर थरथरा उठेंगे। और शायद......मैं रुक भी
नहीं सकता!

मैं अपने कमरे से बाहर आ गया हूं और अब इन मकानों में झांक
रहा हूं।

मेरी नज़रों के सामने जो ख्वाबगाह है, यहां तीन मर्द और एक
लड़की है। मर्दों के चेहरे एक जैसे हैं, होटों पर एक जैसी मुस्कराहट है...
आंखों की चमक भी एक जैसी है। मगर यह चमक जंग के बेपनाह
खौफ़-ओ-हरास से बुझ चुकी है लेकिन इस बुझी बुझी सी चमक में भी हवस
के सोते फूटते हुए नज़र आ रहे हैं। उनके सामने वह लड़की मोमबत्ती की
धीमी धीमी सी लौ में एक ऐसे दरख्त की तरह खड़ी है जिसकी शाखें बेहद
उरियां और नंगी हों। उस लड़की पर वाकई पतझड़ आ चुका है, तभी
तो इतनी उरियां है और सुमबकुम खड़ी है। वह तीनों मर्द एक साथ उस
पर एक भूके गिद्ध की तरह झपटना चाहते हैं। लेकिन... ..शायद मोमबत्ती
की धीमी धीमी रोशनी उन्हें ऐसा करने से रोक रही है।

अचानक आसमान पर किसी जेट जहाज की आवाज़ गूंजती है और
इसके साथ ही चारों सिम्त एन्टी एयर क्राफ्ट गन्स[3] का शोर उमड़ पड़ता
है। वह तीनों मर्द एक दूसरे से बाज़ी लेते हुए कमरे से बाहर आ गए हैं।
मैं एक गोशे में अपने आप को छुपाने की कोशिश कर रहा हूं। अब वह

1. बसने वालों। 2. कम्पन। 3. विमानभेदी तोपें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीनों 'ट्रेंच' में [illegible] सहमी सहमी लड़की को देख रहा हूं, जो बरामदे में बुत बनी खड़ी, एक परछाई सी नज़र आ रही है। आसमान की वुस्अतों में शोर बढ़ता जा रहा है। वह तीनों मर्द एक साथ अपनी ट्रेंच से बाहर निकल आए हैं और……और उस लड़की को घसीटते हुये ले जा रहे हैं। वह ट्रेंच में उतर चुके हैं। अब इनमें से कोई भी नज़र नहीं आ रहा है। उनके चेहरे, आंखें और न ही होंटों पर बिखरती हुई गुनाहआलूद मुस्कराहट… जहाज जाने किस सिम्त निकल गया, किन वुस्अतों में सुर्ख सुर्ख गोले बरसाता हुआ गुम हो गया। ए० ए० गन्स की दनदनाहट खत्म हो चुकी है। सिर्फ हल्की हल्की सी चीखें धरती की गहराइयों से उभर रही हैं और मेरे कानों से टकरा रही हैं…मैं इस अंधेरे में भी अपनी आंखें बन्द करके आगे बढ़ रहा हूं।

अब मैं जहां खड़ा हूं, यह मकान इस आबादी में एक वीराना है। यहां सब कुछ है, जो एक घर में होना चाहिए। रसोई से ख्वाबगाह तक के लिए हर चीज़ मौजूद है लेकिन इन चीज़ों को छूने के लिए जिस नर्मो-नाज़ुक लमस की जरूरत होती है वह नहीं है। इस वीराने में जो कदम फूल खिला सकते हैं वह कहीं भी नहीं हैं…यह घर प्रोफेसर रज़ी का है जो इसका सब कुछ होते हुये भी मालिक नहीं है। यह कितनी अजीब बात है। कुछ लोग सब कुछ होते हुए भी मालिक नहीं होते। इस ब्लैक आऊट में गिरते हुए सुर्ख अंगारों में भी इसे रेशमी का इन्तज़ार है। …रेशमी पिघले हुए सोने की तरह दमकता हुआ जिस्म, किश्तवाड़ी नगीनों की तरह चमकते होंट सांचे में ढला हुआ गर्म गर्म जिस्म। …मैं चाहूं तो इस मकान का दरवाज़ा खटखटा कर अन्दर भी जा सकता हूं। प्रोफैसर रज़ी की दुःख-सुख की बातें सुन सकता हूं। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता, नहीं करना चाहता। मैं जानता हूं प्रोफैसर को यह तनहाइयां बेहद महबूब हैं। इन तनहाइयों में वह रेशमी से बातें करता है। कुछ उसकी सुनता है, कुछ अपनी सुनाता है और यह तनहाइयां बेदायरा लफ्ज़ों को अपनी दीवारों में क़ैद करती हैं। …मेरी ज़रा सी आहट पर उसकी सारी तनहाइयां जल जायेंगी। रेशमी का पैकर[4] इन सुर्ख सुर्ख अंगारों की नज़र हो जायेगा। इन्तज़ार का आईना टूट जायेगा। यह जुल्म मैं नहीं करना चाहता, मुझ से नहीं होगा…मुझे

---

4. आकृति।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

याद आ रहा है गुजिशता साल इन्हीं दिनों में जब वह यहां आया था, रेशमी के साथ, तो इस बस्ती के दिल धड़के थे। रविश रविश[5] पर मुसर्रत के फूल खिले, वादों के जाम खनके थे, महब्बत की शबनम छिड़क गई थी··· रेशमी वाकई बेहद सुन्दर थी। लेकिन अब वह नहीं है। वह प्रोफ़ैसर रज़ी को छोड़कर चली गई हैं। शायद रेशमी के दिल में प्यार की नदी सूख चुकी थी और आस के बादल रूठ चुके थे। तभी तो वह चली गई और इस घर के बेशुमार अनगिनत लम्हे तनहाइयों की आगोश में पल कर, मुस्करा कर, गुनगुना कर, वक्त की सलीब पर चढ़ गये। और अब इस सलीब पर जो ज़िन्दा लाश लटकी हुई नज़र आती है, वह प्रोफ़ैसर रज़ी की है।

मैं इस सलीब पर लटकी हुई लाश को अपने ज़हन के एक गोशे में छुपा कर दबे दबे कदमों लौट आता हूं···मेरे सामने एक छोटी सी गली है और मैं इस गली को पार कर के बिजली के ऊंचे खम्भे से टेक लगाए खड़ा हो गया हूं। रोशनी नहीं है लेकिन मैं जिस मकान में झांक रहा हूं अभी चन्द दिन पहले वह रंग रंग में डूबा हुआ था। कुमकुमों की रोशनी में निखरा हुआ था। लग रहा था जैसे मलगज़ी आसमान से सितारे उतर आये हों और यहां अपनी खुली खुली आंखों से देख रहे हों, रोशनी बिखेर रहे हों···लेकिन अब सितारों की आंखें टिमटिमा कर बन्द हो गई हैं और रोशनी तपती रेत के जर्रों तले गुम हो चुकी है···अभी चन्द दिन पहले सुधा यहां दुल्हिन बन कर आई थी। अभी उसके हाथों की महन्दी सूखने भी न पाई थी, अभी अपने 'उस' को देखा भी न था कि जंग छिड़ गई और 'उसे' जाना पड़ा। दूर, बहुत दूर···इन्सानी कदरों की रक्षा के लिए, जम्हूरियत की बका[6] के लिए···फौजी हुक्मरानों की दस्त-दराजियों, जाबिरों के जुल्म-ओ-सितम और इकतिदार के भूखे आमरों से लड़ने के लिए। अपने मुल्क की सरहदों की हिफाज़त करने के लिए···जंग बन्द होगी, जरूर बन्द होगी। सच्चाई की जीत होगी···लेकिन कोई मुझे समझा दे—इस नन्ही मुन्नी दुल्हिन की तम्मनाओं, आरजुओं के खून का जिम्मेदार कौन है? जाने यह जंग कब बंद होगी, यह ब्लैक आऊट कब तक जारी रहेगा···उसी समय तक···मैं खिड़की के करीब आ गया हूं। सुधा अपने कमरे में अकेली

5. बाग के अन्दर के पतले रास्ते। 6. अनश्वरता।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

है। उसने सुर्ख रंग का जोड़ा पहन रखा है। उस पर खिले हुये फूलों को देखकर महसूस होता है जैसे उसके जिस्म पर कोंपलें फूट आई हों और चम्पई सा साया लिए लरज़ां लरज़ां उसका दूधिया बदन ऐसे नज़र आ रहा है जैसे सफेद सफेद ठंडी ठंडी बर्फ में बादाम के शगूफों का घुला हुआ रंग थिरक रहा हो···आंखों में झील की सी गहराइयां हैं। लेकिन यह गहराइयां उसकी नीम-शबी[7] की दास्तान को दुहरा रही हैं···मेरे मन में एक तूफ़ान उठ रहा है। जाने यह कैसा तूफ़ान है और तूफान का यह हिचकोला मुझे कहां ले जायेगा?···कहां?···ख्यालों की यह लहरें किस किनारे पर फैंक देंगी। मैंने अपने हाथों से अपना मुंह ढांप लिया है··· मैं उसकी तरफ देखना नहीं चाहता···मैं वहशी बनकर···मैं कोई खुदा नहीं हूं···अगर मैंने उसकी जानिब एक बार देखने की कोशिश की तो···तो शायद···मेरी प्यास बढ़ रही है···मेरी तिशनगी बढ़ रही है। मैं अपने खुश्क होंटों पर अपनी जबान फेर रहा हूं···शराब···सिर्फ दो घूंट शराब···खुदा के नाम पर। ···नहीं, वह अज़ीम है···मेरे नाम पर···रेशमी के नाम पर [सुर्ख जोड़े में लिपटी हुई दुल्हिन के नाम पर] ···शायद मेरे जिस्म की आग बुझ जाए···बुझ कर राख हो जाये और धुआं···मुझे अपनी हर सिम्त धुआं नज़र आ रहा है और मैं धुएं के मरगोलों में फलांगता हुआ भागा जा रहा हूं।

अब मैं रुक गया हूं!

मैं रुकना नहीं चाहता पर मेरे कानों से एक शीरीं आवाज़ टकरा रही है।

"जमालियाती प्यास···" एक लतीफ़ कहकहा सुनाई देता है।

मैं आगे बढ़ता हूं···अब मेरी नजारों के सामने अंधेरा है, बिल्कुल अंधेरा···और यह शीरीं आवाज़ इस पुरइसरार अंधेरे में और भी इज़ाफ़ा कर रही है। आवाज़ की मिठास जाहिर कर रही है कि सरापा भी खूबसूरत होगा। जसामत और कदामत भी सुन्दर होगी।···

"जमालियाती प्यास···" एक बूढ़ी खुरदरी आवाज़ उभरती है··· "जमालियाती प्यास से मतलब यह है कि मैं अज़ल-अज़ल हुस्न का शैदाई हूं और मेरी हुस्न को देखने, छूने और पाने की प्यास···अनमिट है···!"

---

7. अर्द्धनिद्रावस्था।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"अनमिट और यह तारीकी···खूब···" वह जवाब देती है।

"हुस्न देखने और परखने के लिए रोशनी की ज़रूरत नहीं। और मैं तो अंधियारों का बासी हूं···रोशनी से मुझे डर लगता है···"

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"क्यों···?"

"यह मैं खुद भी नहीं जानता···"

"लेकिन मैं जानती हूं। अभी-अभी जान गई हूं···"

"क्या···?"

"जाने भी दीजिये। बिन्दु अभी तक कॉफी नहीं लाई है। मैं अन्दर जाकर उसकी मदद करती हूं···तब तक शायद मेरा भाई भी आ जायेगा··· मुझे लेने के लिए···"

"रुक भी जाओ···" धीमी आवाज़ सुनाई देती है।

मैं नर्म-ओ-नाजुक कदमों की आवाज़ सुनता हूं...वह कमरे से उठ कर जा रही है। सुबक रवी[8] के साथ जैसे झील की सतह पर बतख तैरती हुई जा रही हो। एक दरवाज़ा नीम वा' होता है और फिर बंद होता है··· खामोशी···तवील खामोशी।

"साली !" वही खुरदरी आवाज़ फिर कानों से टकराती है···"मुझे बूढ़ा समझती है···क्या हुआ मैं उसके बाप की उम्र का हूं···क्या हुआ जो वह मेरी बेटी की दोस्त है, हमजमायत है···पढ़ने के लिए यहां आती है···मैं तो हुस्न का परस्तार हूं···हर उम्र का शैदाई हूं···मेरी भूख अनमिट है··· मैं···मैं···"

कोई आवाज़ नहीं···सिर्फ कदमों की चाप सुनाई देती है···दरवाज़ा एक बार और नीम वा' हो जाता है और फिर जोर से बन्द हो जाता है··· अब यहां कोई नहीं···कोई नहीं···!

दूर काली काली फ़िज़ाओं में किसी फौजी ठिकाने से सर्च लाइट छोड़ी गई है और अचानक इन काली फ़िज़ाओं में एक लम्हे के लिए कोसे-कज़ा का रंग निखर गया है और इसके साथ ही गोले बरसाने की आवाज़

8. तेज चलना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सारी बस्ती में उथल-पुथल मचा रही है···एक साया मेरी जानिब बढ़ रहा है···
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कौन···?" साया करीब आकर पूछता है।

"मैं हूं···!"

"आप हैं साहब ?"

"असग़र ! तुम कहां जा रहे हो ?"

"अन्दर डर लग रहा है। अन्धेरा है न साहब !"

"भाई, अन्धेरा तो बाहर भी है ?" मैं कहता हूं।

"वह तो है साहब, लेकिन···अन्दर कोई बम पड़ा तो कैसे भाग सकूंगा ?"

"पड़ने को तो बम यहां भी पड़ सकता है। वैसे अन्दर कौन है ?···'

"कोई भी नहीं···"

"करीम साहब, उनकी मिसेज और बच्चे ?"

"करीम साहब तो साथ वाले क्वार्टर में ताश खेल रहे हैं। बीबी जी बच्चों को लेकर श्रीनगर चली गई हैं।"

करीम साहब को ताश खेलने की किस कदर हवस है। सामने सरहदों पर गोले बरस रहे हैं। सातवें बहरी बेड़े की आमद आमद है और अपने करीम साहब ताश के पत्तों से दिल बहला रहे हैं और वह भी साथ वाले क्वार्टर में। मिसेज गौतम सिह के साथ ताश खेल रहे होंगे। सिंह जी तो शाम को दो एक पैग पीकर बहक जाते हैं और बहक कर सो जाते हैं। फिर करीम साहब और मिसेज गौतम सिह पत्तों में जाने क्या तलाश करते रहते हैं। यह अक्सर होता है। अक्सर क्या, हर रात को देर गए तक यह बाज़ी चलती रहती है। और उधर करीम साहब के हां···उन्हें यह मालूम नहीं होता कि उनकी अपनी धरती फैल गई है या सिकुड़ गई है।

मेरी सोचों का तसल्सल[9] टूट रहा है।

"श्रीनगर क्यों···?" मैं फिर करीम साहब के नौकर असग़र से पूछता हूं।

---

9. निरन्तरता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"साहब ! वहां मुसलमान रहते हैं न। वहां बमबारी नहीं होगी। इसलिए वहां कोई डर नही।"

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कितने भोले हो असग़र ? तुमने सुना नहीं आज पाकिस्तानी जहाजों ने श्रीनगर के हवाई अड्डे पर कई बार हमले किए। कई आदमियों के मरने की खबर भी आई है···!"

"यह झूठ है, साहब। भला मुसलमान मुसलमान को मार सकता है ?"

"और जो मश्रिकी बंगाल में हो रहा है, वह क्या···?"

असग़र मेरी बात को काटते हुए कहता है—"साहब बीबी जी कहती थीं, वह मुसलमान नहीं, बंगाली हैं।"

"और तुम्हारे करीम साहब···वह क्या हैं···?"

"तौबा···तौबा···आप क्या कहते हैं साहब। वह तो पक्के मुसलमान हैं। नमाज़-ओ-नवाफ़िल पढ़ते हैं, हर रोज सुबह सवेरे···हां साहब ! ज़रा शाम को···बेगम, गुलाम, बादशाह···इक्का···हां साहब मैं आप की बात समझ गया···रिशवत की बात कह रहे हैं आप···सब समझ रहा हूं साहब··· ज़रा बात समझने में देर लगती है। अनपढ़ हूं न साहब···बीबी उनको यहां छोड़कर चली गईं और···वह···"

मैं सुनी को अनसुनी करते हुए पेशकदमी कर रहा हूं। असग़र पीछे रह गया है।

·

दरमियान में एक छोटी सी तिपाई है···इसके आस पास चार कुर्सियां हैं···तिपाई पर ताश के बावन पत्ते बिखरे पड़े हैं। दो कुर्सियां खाली हैं और दो कुर्सियों के पसे-मंजर[10] से दो लटके हुए चेहरे उभरते हुए नज़र आ रहे हैं। एक चेहरा करीम साहब का है और दूसरा चेहरा मिसेज सिंह का। इस माहौल में एक और वजूद नज़र आ रहा है। यह गौतम सिंह हैं जो एक गोशे में सोफ़ा पर दुबके पड़े हैं···जी० सिंह···गवर्मेंट कांट्रेक्टर एंड सप्लायर···लगता है दो एक पैग पीने के बाद वह बहक गए हैं और बहक कर सो गए हैं···

"एक और चाल," मिसेज सिंह कहती है।

---

10. नेपथ्य।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसकी शराबी आंखें करीम साहब के चेहरे पर मरकूज[11] होती जा रही हैं।

"बस अब बन्द भी कीजिए, काफ़ी देर हो गई…"

"अजी आप कमाल करते हैं। अभी तो खेल शुरू हुआ है।"

"चलिए, मेरी भी एक चाल…"

"मैं अपनी चाल डबल करती हूं…"

"मैं पत्ते देखे बग़ैर ही ऊपर हो जाता हूं।"

करीम साहब ने बिन देखे अपने पत्ते ऊपर कर लिए हैं।

"मिसेज सिंह, मैं चाहता तो यह बाजी जीत सकता था…!"

"आप जब चाहें जीत सकते हैं। ताश की बाजी ही नहीं… बल्कि…"

"मैं जान बूझ कर हारना चाहता हूं…"

"आप भी अजीब हैं, जीती हुई बाजी को भी हारना चाहते हैं?"

आंखें एक दूसरे के और करीब आ गई हैं और करीब आ कर के शोले बरसा रही हैं। सोफ़े पर लेटे हुए गौतम सिंह जी अचानक उठ बैठे हैं।

…डार्लिंग आज की शब भी करीम साहब ने दस्तखत न किए तो जानती हो अपना कितना नुक्सान होगा? दो लाख की बात है…आज तो आखिरी रात है।…"

मेरा वजूद थरथरा रहा है। मेरा अंग अंग कांप रहा है। मैं जान गया हूं कि दो एक पैग पीने के बाद जी० सिंह गवर्मेंट कांट्रेक्टर और सप्लायर क्यों बहक जाते हैं और बहक कर सो जाते हैं। और करीम अहमद आफंदी, एग्जीक्यूटिव इंजीनियर यहां अक्सर क्यों आते हैं…रात गए तक बावन पत्तों से क्यों दिल बहलाते हैं…बादशाह…गुलाम…नहला…दहला …इक्का और फिर बेगम…ताश की बेगम नहीं, ज़िन्दा-जावेद बेगम।

"डार्लिंग फाइल अन्दर कमरे में पड़ी है…आज…अभी दस्तखत हों तो ठीक है…कल का क्या भरोसा है…कल किस ने देखा है। और फिर जंग है, यह जंग…ऐसी जंग रोज़ रोज़ थोड़ी होती है…कल पौ' फटने से

11. केन्द्रित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पहले ही अगर 'सीज़ फायर' का ऐलान हुआ तो वह पुल कैसे बनेगा, किस लिए बनेगा। डालिंग तुम मेरी बात समझती क्यों नहीं···"

Gandhi Memorial College Of Education,Bantalab Jammu

नज़र एक बार और टकरा रही है और टकरा कर एक अनकही दास्तान को दुहरा रही है।

"पुल बनेगा···जरूर बनेगा। जंग बन्द होने से पहले बनेगा। कौमें रोज़ रोज़ पागल कहां बनती हैं···मिस्टर सिह···।" यह करीम साहब बोल रहे हैं।

अब वह दोनों उठ गए हैं और दूसरे कमरे में चले गए हैं। अब मैं सिर्फ गवमेंट कांट्रेक्टर जी० सिह को देख रहा हूं जो फिर बहक गया है और बहक कर सो गया है···तिपाई पर ताश के पत्ते बिखरे पड़े हैं। यह पत्ते बेजान हैं···एक दस्तखत और दो लाख की कमाई···यह हम किस समाज, किस सोसायटी की तखलीक कर रहे हैं···क्या हम ऐसे ही समाज की तखलीक के लिए जंग लड़ते हैं···? इन्हीं वेसुर और वेमकसद आदर्शों के लिए··· मेरे अन्दर की अनदेखी आग मेरी आंखों से उतरकर धीरे धीरे मेरे दामन में सुलग रही है।

जाने रात का कौन सा पहर है। इस बस्ती में घूमते-फिरते रात का बहुत समय गुज़र चुका है। जाने सवेरा कब होगा? ···सवेरा···यह पहली कोठी है। कई बरसों से खाली पड़ी है। कहते हैं यहां आसेब रहते हैं···भूत···रात के इस सन्नाटे में मुझे लगता है कि यहां पर हर क्वार्टर, हर मकान, हर कोठी और हर घर में भूत रहते हैं। आसेब···जो दिन की रोशनी में मुख्तलिफ रूप अपनाकर नज़र आते हैं और रात की तारीक़ी के साथ ही गायब हो जाते हैं···और यह प्रिंसिपल सूरी की कोठी है···इन दिनों लन्दन गए हुए हैं। कोठी बिल्कुल खाली है। अब तो कई दिनों से वह बूढ़ा माली भी नज़र नहीं आता। अपने पिंड गया होगा···अपने बाल बच्चों में···और यह युनाइटेड फ्रन्ट के सेक्रेटरी नत्थू राम जी का घर है। यह घर इस बस्ती में सियासी अखाड़े के नाम से जाना जाता है। इलैक्शन का ज़माना करीब-करीब है और इन दिनों यह सियासी अखाड़ा सैक्यूलरिज़्म का भरपूर मुजाहिरा करता हुआ नज़र आता है···हिन्दु, मुस्लिम, सिख, ईसाई···युनाइटेड फ्रन्ट का सेक्रेटरी धीमे लहज़े में चिल्ला रहा है—

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"हम सब भारतीय हैं। हमारे रंग मुख्तलिफ़ सही मगर गौर से देखा जाये तो इन रंगों की ग्रामेजिश[12] कितनी प्यारी है···हमारी एक तारीख़ है···मंज़िल है···दरअसल हमारा इक्तिसादी और समाजी ढांचा फरसूदा हो गया है··· यह कल्चर, यह तहजीब, यह तमद्दुन सब भरे हुए पेट के मरहूने-मिन्नत हैं और···और···"

ढेर सारी बातें···बेतसल्सल···कितने ऊंचे आदर्श हैं··· बेअमल···!

"इलैक्शन होने वाले हैं···आप सबने मिल जुल कर काम करना है··· अपने आदर्शों के लिए···अपने मुल्क के लिए···मेरे लिए··· मैं एक बार फिर आपके गोश-गुज़ार करना चाहता हूं कि मैं इसी हलके से इंतिख़ाब लड़ रहा हूं···आप जानते हैं कि मैं···?" जानता हूं कि क्या कहना चाहते हैं, अपने सियासी अखाड़े के यह दारासिंह जी— बजाहिर मसावात, सालमियत, अख्वत, जम्हूरियत के अलमबरदार नज़र आते हैं लेकिन अन्दर से बेहद मुतस्सब, फिरकापरस्त और तंग-नज़र हैं। इनके कई रूप हैं, कई चेहरे हैं लेकिन सब मसनूई, बनावटी···!

अब इनकी मामूल की निशस्त बरखास्त हो गई है। सामईन धीमी धीमी रोशनी में एक दूसरे का हाथ थामे उसी रास्ते से बाहर निकल रहे हैं, जहां मैं खड़ा हूं···मैं भी उनमें शामिल हो गया हूं। "क्यों जी आपका क्या ख्याल है···" मौलवी बशीर-उद्-दीन अपने साथी अहमद अली से पूछता है।

"मौलाना, बड़े ऊंचे विचार हैं···!"

"यही तो मैं कहता हूं···ऐसे ही लोगों की इस मुल्क को ज़रूरत है··· इन्दिरा जी को इन लोगों का साथ मिल जाये तो मुल्क ज़रई, सन्नती, मुआशी, समाजी, और इक्तिसादी तौर पर बहुत आगे बढ़ सकता है। एक खामोश इन्कलाब बपा हो सकता है···गुरबत, जहालत के खिलाफ़···

मिसेज इन्दिरा गांधी···वज़ीर-ए-आज़म हिन्द !!

मैं इन हज़रात से कहना चाहता हूं कि इन्दिरा जी को ऐसे सियासी अखाड़ों में पलने वाले दारा सिंहों, बद्री प्रसादों और मौलवी बशीर-उद्-दीनों

---

12. मिलावट।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

की हरगिज़ हरगिज़ ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह जानती हैं कि यह सब मुतस्सब, फिरकापरस्त और तंग-नज़र हैं। यह दीमक की तरह हमारी तहज़ीबी, समाजी, मुआशी, और इक्तिसादी तरक्की की राहों को चाट रहे हैं···लेकिन मैं खामोश हूं। मैंने अपने लब सी लिए हैं। मौलवी बशीर-उद्-दीन और अहमद अली और कई दूसरे लोग ऊंची सी दीवार का सहारा लिए अपने घरों को लौट रहे हैं। मैं रुक गया हूं और अब फिर उसी जगह पर खड़ा हूं जहां से मैं एक बार फिर सेक्रेटरी जी को देख रहा हूं··· वह एक बार फिर जलाल में आ कर अपने साथियों से कह रहे हैं···

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"यह मुसलमान फिरकापरस्त हैं, मुतआस्सुब हैं···साले पाकिस्तानी हैं···इन पर भरोसा न करो···और यह···यह···"

युनाइटेड फ्रन्ट के सेक्रेटरी श्री नत्थूराम जी अपने भाषण में मसरूफ हैं। उनके चेहरे पर चढ़ा हुआ मसनूई खोल उतर चुका है और वह अपनी असली शक्ल-ओ-सूरत में सामईन को अपने बुलंद आदर्शों से मुस्तफ़ीद[13] कर रहे हैं···मैं आगे सरक रहा हूं और सोच रहा हूं कि यह मुसलमान ही हैं जिन्होंने एक बार फिर दो कौमी नज़रिये को ठुकरा दिया है और यह वही हैं जिन्होंने यह बात साबित कर दी है कि कौमें सिर्फ मजहब की बुनियाद पर नहीं बनती हैं बल्कि कौमों की बुनियाद उनकी तहज़ीबी, सियासी, मुआशी और जुगराफियाई हालात पर होती है···और यही वजह है कि दुनिया के अज़ीम नक्शे में एक और अज़ीम नाम का इजाफा हो रहा है—

"आमार सोनार बांगला देश"

बंगला देश !

यह मकान नं० 108-ए है। वैसे इस मकान के गेट पर जो बोर्ड आवेज़ां है उस पर लिखा हुआ है। इन्टेलैक्चुअल'स डेन (*Intellectuals den*) लेकिन यह लफ्ज बजाते खुद इतना सकील[14] है कि इस बस्ती में किसी की जुबान पर चढ़ता नहीं। इस बस्ती का डाकिया भी इस नाम से बेखबर नज़र आता है। यह मकान सिर्फ अपने नम्बर से जाना जाता है। यहां कौन रहता है, किस नस्ल, किस तबका से तआल्लुक रखता है, क्या करता है, कब आता-जाता है, किसी को इस से सरोकार नहीं है। अलबत्ता !

---

13. लाभ पहुंचाना। 14. बोझल, कठिन।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मकान नं० 108-ए हर एक की जबान पर ऐसे फिसलता है जैसे मकान न हो···थूक हो !

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे यह मकान पसन्द है। इसकी अपनी इन्फरादियत[15] है। इसकी बेतरतीबी में एक तरतीब है। जहां फूलों की क्यारियां होनी चाहिए थीं, वहां ढेर सारे कंकर हैं। जहां सब्ज सब्ज घास के ढेर होने चाहिए थे, वहां रेत के मलबे हैं···और मैं देख रहा हूं नं० 108-ए अपने कमरे में एक ऐसी कुर्सी में धंसा हुआ है जिसकी सिर्फ तीन टांगें हैं और चौथी टांग के बदले उसने अपने एक हाथ से दीवार का सहारा लिया हुआ है और उसका दूसरा हाथ सामने पड़े ट्रांजिस्टर पर यूं चल रहा है जैसे वह गर्म-गर्म मूंगफलियां तोड़ रहा हो···कभी एक स्टेशन और कभी दूसरा···!

"यह रेडियो पाकिस्तान है। आज हमारे मुजाहिदों ने छम्ब सैक्टर में दुश्मन की तीन चौकियों पर···!"

"यह आल इन्डिया रेडियो है···आज स्यालकोट सैक्टर में हमारी बहादुर फौजों ने पेशकदमी करते हुए···"

"चार सेबर जेट जहाज गिराए गए।"

"श्रीनगर के हवाई अड्डा पर पाकिस्तानी बमबारों ने तीन बार बमबारी की लेकिन कोई नुक्सान न हुआ।"

"हमारे दिलेरों ने कर्गिल सैक्टर में शानदार कामयाबी हासिल की है···और पाकिस्तान की चार अहम चौकियां हमारे कब्जे में हैं···"

"चीन पाकिस्तान का साथ देगा"

··· ··· ··· ··· ···

"सातवां बहरी बेड़ा···"

"डाउन विद् निक्सन···"

··· ··· ··· ··· ···

··· ··· ··· ··· ···

··· ··· ··· ··· ···

लता मंगेशकर की आवाज़ में कितनी मिठास है···आवाज़ की देवी ! ···सरफ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है···

15. विलग सत्ता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अभी अभी खबर मिली है कि जम्मू-व-कश्मीर के वज़ीर-ए-आला जनाब गुलाम मुहम्मद सादिक की मय्यत[16] श्रीनगर पहुंच गयी है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नं० 108-ए ने एक बार फिर रेडियो की सुई घुमा दी है और अब रेडियो खामोश हो गया है

"ही इज़ रियली एन इंटेलेक्चुअल। ही हैज़ नो डिसीज़न ऑफ हिज़ ओन। ही इज़ कन्फ्यूज़्ड विद डे-टू-डे, न्यूज़...''

यह दो-मंजिला मकान नहीं, इसे दो-कमरा मकान कहा जा सकता है। यूं तो इसके तीन कमरे हैं। दो बैड-रूम, एक ड्राइंग रूम। रसोई बाहर ही है। इसका ड्राइंग रूम हमेशा ही बन्द रहता है। अलबत्ता दोनों ख्वाबगाहों और रसोई में ज़िन्दगी के आसार नजर आते हैं। ...रसोई में मक्खन रहता है...नौकर है न वह...एक बैड रूम में पांडे साहब रहते हैं और दूसरे बैड रूम की ज़ीनत हैं सबा साहब...। पांडे साहब हाल ही में जाने कहां से तब्दील हो कर यहां आए हैं। वह अंडर सेक्रेटरी हैं और सबा साहब कहानीकार हैं... यह दोनों किरायादार हैं। मालिक मकान यहां नहीं है अलबत्ता किराया मक्खन वसूल करता है। कुछ लोग तो कहते हैं कि यह मकान दरअसल मक्खन का ही है। जाने यह बात कहां तक दुरुस्त है।

पांडे साहब के कमरे में फाइलों का एक ढेर पड़ा है। वह एक तरफ से फाइलें उठाते जा रहे हैं। पढ़ते हैं...सोचते हैं...और कुछ लिख कर दूसरी तरफ फेंकते जा रहे हैं। यह सिलसिला तवील है...आरज़ुओं की तरह जिनकी कोई इंतिहा नहीं...आरज़ुओं का सिलसिला लाइंतिहा है... फाइलों का सिलसिला लाइंतिहा...और दूसरे कमरे में सबा साहब लिखते जा रहे हैं और बड़बड़ाते जा रहे हैं...शायद किसी नई कहानी की तखलीक हो रही है।

"इन के लिए यह दुनियां एक खूबसूरत कोठी, एक नई नवेली कार, चन्द नौकर और दो एक अंग्रेजी नसल के कुत्तों तक महदूद है। चुस्त लिबास पहन कर यह समझती हैं कि इन्होंने एक नई तहजीब को जन्म दिया है। होटलों के चिकने फर्शों पर अजनबी बाहों में झूल कर यह सोचती हैं कि

---

16. अर्थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इन्होंने एक नए कल्चर की बुनियाद डाली है। इनके नज़दीक इख़लाक मोम की नाक है'''जिधर चाहा घुमा लिया'''?"
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नई कहानी ! नया उनवान !!

और मुआवज़ा'''? मबलग़ चालीस रुपये नकद निस्फ जिसके पूरे बीस रुपये होते हैं !!!

रसोई घर में मक्खन ने भगवान राम की मूर्ति पर फूल चढ़ाए हैं और वह भी अभी अभी प्रार्थना से फारिग़ हुआ है और आंखें खोले अपने भगवान से कह रहा है—

"मेरे भगवान ! '''मेरे राम !! यह जंग तूने शुरू की तू ही बन्द करने वाला है। बस, मेरी एक बात सुन ले, एक इल्तिजा'''एक गोला सेठ धनी राम पर फेंक दे। वह मर जाए और मैं'''ताकि मैं इस मकान का मालिक बन जाऊं'''शादी करना चाहता हूं, भगवान ! '''अब''' !"

एक और सर्च-लाइट इन अंधियारों में कौसे-कज़ा के रंग फेंक रही है। मक्खन की प्रार्थना एक दम बन्द हो गई है। ज़रा सी रोशनी है और मैं इस रोशनी में आगे जा रहा हूं।

यहां मेजर कोहली रहता है। अधेड़ उम्र मेजर, जो वक्त से पहले रिटायर हो चुका है। पिछली जंग में वह राजस्थान में लड़ रहा था और उस जंग में उसकी दोनों टांगें काम आईं'''अब वह एक व्हील चेयर के सहारे चल फिर सकता है'''उसकी इस वीरान और उजाड़ सी ज़िन्दगी की साथी है—शेबा—उसकी बेहद खूबसूरत कुतिया ''मेजर कोहली व्हील चेयर पर बैठा हुआ है और शेबा उसके सामने खड़ी है और दुम हिला रही है।

"शेबा'''शेबा, यह जंग बहुत बुरी है। यह लोगों को घर से बेघर बनाती है। उनके लहलहाते हुये खेत जला देती है। उनके मासूम और प्यारे प्यारे बच्चों को हलाक कर देती है'''गुलिस्तानों को रेगिस्तानों में बदल देती है '''मैंने'''मैंने'''" आंसुओं के कतरे उसकी आंखों से टपक टपक कर शेबा के नर्म-ओ-नाज़ुक बालों को छू रहे हैं। शेबा अब दुम नहीं हिला रही है। वह मेजर के और करीब आ गई है और अपनी दो टांगों पर खड़ी होकर अपनी ज़ुबान उसके हाथों पर फेर रही है, शायद उसे दिलासा दे रही है !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मैं अपने कमरे में लौट आया हूं। वही तनहाई है, अकेलेपन का एहसास है, बिखरा हुआ धुआं है और सामने तिपाई पर सुर्ख रंग के ठर्रे की खाली खाली बोतल है…मैंने बोतल को अपने हाथों में थाम लिया है और मय-नाब[17] के आखरी क़तरे अपने गिलास में डाल रहा हूं…मैं मरने से पहले ज़िन्दगी का आखरी ज़हर पीना चाहता हूं…लेकिन बोतल बिल्कुल खाली है, कोई कतरा नहीं, कोई बूंद नहीं…कोई आस नहीं…!!!

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

❖❖

17. एक प्रकार की शराब।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गले सड़े फल

तेजबहादुर भान

●

नूरे ने दुकान खोली ही थी कि अज़ीज़ आन टपका।

अज़ीज़ के आते ही नूरे के ज़ेहन में अजीब से ख्यालात रवां हो जाते हैं। ऐसा महसूस होता जैसे अज़ीज़े की लम्बी नुकीली नाक उसकी अपनी चपटी नाक का मज़ाक उड़ा रही है। ग़ैर-इरादी तौर पर वह फल की टोकरियों से नज़रें हटा कर अज़ीज़ के खरबूजे नुमा सिर का मुकाबला अपने बेढंगे सिर के साथ करने लगता। झुर्रियां दोनों के विरसे[1] में थीं पर अज़ीज़ के माथे की झुर्रियां सोच विचार का पता देतीं और उसके अपने माथे की झुर्रियां बुढ़ापे का।

रोज़ दुकान खुलते ही अज़ीज़ तम्बाकू पीने के लिए उसके पास आता था और हर रोज़ उसके ज़ेहन में यह ख्यालात रेंगने लगते थे। अज़ीज़े के आते ही वह दुकान में लगे सस्ते आईना में अपनी सूरत ग़ौर से जांचना शुरू कर देता। आईने में उसका चेहरा अजीब सूरतें बदलता रहता। कभी नाक लम्बी होकर सांप की तरह लहराने लगती और कभी सिरे से ही गायब हो जाती। सिर्फ नथुनों के सुराख मामूल से बड़े नज़र आया करते। आंखें दो हकीर नुक्तों में तब्दील होतीं और चेहरा ज़रा हिला तो

1. उत्तराधिकार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

इतनी फैलती इतनी फैलतीं कि वह घबरा कर मुंह फेरने पर मजबूर हो
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जाता था।

को इस आईने से चिढ़ थी पर आईना हटाना उसे मंजूर न था। अब फ की बिक्री ही कौन सी हो रही थी। और सिर्फ एक आईना ही तो था उ दुकान में···जिसमें फलों का अक्स अजीब अजीब सा लगता था। दुका दिलकशी में बहुत इज़ाफा होता था। दूर से तो दुकान फलों से भर ज़र आती थी।

आज भी रोज़ की तरह उसने आईने पर कपड़ा फेरा। और आज रोज़ की तरह उसे अज़ीज़ का जिस्म आईने में गांठों से पुर दिखाई या। अज़ीज़े को अपने पास महसूस करके वह बहुत मसरूर[2] हुआ। अज़ीज़ा उसका दोस्त था, गमख्वार था। घरेलू उलझनें जैसे हर किसी को सुनाने की नूरे को बीमारी सी हो गई थी। पर मुश्किलें अज़ीज़े को ही मुत्तासर करती थीं। सिर्फ एक अज़ीज़ा ही था जो अपनी मुश्किलात के बावजूद भी उसका दिल बढ़ाता रहता। मुश्किलात की वजह समझाया करता। उन्हें दूर करने के लिए फिक्रमंद रहा करता और वही एक शख्स था मुहल्ले में जो सबको नये कवानीन के मुत्तालिक बतलाता रहता···खास तौर से कश्मीर के और ग़ैरमुल्की मसलों को वाज़या करता रहता था। नूरे को यह फिक्र न थी कि दुनिया में क्या कुछ हो रहा है वह तो सिर्फ फल फरोख्त करना जानता था। और उसे अफसोस था कि लोग फल खाना छोड़ रहे हैं। हां! जलसों–जुलूसों के दिन उसकी बिक्री ज़रा बढ़ जाती थी इसलिए वह अज़ीज़े से मिलते ही पूछ बैठता, "क्यों भई, यह मेहमान कश्मीर का दौरा कब तक करते रहेंगे···? सुना है अज़ीज़े आज फिर जलसा होगा ?"

रोज़ की तरह सब कुछ हो रहा था। अज़ीज़ा बैठा फल की खाली पेटी से पीठ लगाए हुक्का गुड़गुड़ा रहा था और राहगीरों को देखते हुए सोच रहा था कि थोड़ी देर बाद अज़ीज़ा उसके हाथ में हुक्का थमा कर पूछ बैठेगा, "बोल भई नूरे, दुकान का क्या हाल चाल है ?" और फिर जवाब सुने बगैर फलों के कारोबार पर तबसरा करने लगेगा। फलों से होते हुए वह

२. आनन्दमग्न ३. हमदर्द ४. टिप्पणी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुनिया के हालात पर आयेगा और फिर किसी इक्के-दुक्के खरी, को देख कर बरस पड़ेगा, "सुन बे नूरे, मैं कह रहा हूं, यह लोगों को क्य हो गया है। मुर्दे हैं मुर्दे···! अरे भाई इधर अमरीका फार्मूसा में ऐटम बम ाने को तैयार हो रहा है, उधर अफ्रीका में काले-गोरे का इम्तियाज़ शदीद त जा रहा है। अपने कश्मीर ही की लो···पाकिस्तान गिद्ध की तरह सिर पर ला रहा है···और यह लोग···किस बारीकी से ढूंढ रहा था दाग नाशपाति में यह खरीदार ।···और जो दिल में नासूर बढ़ रहे हैं, उन्हें कोई ीं टटोलता···"

और वह भी तो अपना जवाब तोले बगैर ही दे देगा, "हां भई अज़ीज़े अजीब लोग हैं यह। पर कुछ सुना तुमने ? हिन्दुस्तान में फल डिब्बों में बन्द करने के लिए नये कारखाने खुल रहे हैं। अब तो फलों की मांग बढ़ जायेगी। परमिट ला दो न कहीं से—फल पड़े पड़े सड़ रहे हैं···"

अज़ीज़ा सुनेगा और ऐसे सिर हिलाएगा जैसे उससे बिल्कुल मायूस हो गया हो, "अरे मैं जिन लोगों की बातें कर रहा हूं, तुम भी उनमें से एक हो।" पर उसको खिसियाना सा देख कर अज़ीज़ा जल्दी से बात मोड़ेगा, "तुम फिक्र न करो, परमिट के लिए कोशिश करूंगा। पर भई, अपने इर्द-गिर्द का भी कुछ ध्यान रखा करो। पत्थर तो हो नहीं तुम।···अच्छा भाई, मैं तो चला घर को।···" नूरा अज़ीज़े को घर की ओर जाते देखकर ठंडी सांस भरेगा। क्या वाकई उसका दिमाग ठीक नहीं। इतना कुछ दुनिया में हो रहा है, और वह है कि···!

दफ़अतन[3] उसे महसूस हुआ कि वाकई उसका दिमाग ठीक नहीं। वह यहां बैठे बैठे मामूल के मुत्तालिक सोच रहा है और घर पर हर्षी चावल का इंतज़ार कर रही थी। दो दिन से चावल खत्म हो गए थे और उन्हें खरीदने के लिए उसके पास एक भी पैसा न था। फल पड़े पड़े सड़ रहे थे। यह दो दिन उन्होंने सूखे, मुरझाते फलों के सहारे काट दिए थे। हाजरा से तो निगले न जाते थे यह फल और हर्षी बेचारी···बुढ़ापे में जिसने उसके घर की चारदीवारी को रोशन किया था, कितनी मचली थी वह चावलों के लिए ? रो रो कर आंखें लाल हो गई थीं उसकी···!

---

३. सहसा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सड़क पर निगाहें गाड़ते हुए वह सोचने लगा, "अज़ीज़े से और कैसे मांग लूं...बारह सेर तो उधार आए हैं उसके घर से...और शायद अब उसके पास भी कुछ न हों...तो...तो...कुछ न सूझा तो वह बड़बड़ा उठा, "खुदाया ! यह हरी हरी नाशपातियां, लाल लाल सेब, पीले पीले सुनहरे बग्गूगोशे... आबे-हयात के कटोरे सिर्फ सड़ने के लिए ही पैदा किए हैं तुमने । क्या हाजरा को सूखे सड़े फल जबरदस्ती निगलने पड़ेंगे...क्या हर्षी की आंखों में भूख उमंडनी ही चाहिए...नहीं, ऐसा नहीं होना चाहिए...उसे चावल लाने पड़ेंगे... अपनी हर्षी के लिए कहीं से भी लाने पड़ेंगे । और उसने अज़ीज़े के सामने हाथ फैलाने के लिए फिर से दिल को आमादा किया । वह अज़ीज़े की तरफ मुड़ा तो ठिठक सा गया ।

अज़ीज़ा खिलाफ-ए-मामूल[६] चुप बैठा था । चिलम बुझ गई थी फिर भी वह हुक्के के कश खींचने में मसरूफ था । माथे पर की झुरियां और गहरी हो गई थीं । नूरे से रहा न गया । अज़ीज़े को इतना खामोश देखकर वह सब कुछ भूल गया, "किस सोच में हो अज़ीज़े ?" अज़ीज़े के चौंक न पड़ने पर उसे मायूसी हुई । अज़ीज़ा टेकरियों की तरफ बदस्तूर देखते हुए कहने लगा, "दुनिया में अमन पसन्द लोगों को ललकारा जा रहा है ।" अब की बार नूरा खुद चौंक गया, "पाकिस्तानियों ने फिर हमला किया या कोरिया में फिर जंग शुरू हो गई...?"

"नहीं भई, मगर खतरा बढ़ रहा है । बग़दाद पैक्ट ने हिन्दुस्तान को घेरना शुरू किया है और शायद एशिया में जंग छिड़ जाये," अज़ीज़े ने हुक्का बदस्तूर गुड़गुड़ाते हुए जवाब दिया ।

"जैसे जर्मन जंग..." नूरा दिल की धड़कनों की तेजी को सम्भालते हुए बोल पड़ा । "हां ! बल्कि उससे भी खतरनाक जंग । ऐटम और हाईड्रोजन की जंग ।" और अज़ीज़े ने हुक्के की 'नै' को आखिर मुंह से जुदा कर ही दिया ।

नूरा सोचने लगा । पर वह कुछ सोच न सका । उसके दिल में खुशी का तूफान फट पड़ा जिसकी तेजी उसके चेहरे पर भी तेजी से अयां[७] होने

---

६. नियम-विरुद्ध 7. क्रान्ति

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लगी। फलों की गली-सड़ी टोकरियों पर निगाहें जमाए हुए वह बीते ज़माने
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
को याद करने पर मजबूर हो गया।...

...जब वह दुकानदार न था बल्कि न में मौसमी मेवों से भरी छाबड़ी उठाये फिरा करता था। छः आने सेर खुबानियां लो... आड़ू लो... नाशपातियां लो...यह आवाज़ें गले को जख्मी बना देती थीं। और दिन भर सड़कें माप माप कर वह शाम को नंगे पैरों छालों की कसक लेकर लौटता था। कमाई के चार-पांच आने उसे दिन भ की थकावट से नजात न दिलाते थे और दूसरे दिन पुरानी थकावट को सभालते हुए वह फिर गली कूचों के चक्कर काटने लगता। और यकायक सकी ज़िन्दगी में तग़य्युर[7] रूनुमा हुआ। जर्मन जंग छिड़ गई। फौजी और गोरे काफी तादाद में आने लगे। उसकी बिक्री बढ़ी और वह छाबड़ी ाले से गाड़ी वाला बन बैठा। सुबह सुबह वह गाड़ी लेकर कहीं चौराहे र डेरा जमा देता। दिन भर आराम से बैठे बैठे फल बेचता रहता और शाम को खाली गाड़ी ढकेलता हुआ घर को उम्मीदों से पुर लौट आता. कितने अच्छे दिन थे वह...उन दिनों उसने अच्छा खाया, अच्छा पिया, च्छा पहना। शादी की। छोटा सा मकान बनवाया। तेजरफ्तारी ने सकी ख्वाहिशों को भी तेज कर दिया। छोटी सी गाड़ी और उस पर कुछ गिनी चुनी सी टोकरियां...नूर मुहम्मद फल वाला होकर उससे सहा न गया। इसलिए उसने एक छोटी सी दुकान कर ली। दुकान पर बनी सीढ़ियों पर रखी हुई टोकरियों पर रखे हुए रंग बिरंगे हरीरे...उन पर खूबसूरत मीठे फल सजे संवरे...कितने अच्छे लगा करते थे— और नुक्कड़ से ही सकी दुकान लोगों की नज़रों को खींचा करती थी। उसकी दुकान ही त सारे बाज़ार की रौनक थी, आसाइश थी और अब भी आसाइश होती अार कबायली हमला-आवर न आए होते। वह लुटेरे क्या आ गए कि उसके बरसों के पेशगी ठेके मिट्टी में मिल गए। जो कुछ बचा खुचा था वह अब तक पेट में झोंकता आया था और लाल लाल, पीले पीले फल उसकी आंखों के सामने सड़ते रहे और अब अगर जंग छिड़ गई तो...

उसको अज़ीज़ के फिक्रमंद चेहरे से चिढ़ सी हो गई, वह बोल उठा,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"तुम ऐसे क्यों बैठे हो ? अरे तुम खुश हो जाओ अज़ीज़े। जानते हो जर्मन
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जंग से पहले मेरी क्या हालत थी···छाबड़ी उठाए फिरता था। पर जंग के बाद मेरी सूरत ही बदल गई—मेरी ही क्या, जंग ने हज़ारों की सूरत बदल दी। यह दूकान भी तो···"

"क्या कह रहे हो," अज़ीज़ा चौंक सा पड़ा, "तुम खुश हो रहे हो।"

"क्यों नहीं···अगर जंग छिड़ गई तो यह दुकान फिर से चमक उठेगी···पहली जंग में मैंने बहुत कमाया। अगर यह कबायली साले···" वह बात पूरी न कर सका। अज़ीज़ा उसकी तरफ ऐसे देख रहा था जैसे पहले कभी न देखा हो और वह बुरी तरह घबरा गया।

"तुम बुद्धू हो नूरे !" और नूरे ने मामूल की तरह सिर झुका लिया। अज़ीज़ा कहता गया, "यह ठीक है जर्मन जंग के सबब तुम अमीर बन गए। छाबड़ी उठाये फिरने के बजाये दुकानदार बन बैठे पर जर्मन-जंग बहुत दूर थी, हज़ारों मील दूर। इसलिए तुम जंग का ठीक अन्दाज़ा न लगा सके। सोचो तो···वहां लोगों की क्या हालत हुई होगी ?"

"मुझे क्या मालूम ? फिर भी मैंने जर्मन-जंग में काफी फायदा उठाया।" नूरा बड़ी मुश्किल से नज़र आई हुई उम्मीद की किरण को न खोना चाहता था।

"और यही तेरे लिए काफी है। क्यों ?" अज़ीज़ा गुस्से से कहने लगा, "तुम जंग का नाम सुनकर यही समझते हो कि जंग एक मामूली हादसा है। सिर्फ़ वह तुमको दुकान दिलाए फिरती है।···"

"मैंने कब कहा कि···" नूरा अज़ीज़े की तेजी को न सह कर सफाई पेश करने लगा। "तुमने न कहा हो—फिर भी तुम्हारा मतलब यही है।" अज़ीज़ा वाकई बिफर गया, "जर्मन जंग की जितनी तबाहकारियां हुईं वह तुम्हारी नजार में तो क्या···तुम्हारे ख्याल से भी दूर हैं। अपनी ही मिसाल लो। कबायलियों ने हमला किया तो तुम्हारे अपने मुल्क के कितने ही गांव, कितने ही कस्बे नज़ारे–आतिश हो गए। कितने ही बेगुनाह इंसान कुचले गए। अभी भी लाशों की घिन फ़िज़ा में महलूल[8] है। तुम जो उनकी पहुँच से बाहर थे जंग के जहरीले असरात से बच न पाये। तुम्हारा सारा कारोबार खत्म

---

८. घुली-मिली ९. आशा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हो गया। तुम्हारे ठेके गये और इस वक्त तुम्हारे घर में सात साल
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
बाद…"

नूरा बात काटते हुए बोला, "ठीक है मेरे घर में इस वक्त खाने को कुछ भी नहीं है। हर्षी भूखी है, हाजिरा भूखी है, मैं भूखा हूं…इसलिए तो मैं जंग चाहता हूं ताकि मेरा कारोबार फिर चल निकले और हम लोग भूखे न रहें।" नूरा आज जिन्दगी की सारी तल्खी, भूख की सारी कसक अज़ीज़े तक पहुँचाना चाहता था। इतने साल के चरके, इतने बरसों की मुसीबत ने उसे अब आखरी हद तक पहुँचा दिया था। पर अज़ीज़े ने उसे रोक लिया। अज़ीज़ा कह रहा था, "तुम जज़बात की रौ में डूबते जा रहे हो, नूरे। तुम ठन्डे दिमाग से सोचते क्यों नहीं ? क्या भूख ने तुम्हें इतना गिरा दिया है ? जंग ही ने तो तुम्हारी यह हालत बना दी है। अगर तुम जंग से यह तवक्को[9] रखते हो कि तुम्हारी हालत कुछ ठीक हो जायेगी तो यह तुम्हारी भूल है, हिमाकत है…न न…तुम न बोलो। तुम सिर्फ इतना सोच लो कि अगर जंग फैलते फैलते यहां तक पहुँच जायेगी तब तुम कहां जाओगे। क्या करोगे… तुम्हारी बीवी, तुम्हारी बच्ची…मासूम हर्षी…मासूम हर…"

नूरा कुछ और न सुन सका। दिमाग के फरामोश कोने से दर्द की एक लहर सी उठी और सारे बदन पर छा गई और वह बौखला सा गया। आंखों के सामने माज़ी के धुंधले नक्श उभरने लगे। उस पर हकीकत एक बड़े फोड़े की तरह बाज़या होने लगी जो बगैर दर्द के उभर आता है और सिर्फ चोट लगने पर पता देता है कि मैं उभर आया हूं और अज़ीज़े ने वाकई सख्त चोट की थी। उसे महसूस हुआ कि आईने में उसकी आंखें फैलती जा रही हैं…फैलती जा रही हैं…

वह अकेला लड़खड़ाते हुए, सफेदे के दरख्तों के दरमियान पगडंडी को घूर रहा था। पगडंडी के साथ ही टेलीफोन का टेढ़ा लोहे का खम्भा अल्मनाक दास्तान का आग़ाज़ कर रहा था। वह खामखाह सोचने लगा था कि अब आया हूं तो रुकने से क्या फायदा; जैसे वह अब वापस लौट सकता था। बस तो कब की चली गई थी इसलिए हिचकिचाते हुए वह पांव के नज़दीक पड़ी हुई गठड़ी को कंधे का सहारा देकर ऊंची-नीची पगडंडियों पर हो लिया। पगडंडी के इर्द-गिर्द खाली खेत खामोश थे और ऊंची

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ज़मीन—जो खलिहान का काम देती थी—पर जले धान के ढेर स्याह धब्बे के से दिखाई दे रहे थे और उनके परे दरख़्तों के झुंड की आड़ में गांव था और उसके बाद मेवे का बाग़…जिसे देखने के लिए वह हाजिरा के मना करने के बावजूद यहां आया था।

शहर छोड़ते ही उसकी निगाहें कबायलियों की स्याहकारियों से टकरा गई थीं। जली फसल से भरे खलिहान। अधजले मकान…मलबे के ढेरों के साथ-साथ इंसानी हड्डियों के ढेर…पेड़ों की टूटी शाखें बिखरी हुई और कुत्तों के झुंड के झुंड जो इंसानी गोश्त खा-खा कर मोटे हो गए थे। सड़क के दोनों तरफ गढ़े खुदे हुए…ज़मीन की हरी छाती पर मटियाले नासूर। उसे महसूस हुआ था इन गढ़ों से—जिनके किनारों पर खुदी मिट्टी के ढेर अभी नम थे, कबायलियों के जहन्नुमी चेहरे देखते ही देखते नमूदार होंगे। महसूस होते ही उसका दम घुटा सा गया। ठंड के बावजूद चेहरे पर नमी फूट पड़ी थी। वह खलिहान पीछे छोड़ चुका था और अब वह दरख़्तों के झुंड में से गुज़र रहा था। दरख़्तों के घने तनों की दरज़ में से उसकी निगाहें कभी-कभी किसी अधजले मकान में फंस सी जाती थीं और दूसरे ही लम्हे खौफ से वह गठरी को ज़ोर से कंधे पर दबाने लगता। आज उसने बहुत कुछ देखा था…बहुत कुछ सहा था।

गठरी कुछ भारी न थी फिर भी कंधे पर बोझ बढ़ता महसूस हो रहा था। दरख़्तों के झुंड पार करके वह एक ही दफा गांव की ओर देख सका। देखते ही उसे कपकपी सी आने लगी। गांव की जगह मिट्टी और पत्थर के ढेर खड़े थे। मिट्टी और पत्थर की दरारों में कहीं-कहीं हलका-हलका धुआं निकल के सांप की तरह बल खाता हुआ फ़िज़ा में मुंतशर हो रहा था। अधजले शहतीर काले नागों की तरह बिखरे पड़े थे। टूटी दीवारें अपनी बरबादी पर बैन करती हुई नज़र आ रही थीं। वह नज़दीक पहुंचा तो दो ार कुत्ते मलबे के ढेरों पर उभर कर भूंकने लगे। जब कभी वह यहां या करता था, यह कुत्ते भूंक-भूंक कर गांव वालों को उसके आने का पता थे। और कुछ बच्चे…दो चार आदमी…मकानों से बाहर निकल कर [3]वाले मेहमान को दूर से ही पहचानने की कोशिश करते थे। खिड़की

बबराहट 11. तरंगित

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में से [illegible] हो जाता था । पर आज मकान न थे, मकानों में खिड़कियां न थीं । इसलिए यहां कोई नहीं आया । चुनांचे वह अपनी निगाहें घबराकर फिर पगडंडी पर झुकाने के लिए मजबूर हो गया ।

वह मलबे और पत्थरों के एक बड़े ढेर के करीब पहुंच गया था कि दाहिने हाथ पर पत्थर हिलने की आवाज़ सुनाई दी और उसकी चीख निकलते निकलते रह गई । घबरा कर उसने नज़र फेर ली । उसे वहशत[10] सी होने लगी । सामने कोई फटे चीथड़ों में मबलूस लंगड़ाता हुआ आ रहा था । आदमी सामने आया तो नूरे को चेहरा कुछ मानूस सा महसूस हुआ । यह पतली नाक, पतले पतले होंट, पिचके गाल, गले में काला तावीज़ और तावीज़ पर सफेद धागे से काढ़ा हुआ नन्हा सा तारा— उसके चेहरे पर खुशी का दरिया मौजज़न हुआ ।

"गफ़्फ़ार जू, तुम ?" वह चीख पड़ा । दफ़अतन गफ़्फ़ार जू की लड़खड़ाहट ने उसे फिर हकीकत के खौफनाक गढ़े में घसीट लिया । होंट फैलते फैलते रुक गए और हाथ तेजी से गफ़्फ़ार जू की इमदाद को बढ़ गए ।

गफ़्फ़ार जू— अब्दुल गफ़्फ़ार— जिसे गांव वाले बहुत मानते थे । गांव का सबसे बड़ा हंसमुख आदमी, समझदार, सूफी, साफ-सुथरा गफ़्फ़ार जू···एक फटे तकिये से भी बुरी हालत में । नूरे को रोना सा आ गया । गफ़्फ़ार जू हांपने लगा । वह दोनों वहीं मलबे के ढेर पर बैठ गये और कुत्ते इर्द-गिर्द घेरा डाले उन्हें तेज नज़रों से तकने लगे ।

"टांग को क्या हुआ ?" खामोशी से घबरा कर नूरा बोल उठा । "कुछ नहीं, गोली लग गई है ।" और वह (नूरा) परेशान हो उठा । गफ़्फ़ार जू ऐसे कह रहा था जैसे कह रहा हो कि सुई चुभ गई है । और सुई तो रोज़ चुभ जाती है । "तुम हैरान हो रहे हो, क्यों ? यह तो अब बहुत पुरानी बात है । हम गोलियों से अच्छी तरह मानूस हो गए हैं···" गफ़्फ़ार जू गठरी पर निगाहें जमाये रुक रुक कर कह रहा था, "इन आंख ने हज़ारों को गोलियां खाते देखा है और तड़प तड़प कर मरते भी । कानों ने हज़ारों धमाके सुने जिनमें मासूम बच्चों की चीख़-ओ-पुकार दब कर रह गई । गोलियां यहां हर तरफ बिखरी पड़ी थीं । पां

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

रौंदी जाती थीं। सीसे के टुकड़े, खूबसूरत गोल गोल टुकड़े, पर बहुत
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ज़हरीले···मौत से लदे— फंदे···और वह लोग भी बहुत ज़हरीले थे। खलिहानों को आग लगाने जा रहे थे। हमने उन्हें रोकना चाहा तो फिर धड़ाधड़ मौत बरसाने लगे। अब कोई उनसे इतना पूछे कि गोलियां चलाने की क्या जरूरत थी। जब बहू-बेटियों की बे-हुरमती की···बच्चों को रौंदा···मसला···घर बार जला डाले, कुरान-पाक की बेइज्ज़ती की···यह गोलियां कम थीं क्या जो और गोलियां चलाने की जरूरत पड़ी।

गफ़्फ़ार जू की आवाज़ में मौत हावी थी। वह रोकना चाहता था— गफ़्फ़ार जू को। कहना चाहता था कि यह बिरहना खेत, कुछ हफ्ते पहले जो शादाब थे, यह मलबे के ढेर जिनमें नकरई कहकहे गूंजा करते थे, यह जले हुए खलिहान— किसान के ख्वाबों की ताबीर— मज़दूरों की मेहनत का ईनाम और यह गांव जो खुशी-ग़म···महब्बत का गहवारा था, जिसमें ज़िन्दगी मचलती थी— काफी है हिरासां[11] करने के लिए, इंसान को पागल बनाने के लिए···क्या कुछ न कहना चाहता था वह। पर वह कुछ न कह सका। उसने तो सिर्फ देखा था लेकिन गफ़्फ़ार जू ने सहा था, बर्दाशत किया था। इसलिए कुछ न सूझने पर वह सामने पड़ी गठरी को मरोड़ने लगा। गफ़्फ़ार जू ने दफ़्अतन पूछा, "इस में क्या है ?" "बस यही, कुछ कड़े और···"

"कड़े···कड़े किसके लिए···," गफ़्फ़ार जू हंस सा दिया।

"आयशा के लिए···और कुछ नमक भी है···नमक का काल है आजकल। मैंने सोचा, गांव में···"

गफ़्फ़ार जू के माथे की शिकनें गहरी हो गईं। आंखों में वही पुरानी सूफियाना चमक ऊद[12] कर आई। गठरी पर हाथ फेरते हुए वह बड़बड़ाने लगा, "कड़े और नमक···कड़े बज़ात-ए-खुद अरमान हैं···कहकहे हैं, खूबसूरती हैं। और नमक···नमक भूल है, जलन है, जद्दोजहद है। जब दोनों इकट्ठे हो जाते हैं तो ज़िन्दगी है। ···तुम्हारे माली की बेटी आयशा···बेचारी आयशा को अब चीज़ों की जरूरत नहीं। पर गांव में और भी तो हैं···और भी···"

11. भयभीत। 12. उभरना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"क्यों आयशा कहां है, क्या हुआ उसे ?" उसका दिल डूबने लगा। Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कितनी दफा उभरा और डूब गया, उसका दिल। वह झुंझला उठा। लेकिन दूसरे ही लम्हे घबराहट गफ़्फ़ार जू की खुरदरी आवाज़ के ज़ेर-ओ-बम[14] पर डूबने लगी। गफ़्फ़ार जू की आवाज़ में छिपी बेकसी···बेबसी और गुस्से की लहरों के दरमियान उसने आयशा के बाप—अपने माली को गोली खाते महसूस किया—आयशा को गोली खाते महसूस किया। आयशा के नन्हे शफ्फाफ़ सीने पर खून उभरता जा रहा था···खून का धब्बा फैलता जा रहा था—बुरी तरह फैलता जा रहा था···

और लाल लाल गर्म गर्म खून आईने पर फैलता जा रहा था, रिस रिस के फैलता जा रहा था। नूरे को अपनी आंखों के बीच कुछ उबलता सा महसूस हुआ जैसे किसी ने उसकी आंखें गर्म लोहे से दाग दी हों। दर्द की शिद्दत ने उसे आंखें मींच लेने पर मजबूर किया— पर वह ज़ेहन से जंग की तबाहकारियों को भुला न सका। आयशा···ज़ख्मी, सिसकती मौत की तारीक गहराइयों में डूबती आयशा और उसकी अपनी नन्ही हर्षी— बुढ़ापे का सहारा— हर्षी और आयशा···फर्क तो कुछ भी नहीं···ओह···कुछ भी नहीं···!

नूरे ने डरते डरते आंखें खोलीं तो उसकी निगाहें सामने पड़ी हुई टोकरी पर जम सी गईं। टोकरी में गले-सड़े फल— नाशपाती, सेब, केले, आड़ू—बेतरतीब पड़े थे और उसे महसूस हुआ कि जंग सब फलों को गला-सड़ा देती है। वाकई सब फलों को गला-सड़ा देती है; चाहे वह केला हो या आलूचा···सेब हो या नाशपाती···कश्मीर हो या कोरिया···सब गल-सड़ जाते हैं···सब गल सड़ जाते हैं !

---

14. उतार-चढ़ाव।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और रात मर गई

अख्तर महीउद्दीन

●

जिस तरह चिराग़ की आखरी हिचकी ज्यादा पुरनूर होती है बिलकुल उसी तरह उस दम तोड़ती हुई रात का अंधेरा ज्यादा गहरा और घिनौना हो गया था और यह गहरी और घिनौनी तारीकी बाग पर इस तरह मुसल्लत[1] थी जिस तरह कफ़न ओढ़ी हुई लाश पर ताबूत के अंधेरे मुसल्लत होते हैं। पौधों की डालियां मुर्दा जिस्मों की तरह अकड़ी हुई थीं। कलियों का स्याह चेहरा मनहूस और मज़मूम नज़र आता था और किसी उल्लू की परवाज़ से हवा में जो इर्तिआश[3] पैदा होता था वह बहुत सी कलियों और फूलों को डालियों से तोड़ने और मर जाने पर मजबूर करता था, और अगर कहीं कोई उल्लू किसी चिड़िया, बुलबुल या कोयल के घोंसले में से एक दो बच्चे उठाने के लिए दरख्त की टहनी पर बैठने की कोशिश करता तो उसके बोझ के नीचे टहनी चटक कर टूट जाती और घोंसले के साथ ज़मीन पर आ रहती। तब शोर उठता। बच्चों की चीं चीं से कान पड़ी आवाज सुनाई न देती। और उनके गुस्ताख मां-बाप जो बज़ाहिर बड़े नहीफ़,[4] कमज़ोर और लाचार नज़र आते थे, ग़ुल मचाते और बाग में कुहराम मचाते और बेचारे उल्लू को मजबूर करते कि वह अपनी नीयत बदले और एक दो बच्चों की

1. आच्छादित। 2. हलचल। 3. कंपकंपी। 4. क्षीण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बजाये सारे खानदान को सज़ा दे। इतना ही नहीं, बहुत से उल्लू परिन्दों के इस सम्म:खराश[5] शोर को सुनकर जाये-वक़ूह[6] पर जमा हो जाते और तब परिन्दों पर ताबड़-तोड़ हमले करते और ज्यादा से ज्यादा परिन्दों और उनके बच्चों को मारने के सिले में अपनी हकूमत से बहादुरी के तमगे पाते जो उम्र भर उनके सीनों पर लटकते रहते। उल्लुओं की हकूमत ऐसे ही जांबाज़ों के दम-कदम से आबाद थी और हकूमत इन जांबाज़ों और वफादारों की खुशनूदी[7] के लिए गुस्ताख चिड़ियों, बुलबुलों और कोयलों और उनके बद्तमीज बच्चों पर हमले करने और उनको खत्म करने की इजाजत देती। और यह जांबाज़ हमले करते, गुस्ताखों को सज़ा देते और उल्लुओं की हकूमत इस खौफ-ओ-हरास और दहशतनाकी के तुफ़ैल[8] ज़िन्दा रहती।

हां तो उल्लुओं की यह रात आखरी हिचकी ले रही थी। तारीकी शदीद तौर पर गहरी हो रही थी और उल्लुओं की हकूमत पूरे शबाब पर थी। चमगादड़ें अपने पर फैलाये हुए जासूसों की तरह बाग के ऊपर मंडला रही थीं और उन्हें जहां कहीं भी बाग के किसी भी कोने में कोई सहमा सिकुड़ा हुआ परिन्दा अपनी चोंच परों में दबाए नज़र आता तो वह उसके करीब आकर इस कदर जोर से चीख मारते कि बेचारा परिन्दा हड़बड़ा कर चीं चीं करने लगता। उल्लू अपने कारिन्दों के कारनामों पर मुस्कराते और उनकी बड़ी बड़ी आंखें अंधेरे का जिगर चीरती हुई परिन्दे की बेबसी पर खुशी से नाचती हुई नज़र आतीं। और अगर कभी कोई परिन्दा चमगादड़ों की योरश[9] के बावजूद अपनी गर्दन को अकड़ा कर रखता और चूं चूं करने से इंकार करता तब चमगादड़ें अपने परों को बचाती हुईं शोर मचाती हुईं उल्लुओं के पास जातीं और इतिलाअ देतीं, "दुश्मन। बाग के कोने में दुश्मन।" (याद रहे कि उल्लुओं की अंधेरी लुगत[10] में दुश्मन के मानी बड़े वसीह हैं। नसीम सहरी जो सुबह की आमद का पता देती है, सपेदा-ए-सहर, सुबह की आमद पर शोर मचा कर जागने वाले बंदे, कलियां और उनका मुंह धुलाने वाली शबनम, सूरज जो उल्लुओं को अंधा करता है मगर बाग के परिन्दों की बेनूर आंखों को रोशनी वापिस लाता है।) और फिर दुश्मन पर हमला किया जाता। हकूमत के लिए टैक्स के तौर पर उनकी जान ली जाती। परिन्दे

5. कानों को चीरता हुआ। 6. घटना स्थल। 7. प्रोत्साहनार्थ। 8. कारण। 9. धावा। 10. शब्दकोश।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की रूह अपने खानदान समेत अंधेरे बाग में भटकने के लिए छोड़ दी जाती जो उड़ने से पहले किसी कांटे से उलझ कर रह जाती है। कितनी ही बुलबुलों की रूहें इस अंधेरी रात में फलों से मिलने कि बजाये कांटों से उलझ गई और उलझती रहीं।

रात के इस आखरी हिस्से में बाग में अमन-ओ-अमान कायम था। जान पड़ता था कि परिन्दे अब दम तोड़ चुके हैं। अब बाग में ज़िन्दगी का तसलसुल क़ायम है तो महज़ इन उल्लुओं और चमगादड़ों की वजह से जो बाग को अपनी मल्कीयत और अंधेरे को अब्दी और अज़ली जान कर मज़े से उड़ते फिरते जाते थे···रात कभी खत्म भी होती है? नहीं यह ख्याल उल्लुओं और चमगादड़ों के लिए परेशानकुन तो था लेकिन इस रात से पहले भी कई रातें आई हैं और उन रातों की सुबहें भी हुईं। लेकिन आज की रात···आज की रात अमर है, लाफ़ानी, अब्दी इसमें तग़य्युर[11] नहीं। इन्कलाब नहीं आ सकता। अंधेरी रात ज़िन्दाबाद! गहरे अंधेरे पाइंदाबाद! लेकिन···लेकिन क्या? नहीं···छी छी छी···बेचारे उल्लू अजीब उधेड़बुन में थे। बज़ाहिर खुश लेकिन अन्दर से कोई आवाज़, कोई दहशत ललकार कर कहती जा री थी···?

और अगर यह रात खत्म होती तो···?

खट! एक टहनी टूटी, एक घोंसला गिरा, शोर उठा···चीं चीं चीं···फिर हंगामा हुआ···होऊ होऊ हो···महशर[12] बपा हुआ, फिर थोड़ी देर के लिए उड़ान, फिर खामोशी···गहरी खामोशी और सन्नाटा। एक टहनी पर बैठी हुई बुलबुल ने अपने खौफज़दा दिल की धड़कनों को रोकने की कोशिश की···उफ! यह खौफ-ओ-ह्रास, यह दहशत···कहीं उसके मुंह से चीख न निकले। अगर चीख निकली तो क़यामत···उसने अपनी चोंच को ज़ोर से बन्द किया और अपने जिगर के टुकड़ों का जोर से अपने सीने के साथ भींच लिया। बहुत ज़ोर से हिश···परवान चढ़ो मेरी मासूम उम्मीदो! मैं तुम्हारे सदके जाऊं, मेरी नन्हीं तम्मनाओ! हिश···हिश···और किसी बूढ़े उल्लू की हूक से सारा माहौल कांप उठा। इतने में सूरे-इस्राफ़ील[13] बजा। नन्हे बुलबुलों के दिल सिमट गए। उल्लू फिर हूकने लगे—रात

11. परिवर्तन। 12. कयामत का दिन। 13. एक फ़िरिश्ते द्वारा फूंका गया सुर जो क़यामत के आरंभ का संकेत देता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
अमर है ! बुलबुलों ने बच्चों को सीने के साथ भींचकर सोचा···और उनकी बेनूर आंखों में मोती जैसे सफ़ेद सफ़ेद आंसू आ गए ।

ठीक उसी वक्त दूर मश्रिक़ से हौले हौले और चुपके चुपके नसीम-ए-सहर आई और बाग में दाखिल हुई। फ़िज़ा में खुनुकी सी तारी हुई। उल्लुओं और चमगादड़ों ने सर्दी महसूस की और बुलबुल की आंखों से किसी झोंके के खुशगवार लमस ने आंसू पोंछे। तब हल्के सुरों में कोई साज़ बजने लगा। दिलफरेब और जां-फ़िज़ा···साज़ बजता गया। खुनुकी बढ़ती गई लेकिन अंधेरा अब भी चारों ओर मुसल्लत था तब बाग के किसी कोने में बुलबुल ने सुना कोई गा रहा था···हल्की और सुरीली आवाज़ में···आवाज़ के साज़ पर टहनी हिलती थी और बुलबुल···दहशतज़दा कि कहीं उल्लुओं को उसकी मौजूदगी का पता न चले···टहनी पर झूलती थी।

मैं आई हवा हूँ···नसीम-ए-सहर हूँ

मैं पैगम्बर हूँ, सुबह की।

उठो बुलबुलो, कोयलो हुदहुदो···अब उठो कि

सहर आ रही है।

यह जिन्दगी का तराना था। रोशनी का गीत था और हयात की पुकार थी···लेकिन ?···लेकिन यह अन्धेरा···यह स्याही, यह दहशत···नहीं, नहीं यह सुबह की हवा नहीं। यह धोखा है, झूठ है, सराब है और बुलबुल को कल का दिन याद आया जब वह कितने ही फूलों पर बैठी गा चुकी थी। जब उसके बच्चे चूं-चूं करते अण्डों को तोड़कर बाहर निकल आए और वह सारा दिन उनके लिए दाना-दुनका लाती रही। फिर शाम हुई। आसमानों पर सुर्ख शफ़क़[14] फूलों को शरमाती हुई छा गई। देखते ही देखते सुर्ख, सुरमई और स्याह होती चली गई और रोशनी और अंधेरे की बाकायदा जंग में रोशनी चिन्गारी बन कर सितारों की शररबार[15] आंखों में जा दौड़ी और बुलबुल सारी रात इन्हीं सितारों को देख कर जीती रही कि नूर ज़िन्दा है। रोशनी खत्म नहीं होती। अगर यह रोशनी आसमानों से उतर कर फिर अंधेरे पर हमला करे तो सुबह होगी···सुबह···सुबह···!

---

14. ऊषा। 15. अग्निवर्षक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हवा का एक और झोंका बुलबुल के परों को शरारतन छेड़ता हुआ चला और साज़ बज उठा...

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं मश्रिक़ से आई हुई नसीम-ए-सहर हूँ
मैं दामन में भर भर के लाई हूँ शबनम
चटक जाओ कलियो, गुलो मुस्कराओ
खिलो सुम्बलो
कि सहर आ रही है...

बुलबुल हड़बड़ा उठी...नहीं, यह टहनी झूलती है और वह अपनी बुज़दिली पर मुस्कराई। टहनी में एक नर्म और नाज़ुक सा लोच पैदा हुआ और पत्ते सरसराने लगे। जैसे कली को सरगोशी में चिढ़ा रहे हों। सुबह की दुल्हिन और कली के चेहरे पर शर्म के मारे पसीने आने लगे और वह सुर्ख होने लगी। वह आंखें झपकाते मुस्करा रहे थे और उम्मीद की एक किरण आंखों के रास्ते से बुलबुल के दिल-ओ-दिमाग़ और रूह में सरायत[16] कर गई। फ़िज़ा में फिर इतिआश[17] पैदा हुआ और साज़ बज उठे।...

उधर दूर मश्रिक़ की ऊंची चट्टानों पर
रात मर रही है
वह देखो सितारे चले जा रहे हैं
कि मुसर्रत से तकते रहे रात भर
इस अंधेरे को !

उम्मीद जो बुलबुल की रूह में सरायत कर चुकी है हिम्मत पा कर बगावत बन गई। सब्र का पैमाना छलक उठा और बुलबुल ने लम्बी सांस खींच कर अंधेरे के खिलाफ ऊंचे सुरों में चहकना चाहा...लेकिन...हिश... सुनो तो, कोयल कूक रही है...हां, कोयल !

कू...कू....कू
ऐ दोस्त
उठ जाग यह
हयात की पुकार है...

16. एक चीज़ का दूसरी में प्रवेश। 17. कंपकंपी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

खून तेज़ी से दौरा करने लगा। बुलबुल ने पर संवारे और किसी
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
नामालूम जोश की वजह से उसका दिल तेज़ी से धक धक करने लगा। वह चिल्लाना चाहती थी....सुबह को पुकार पुकार कर बुलाना चाहती थी....और ....और वह भी गाने लगी, नसीम-ए-सहर के साथ। उसकी आवाज़ में अपनी आवाज़ मिला कर—

यह ज़ालिम अंधेरा कि जिसमें
सज़ा थी चहकना
मना था फुदकना
मगर अब
वह देखो
कि रात मर रही है
फतह आखर नूर की ही हो रही है...सहर आ रही है !

मश्रिक़ की ऊंची चट्टानों पर नूर की सफेदी, अंधेरे की रूह कब्ज कर रही थी। सितारे आकाश पर इस तरह गायब होते जा रहे थे जैसे वह भी पिघल पिघल कर अपनी रोशनी सफेद सहर पर न्योछावर कर रहे हों। बाग चहक उठा। रात की खामोशी में उल्लू को यकीन हुआ था कि परिन्दे सिरे से ही खत्म हो गए हैं लेकिन अब सारा बाग गा रहा था। हज़ारों और लाखों परिन्दे एक साथ पुकार रहे थे—

फतह आखर नूर की ही हो रही है
सहर आ रही है !

रात एड़ियां रगड़ रगड़ कर दम तोड़ रही थी, उल्लू हाथ मल रहे थे....हू हू हू....हू हू हू....सारे बाग में एक नई क़यामत बपा हो गई। बगावत.... बगावत....हमारे खिलाफ इन कमज़ोर मुट्ठी भर परिन्दों की बगावत....नहीं यह सब कुछ बर्दाश्त नहीं किया जा सकता था। उल्लू जंगजू कौम है। उल्लू बहादुर हैं....इनके सीनों पर बहादुरी के तमगे हैं। बगावत दबाई जायेगी। और सारे उल्लू एक बहुत बड़े चिनार पर जमा हो गए। इनके पर इस तरह बिखरे और उलझे हुए थे जिस तरह एक शिकस्तखुर्दा[18] जरनैल के परेशान दिमाग में उलझे और बिखरे हुए ख्यालात !

---

18. हारा हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education, Bantalab Jammu

किसी उल्लू ने तजवीज़ पेश की— "सुनो, मेरे मददगारो, अगर हकूमत अब भी करनी है तो किसी को सुबह बाग में मत दाखिल होने दो। अगर मेरी बात मान ली जाये तो यह अर्ज करूंगा कि बाग के ऊपर अपने परों का शामियाना बांध दो ताकि सूरज की एक भी किरण बाग में दाखिल न होने पाये।

नामुमकिन, नामुमकिन, नामुमकिन......हू हू हू के दरमियान बूढ़े चिनार पर शोर-ओ-गुल मच गया।

फिर कोई चिल्लाया— "सुबह हम से रुक नहीं सकती। बेहतर है कि हम खुदकुशी करलें," यह कह कर वह खुद ही दहाड़ें मार मार कर रोने लगा। फिर हंगामा बरपा हुआ। यह बुज़दिली है।

एक छोटा सा उल्लू बोलने लगा तो सारे के सारे इन्हिमाक[19] से सुनने लगे। वह बोला, "माई बाप, जब सुबह हुई तो हम आंखें बन्द करेंगे। और सुबह को देखेंगे ही नहीं। तब मज़ा है। सुबह नहीं होगी।" और वह परों से तालियां बजाने लगा। किसी उल्लू की गरजदार आवाज़ सुनाई दी, "ऐ उल्लू के पट्ठे, तू हंसता है।" और उल्लू के पट्ठे ने रोना शुरू किया। फिर कोई संजीदा-मिजाज़ उल्लू बोल उठा, "मेरे कारिन्दो, तुम्हें इस बात का इल्म नहीं होगा कि सुबह के आने के ज़िम्मेदार सिर्फ बाग के परिन्दे होते हैं। अगर बाग में परिन्दे न चहचहायें— न कली खिलेगी, न शबनम होगी, न ही कभी सुबह होगी। इसलिए मेरी तजवीज़ है कि हम सब उल्लू उठें और उठकर उन सब परिन्दों पर यलग़ार[20] करें। इस मनहूस सूरज के चढ़ने से पेशतर ही हम सारे बाग़ को उजाड़ देंगे और परिन्दों को खत्म कर देंगे।

वह इस तरह बोल रहा था जैसे वह पहले ही कोई बहुत बड़ी साज़िश करके आया था और इस साज़िश के तहत यह सब कुछ हो रहा था। यह सुन कर सब उल्लू खामोश हो गए लेकिन एक बूढ़ा उल्लू जो सुबह के आने से पहले ही अंधा हो गया था बोला, "मुझ गुनहगार की एक बात सुनो मेरे बच्चो—यह जो तुम्हें मुट्ठी भर पर कमज़ोर और बेजान दिखाई देते हैं, कमज़ोर नहीं। इनके पंजों में अब अक़ाबी कुव्वत और उन के परों में बर्की

---

19. तन्मयता। 20. आक्रमण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुर्अत[21] [illegible] से यह मर नहीं सकते—मेरी बात सुनो मेरे बच्चो…"

फिर एक शोर पैदा हुआ—"यह गद्दार है। कौम का दुश्मन है। मारो, फाड़ो…" और उल्लुओं की आंखों में फिर रात की तरह खून उतर आया। वह फिर ग़ज़बनाक हो गए और बूढ़े चिनार की शाखें उनके बोझ तले चीखने लगीं।

रात तकरीबन मर चुकी थी और मश्रिक़ की सफेदी आगे बढ़ कर सुर्ख हो रही थी—सुर्ख, बुलबुल के खून की तरह, कोयल के दिल की तरह सुर्ख। बाग के परिन्दे मश्रिक़ की इस सुर्खी को देख देख कर ज़ोर से सुरीली और मधुर आवाज़ में गा रहे थे—

फतह आखर नूर की हो हो रही है !

यकलख्त बूढ़े चिनार की खुश्क टहनियों में हैजान[22] पैदा हुआ। सब उल्लू फ़िज़ा में मंडराने लगे और हू हू हू की करीह[23] आवाज़ से कायनात थर्रा उठी। मारो, फाड़ो…और फतह नूर की हो रही है…की मिली जुली भारी और सुरीली आवाज़ें चारों सिम्त सुनाई देने लगीं। बाग में नटरंजन का नाच होने लगा और भागम-दौड़ और शोर-शराबा हर तरफ पैदा हुआ… उसी वक्त मश्रिक़ से सूरज ने बाग के चारों तरफ नूर के तीर फेंके जो सनसनाते हुए, फ़िज़ा को चीरते हुए तमाम उल्लुओं की आंखों में पैवस्त हो गए।… और रात मर गई…!

---

21. तेज़ी। 22. खलबली। 23. भद्दी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

औरत और मर्द

उमेश कौल

●

दो साल पहले खदीजा के बाप की बूढ़ी उमंगें एक मजबूरी से टकराई थीं और एक जरूरत ने उसके थके मांदे दिनों को खटखटाया था। खदीजा का व्याह—और बाप की नज़रों के सामने एक डोली रेंग गई थी और कानों में भांडों की आवाजों का गुमां हुआ था। उसे महसूस हुआ था जैसे बस्ती की औरतें कंधे से कंधा लगाए कुछ गा रही थीं और कोई अधेड़ औरत छींट का एक नया फ़िरन पहने एक कांगड़ी लिए भाग-दौड़ में मसरूफ है और कांगड़ी में इसबंद जल रहा है और एक जवान, साफ-सुथरी पगड़ी बांधे चारखाने की एक नई सूती चादर ओढ़े घोड़े पर सवार हो के आ रहा है। एक पटाखा छूटता है— "खदीजा तेरा व्याह होगा"— बाप ने यकायक कहा था। और खदीजा एक बार चौंक गई थी। थोड़ी देर के लिए उसकी सांसें रुक गई थीं और धड़कनें खल्त-मल्त सी हुईं। जवानी कुलबुलाई मगर जल्द ही सो पड़ी…और फिर कुछ न हुआ।

अपनी ढीली खुश्क जुल्फों को होंटों में दाबते दाबते खदीजा ने कोई खाका नहीं खींचा था और न ही चोटियां बनाते बनाते किसी सोच में पड़ कर रुक गई थी। अपने सीने के उभार के एहसास ने उसे किसी लम्हे भी न शरमाया था। उसकी चितवन में कोई थकावट न थी और न उसकी नज़रें बोझिल हुई थीं—उसने कुछ भी नहीं सोचा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और एक शाम जब बादलों के किनारे लाल हुए थे और खेतों के आर-पार धुआं सा छा रहा था, खदीजा ब्याह दी गई—सिकन्दर के साथ। सिकन्दर—एक ऐसा कुली जो सड़क के किनारे ज़िन्दगी काटता है। कहीं पर पुख्ता सड़क से कोई कंकर उखड़े तो उसे वापस दबाता है। उसके ऊपर थोड़ी सी मिट्टी, थोड़ी सी रेत डाल कर उसे हमवार करता है और भागती हुई लारियों के पीछे नज़रें दौड़ाता है। लारियां, जिनके नीचे चार पहिये निहायत तेज़ी के साथ घूमते हैं और जिन की छतों पर चाय की बोरियां होती हैं, मेवों से भरी पेटियां होती हैं और मछलियों से भरे हुए बड़े बड़े टोकरे हुआ करते हैं, और कभी कोई मुर्गा भी हुआ करता है।

सिकन्दर का बाप भी कुली था और बचपन से ही बाप उसे अपने साथ ले जाकर पास में बिठाया करता था जिस तरह चरवाहे अपनी भेड़ों को पास बिठाते हैं या खांचे वाले अपने खांचे को सामने रखते हैं। लेकिन सिकन्दर को तब उस काम से कोई दिलचस्पी न थी और वह कई बार बाप को चकमा देकर भाग भी आया था। मगर बाप से बच कर कहां जाता। ऐसी हालत में बाप के मजबूत हाथ सिकन्दर की गर्दन पर पड़ते और सिकन्दर को उसके साथ जाना पड़ता। बाप आगे आगे और बेटा पीछे पीछे। बेटा पीछे पीछे और बाप आगे आगे। चार कदम लम्बा एक महदूद पिंजरा जिसमें दुनियां का बड़ा जानवर हाथ पांव मार कर रह जाता है।

आखर बाप की तमन्ना उसकी मौत के बाद ही रंग लाई और साहब ने मेहरबानी करके उसकी पुरानी और फीके लाल रंग की पगड़ी सिकन्दर के सर पर रख ली और अब सिकन्दर बा-ज़ाबिता[1] घर बसाने जा रहा था।

सड़क से दो मील पगडंडी चलकर चन्दरहामा में उसका घर था। एक झोंपड़ा जिस के ऊपर अल्लाह की रहमत एक फूस-छत की सूरत में साया-फिगन थी और नीचे इंसान का मोजज़ा एक फ़र्श। मिट्टी की चार दीवारें थीं जिनमें कोई कंकर न था। इसी वजह से इन्हें कभी हमवार करने की नौबत न आई थी। ...और उस शाम एक मद्धम लालटेन के सहारे दुल्हिन

---

1. नियमपूर्वक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

को लाकर इस झोंपड़े में बिठाया गया था। जैसे कोई तालिबे-इल्म तिकोन में दायरा बिठाता है, महज़ बिठाने की गर्ज़ से।...

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर में दो हांडियां थीं, एक चट्टाई थी, मिट्टी का एक दिया और बग़ैर ढक्कन के लकड़ी का एक बदसूरत संदूक़चा और फिर बिखरे हुए चन्द चीथड़े। ...और बस यही थी उस की उम्र भर की पूंजी जो उसने अपने आप को एक शाहराह की भेंट चढ़ा कर हासिल की थी।

सेब कहीं से आते हैं और कहीं जाते हैं। कभी कोई लारी रुकने नहीं पाती। कभी कोई मुर्गा फलांग कर हांडी में नहीं गिर जाता। कभी कोई मछली हिस्से में नहीं आती। ज़िन्दगी दो बड़ी-बड़ी मंडियों के बीच एक नामालूम से मुकाम पर लड़खड़ाती है।

खदीजा इन सब के सहारे दिन जोड़ने वाली थी कि उसे सिकन्दर की ठोस महब्बत मिली और फिरन को छेदते हुए उसके शानों पर मेखों के निशान पड़े। उसका खाविन्द उसे जूतों से पीटता गया। दोशीज़गी और गृहस्थी के संगम पर चन्द मेखें गाड़ दी गई थीं ताकि तिकोन से दायरा उखड़ने न पाये, तिकोन और दायरा...मर्द और औरत!

उस रोज़ सिकन्दर सवेरे ही आया। थका हुआ था मगर चेहरे पर बशाशत थी। हड्डियों में दर्द था मगर हरकत में फुर्ती थी। फटा हुआ कोट था मगर जेब में रुपये थे। उसको तनख्वाह मिली थी—एकदम बारह रुपये!

घुटनों पर पगड़ी रखते रखते वह खदीजा से मुखातिब हुआ, "खदीजी, खुदा ने हमारी सुन ली।"

"क्या?" खदीजा की ज़ख्मी आरज़ुएं उसकी आंखों में झांकने लगीं। और फिर सिकन्दर ने कहा, "तनख्वाह मिली, हफ्ता बाद ईद है। एक मुर्गा लेंगे।" खदीजा को ज्यादा खुशी न हुई क्योंकि उसे एक दूसरी बात याद आ गई। ज़रा वक्फ़े के बाद बोली, "मुर्गे से पहले तो सिद्दीक की रकम चुकानी है। महीना पहले धान लिए हैं, अब तक एक कौड़ी भी अदा न हुई। वह आसमान सर पर उठा लेंगे?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"क्या आसमान सर पर उठा लेंगे ?" सिकन्दर कुछ तैश में आया,
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कुछ ताव के साथ बोला। उसे तनख्वाह मिली थी और उसकी जेब में बारह रुपये थे"""ज्यादा ऊट-पटांग की तो कह देंगे कि धान उठा कर वापिस ले जाएं।"

"मगर वह तो खत्म हो चुके हैं," खदीजा ने अपने आपको भूल कर ज़रा शोखी के साथ कहा। "खत्म हो गए !" सिकन्दर को हैरत हुई। "कैसे अभी से खत्म हो गए ?" उसने सवाल किया ! "तो ज्यादा खर्च करती हो," कुछ बिफर गया। खदीजा बिगड़ कर बोली, "मैंने कौन से मायके भेजे। जो कुछ खर्च हुआ तुम्हारे देखते (सामने) हुआ।" "मेरे देखते क्या हुआ ? मैं कोई धरना मारता हूं यहां घर पर। सुबह सवेरे जाता हूं, शाम गए आता हूं, मुझे क्या मालूम तुम मेरे पीछे क्या करती हो।" इल्फाज़ कड़वे थे। खदीजा चुप न रह सकी। चिल्ला उठी, "क्या करती हूं। कोई पेशा कमाती हूं...!"

सिकन्दर और भी ज्यादा ज़ोर मे चिल्लाया, "कमाती क्यों नहीं जा कर। यहां क्या खायेगी, कलेजा अपना ?"

"और तुम क्या खाओगे ?"

"मैं कहता हूं चुप रह।"

"मुझे धमकाता है ?"

"नहीं रहेगी चुप..." कहने के साथ ही सिकन्दर ने सोटी उठाई और खदीजा के सर पर दे मारी। और फिर झोंपड़ी में एक हंगामा बरपा हुआ। यहां तक कि पड़ोसन एक दफा फिर आ पहुंची और बीच-बचाव में पड़ कर निपटारा कर लिया। खदीजा बेदम सी पड़ गई और सिकन्दर गालियां झाड़ते बाहर आ गया और अपने काम पर चला गया। पड़ोसन अपने घर चली गई। और खदीजा सिसकियां भरने लगी। फिर उसने स्यापा करना शुरू किया और तब वह उस दिन को कोसने लगी जिस दिन वह इस घर में आई थी, जिस दिन उसका ब्याह हुआ था। फिर वह अपने बाप को बुरा भला कहने लगी। उस बदमाश को जिसने यह रिश्ता ठहराया था और उस पीर को जिसने निकाह पढ़ा था। और तब थक कर बाहर धूप में चल कर बैठ गई और अंगुली से ज़मीन पर लकीरें खींचने लगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक रौंदी हुई बेजान सी टेढ़ी लकीर और गहरी बागियाना सी खड़ी लकीर। फिर दोनों को काटती हुई एक तीसरी लकीर जिसमें न यह था और न वह। और इन लकीरों में इंतकाम और बेबसी का अहवाल था। खुदकुशी और मौत के इरादे थे। उड़ जाने और भागने के फैसले थे।

धूप ढल गई और अब सूरज की किरणें झोंपड़ी की छत के किनारों को छू रही थीं। इतने में आस-पास से कुछ औरतें आकर पड़ोसन के सहन में जमा हो गईं और एक मुख्तसर सी उछल कूद के बाद दो कतारों में बटकर 'रुफ' गाने लगीं। खदीजा ने दोनों हाथों से लकीरों को मिटा डाला और मिट्टी की दीवार से लगकर 'रुफ' गाने वाली औरतों को देखने लगी। उसके शाने दुख रहे थे। बाजू पर दांतों के निशानों में वक्फ़ों के बाद दर्द उठ रहा था, जैसे कोई सुई चुभो रहा हो और खदीजा बिना देखे ही बीच बीच में बाजू सहलाती जा रही थी। अंगुलियों पर नील पड़ गए थे और दाहिने पैर पर खून की एक लकीर सी जम गई थी जिसकी उसे कोई सुध न थी। चेहरा पीला, मगर होंटों पर मुस्कराहट जो ऐसी लग रही थी मानो उसकी नहीं किसी और की है। कहीं दूर से किसी मुस्कराहट की परछाइयां उसके होंटों पर पड़ रही हैं जिसका मम्बा खदीजा में नहीं, बिल्कुल सराब की तरह, जिसका पास पहुंचने पर कोई वजूद नहीं मिलता। और उसकी आंखों में एक सतही चमक जिसके नीचे यास के दलदल थे, जैसे किसी जोहड़[2] के पानी पर आसमान की शफ्फ़ाफ़ नीलाहट तैर रही हो।

'रुफ' के झमेले में कोई छेड़ चली, एक कहकहा बुलन्द हुआ। खदीजा के चेहरे पर भी एक हंसी बिखर गई। 'रुफ' में फिर बाकायदगी आ गई और खदीजा के चेहरे की हंसी गायब हो गई। एक खिलखिलाहट फिर चली और किसी ने वहीं से आवाज़ दी— अरी, वह क्या कर रही है, उधर। —इशारा खदीजा की तरफ था— जैसे कोई साठ साल की सास है। "बचना चाहती है," एक बोली। "घसीट ला उसे," दूसरी ने कहा। और पड़ोसन दौड़ कर आई और खदीजा के दोनों बाजुओं को थामा। "ओह !" खदीजा कराह उठी, "बाजू को न छेड़ जूनी, दर्द होता है।" वह फिर धीरे से बोली, "ऐसे पिंड नहीं छूटता। 'रुफ' करना ही पड़ेगा।" शोखी के साथ इसरार हुआ। "नहीं," ख़दीजा ने फिर सिर हिलाया।

---

2 तालाब।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

“चल भी।” आखरी और पूरी कोशिश थी। खदीजा न हिली और पड़ोसन मायूस होकर चल दी और फिर ‘रुफ’ में शामिल हो गई। और ‘रुफ’ के गीत बदस्तूर शाम की फ़िज़ाओं में झूलने लगे। चांद निकल आया और किरणों ने चन्दरहामा को निखारा।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

औरतें एक एक कर के चली गईं। पड़ोसन भी चली गई। मगर खदीजा गुमसुम वहीं खड़ी रही। यहां तक कि उसकी टांगें थक गईं और उसे अपनी कमर टूटती हुई महसूस होने लगी। दीवार से हटकर वह दरवाज़े के करीब आई, मगर ठिठक गई···यहां कौन है···यह घर किस का है? आग लगे इस झोंपड़े को! मगर दूसरे ही लम्हे उसने सोचा कि यह घर उसी का है। सिकन्दर कौन होता है उसको रोकने वाला। वह अन्दर जाने लगी मगर हिम्मत न हुई या फिर दिल न चाहा या वैसे ही हठ से मजबूर हुई और तब सहन में से एक पत्थर उठा कर उसने उसका सिरहाना बना लिया।

दीवार पर से मुद्दतों का पड़ा हुआ एक फटा हुआ टाट उठा लाई, मगर उसे फैंक दिया। और फिर ऐसे ही सोने की कोशिश करने लगी··· टूटा हुआ जिस्म, रग रग में दर्द और थकी हुई आंखें···हल्के हल्के सिर दर्द के साथ साथ खदीजा की पलकें बोझिल हुईं और धीरे धीरे उसकी आंखों पर नींद का पर्दा गिर गया।

चांद चमक रहा था और खदीजा—एक औरत—रुपहली चांदनी में बैठी थी। हवा के झोंकों ने उसके बालों को पीले मुंह पर बिखेर दिया था और कंधों पर से फटे हुए फिरन को सरका दिया था। और एक मरमरीं गोल बाज़ू नंगा था। बाज़ुओं पर दांतों के चंद निशान थे।

यह औरत, यह उरियां बाज़ू, यह चांदनी और यह परेशान ज़ुल्फें—नहीं, यह पुराने पत्थर का ज़माना है। अभी भी इंसान खुले आसमान तले सोते हैं, पत्थर के सिरहाने बनाते हैं और टाट ओढ़ते हैं और दांतों से मांस काट देते हैं···ज़िन्दगी सहरा है और मुस्कराहटों पर नील पड़ गए हैं। ‘रुफ’ के गीत फासले पर हैं और दूर लारियां सड़क पर से गुज़रती हैं।

सुबह होने से पहले ही खदीजा जाग पड़ी। माहौल पर एक अजीब सी कैफ़ियत तारी थी और लतीफ़, नशीली, पुरकैफ़ खुनुकी सुरमई फ़िज़ाओं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं तैर रही थी। जैसे दिन का उजाला और रात की स्याही साथ साथ सो रहे हों और उन पर शबनम की शराब छिड़क दी गई हो। एक अजीब सा मीठा-मीठा खुमार···

ऊंघ खुलते ही खदीजा की नज़र दरवाजे पर पड़ गई। दरवाजे पर सिकन्दर अपनी फटी सी चादर अपने हाथों में लिए खड़ा था। एक बार लाशऊरी तौर पर दोनों की नज़रें मिलीं फिर खदीजा ने मुँह फेर लिया। उसका सोया हुआ दर्द जाग पड़ा और वह तड़प उठी···मेरा इसके साथ क्या ताल्लुक। ऐसे ज़िन्दगी नहीं कट सकती। तलाक़ भले से दे, मैं मर थोड़े ही जाऊंगी ? ···और घुटनों में ठोड़ी धर कर वह दूसरी तरफ मुंह फेर कर एक ठीकरी पर नज़रें जमाने लगी। सिकन्दर दबे पांव आया। खदीजा ने आहट सुनी मगर आंख न उठाई। कुछ और कसमसा कर वह बड़बड़ाने लगी, "अब चूल्हा जलाने की घड़ी आई है···जैसे वहां सब कुछ तैयार पड़ा है···मनाने चलता है···" और उसके जी में आया कि वह सिकन्दर को बड़ी से बड़ी बद्-दुआ दे।

"क्यों कमीनी ! गई थी न किसी यार के पास ?" सिकन्दर बोला।

"हां, गई थी।" खदीजा के लहजे में लापरवाही और शिद्दत थी।

सिकन्दर मज़ीद बिगड़ा, "आगे से बोलती है, बेहया ?" कहते कहते उसने मुक्का तान लिया और खदीजा के चेहरे के ख़द-ओ-ख़ाल[3] बिगड़े। मगर वह खामोश रही।

"चल, अन्दर क्यों नहीं चलती ?" सिकन्दर बोला।

"नहीं चलूंगी। बिजली गिरे तेरे इस झोंपड़े पर।"

"तुझे खड़े खड़े मौत आए। चलती क्यों नहीं ?"

खदीजा जैसे भड़क उठी। कुछ कहने ही वाली थी कि दीवार की तरफ नज़रें गईं जहां से पड़ोसन यह सब कुछ देख-सुन रही थी। खदीजा का लहजा बदला और वह उससे मुखातिब हुई, "देख रही है इसकी बेशर्मी। कल पीट पीट के लहूलुहान कर दिया, आज किस तरह बातें बना रहा है जैसे उसका कोई कसूर नहीं।" खदीजा का गला रुंध गया और वह आगे कुछ न

---

3. नख-शिख।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कह सकी। उसने अपना सिर झुका लिया। पड़ोसन सिकन्दर को ताकने लगी और उसकी आंखों से नफ़रत और हिक़ारत के मुसलसल तीर बरसते गए और सिकन्दर के कलेजे को छेदते गए। पड़ोसन की नज़रों की ताब न लाकर सिकन्दर दूसरी तरफ देखने लगा और पड़ोसन बोलने लगी, "सिकन्दर तुम्हें क्या हुआ है...तुम किस क़दर वहशी हो ? मैं कहती हूं कि तुम्हारे यह भाग ही थे वरना तुम्हारे पल्ले तो मोई मुर्गी भी न पड़ती। अपने दिल से पूछ कि तुम्हारे हाथों से यह गुलाब छिड़ गया कि नहीं..."

"क्या कहने इस गुलाब के ! बात बात पर बावली कुतिया की तरह काट खाती है। सर कुचल के न रख दूं इसका..."

झुंझला कर सिकन्दर झोंपड़ी के अन्दर चला गया। खदीजा बदस्तूर रो रही थी। पड़ोसन की तरफ देखने की उसे हिम्मत न पड़ी । इंसानी गैरत की आखरी कड़ी जो बहुत मज़बूत हुआ करती है, जो कभी नहीं टूटती, उस पर चोट पड़ जाये तो आदमी पलटता है हमला करने के लिए...

खदीजा ने चाहा कि पड़ोसन वहां से चली जाये और वह अकेली रह जाये। मगर पड़ोसन दीवार को फांद कर उसके करीब आई और हमदर्दाना लहजे में बोली, "फिर और कुछ हुआ था क्या...?"

"नहीं !" खदीजा ने सिर हिलाया ।

"रात भर बाहर ही सोती रही क्या ?"

"नहीं..." खदीजा की हिचकी बंध गई। उसने सिर हिलाया।

"कुछ खाया था ?"

"नहीं..." खदीजा ने फिर वैसे ही सिर हिलाया।

"मुझ से कहा होता," पड़ोसन ने खदीजा के गले में बाजू डालते हुए कहा, "अभी तक चाय तक भी न पी होगी...चल एक प्याली चाय पी आ।"

"नहीं नहीं..." खदीजा ने सिटपिटाते हुए जवाब दिया।

"अच्छा अपने ही घर पर तैयार कर।"

"कर लूंगी।" खदीजा के लहजे में कोई छुपा हुआ फैसला था।

सिकन्दर बाहर आ गया। एक नज़र खदीजा पर और एक नज़र पड़ोसन पर डाली। फिर अपनी जेब में हाथ डाल कर तीन पैसे निकाल लिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

और खदीजा की तरफ फेंकते हुए बोला, "ले इसकी रोटियां ले आना···"
और पैसे पत्थ[illegible] से टकरा गए । एक साज़ सा बज उठा । जिन्दगी का एक अहम साज़···तीन पैसे···औरत और मर्द के दरमियान सबसे बड़ा रिश्ता । तीन पैसे, जिनकी गैर हाज़िरी में तिकोन और दायरे के किनारे मिलने से रह जाते हैं ।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो गायब हैं, कहीं दबे हुए हैं···सड़क के कंकरों की तरह । मर्द, औरत, वफा और तीन पैसे···!

और खदीजा की आंखों में जैसे यह पैसे ठोंसे जा रहे हों । अकड़ कर कहने लगी, "नहीं हमें जरूरत तेरे पैसे···।" "यूं खाली पेट मर न जायेगी ?" "मर जाऊंगी तेरी बला से । अपने पैसे रख ले, हराम हैं मुझ पर···।" "तू ही समझा अब इस बेवकूफ को···," सिकन्दर ने पड़ोसन से कहा । और हारे हुए जुआरी की तरह एक आह भरते हुए मायूस सा अपने काम पर चला गया ।

खदीजा बड़बड़ाई, "यह हैं तेरे पैसे, मैं इन पर थूकूं भी नहीं ।"

पड़ोसन पैसे उठाते हुए कहने लगी, "क्यों ज़िद करती है, फिर पीटी जायेगी । अपने मर्द से यूं उलझा करते हैं ? ले, मैं रोटियां लाती हूं तू तब तक चाय उबाल ।" उसने खुद ही कहा और खुद ही इसे फैसला ठहराया और चली गई । खदीजा ने पीछे से पुकारा कि उसे रोटी नहीं चाहिए । और तब वह सोचने लगी कि वह इस घर में नहीं जायेगी । यहीं पड़ी रहेगी, कुछ न खायेगी लेकिन जल्दी ही वह उठ कर अन्दर चली गई ।···दोराहा ! जहां इंसान एक तरफ जाना चाहता है और उसे दूसरी तरफ जाना पड़ता है···और खदीजा अन्दर जाकर चाय की पुड़िया तलाश करने लगी ।

उस शाम सिकन्दर दौड़ता, उछलता घर में दाखिल हुआ । चेहरे पर कोई नई-नवेली रौनक थी और ज़बान पर कोई गीत जैसे दिल की गहराइयों से उमड़ रहा था । जैसे आज कोई बड़ी फतह हासिल हुई थी । अपने बाज़ू थपथपाते हुए वह खदीजा से इस तरह मुखातिब हुआ जैसे अब तक कुछ न हुआ था, "ज़रा पास तो आ ।"

"अब क्या है ?" खदीजा के अल्फ़ाज़ बदस्तूर तल्ख थे ।

"वहां से क्या चीख रही है, पास आकर देख···" कहते कहते सिकन्दर ने जेब से सब्ज़ कागज़ में लिपटी हुई कोई चीज़ निकाली । खदीजा अपने को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

न रोक सकी क्योंकि सब्ज कागज़ के गिलाफ में इस तरह आज तक कोई
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
चीज सिकन्दर की जेब से न निकली थी। वह सब कुछ भूल गई और उचक कर सिकन्दर के करीब पहुँच कर उकड़ूं बैठ गई। सिकन्दर ने अब की बार उसकी आंखों में झांका, उसके होंटों को देखा और सीने के नीचे सलवटों पर नज़र डाली। कुछ खुशी छाई और खदीजा ने अपनी तेज तेज सांसों और धड़कनों को सुना। सिकन्दर बोला, "आज सड़क पर एक लारी रुकी थी," खदीजा मुन्तज़िर थी कि आगे क्या हुआ और सिकन्दर कहने लगा, "कुछ खराबी हुई थी मशीन में।" खदीजा ने सिर हिलाया। "जब तक मशीन ठीक हुई सवारियां टहलने लगीं।" खदीजा ने फिर सिर हिलाया। "जब गाड़ी चल पड़ी तो मैंने उसे नज़दीक ही पाया।" खदीजा का इज़तिराब बढ़ गया और सिकन्दर ने कांपते हुए हाथों से कागज़ खोला। अन्दर से चांदी की प्याली निकली।

दुनियां के एक खित्ते के एक कोने में अब कुली की झोंपड़ी में चांदी की एक प्याली···आज इत्तफ़ाक से एक गाड़ी रुकी थी और एक चीज़ भूल से रास्ते में रह गई थी।

खदीजा ने झपट कर प्याली को सिकन्दर के हाथों से छीन लिया। फिर उसे नीचे रखा। अपने हाथों को फिरन से साफ किया और झाड़ा तब प्याली को उठा लिया। आंखें मीच सी लीं और प्याली को सीने से लगाया। फिर वह मुख्तलिफ़ ज़ावियों से उसे परखने लगी। तब उसने उसे छुपा कर अपने पास रखना चाहा। एक ख्याल, एक तमन्ना, एक आरज़ू···दूसरे ही लम्हे वह उतर सी गई। उसकी इतनी औक़ात नहीं। चांदी की प्याली बहुत बड़ी चीज़ है। रुकते रुकते उसके हाथ आगे बढ़े। सिकन्दर ने कहा, "रख ले अपने पास।" "नहीं···" खदीजा की आंखों में आंसू भर आए। "रोती क्यों है री पगली···" एक मर्द की महब्बत उसकी रूह से छलक कर बोल रही थी, "चांदी की प्याली की क्या बिसात, गरीबी दम नहीं मारने देती वर्ना तू समझती है कि मुझे तुझ से महब्बत नहीं और मैं तुझे पीट कर खुश होता हूं···"

आंसुओं का बांध टूट गया। खदीजा फूट पड़ी और सिकन्दर के सीने से लग गई···दूसरी शाम खदीजा अपनी पड़ोसनों के साथ 'रुफ' में शामिल हुई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सराब

हृदय कौल भारती

पतझड़ के दिन थे। सूरज की कमज़ोर तिरछी किरणें अपना दामन समेट रही थीं और साये फैलते जा रहे थे। कभी-कभी कोई सर्द हवा का झोंका आकर ज़र्द-ओ-खुश्क पत्तों को कपकपा देता। वह दबी सी सिसकियों के साथ शाखों से अलग होकर ज़मीन पर आ गिरते। सफेद बर्फाब कबूतरों का जोड़ा देर तक बुलन्दियों पर परवाज़ करता रहा। दोनों परिन्दे एक दूसरे का तवाफ़[1] कर रहे थे···मासूम आज भी उसी खिड़की पर खड़ा कबूतरों के जोड़े को इन्हिमाक़[2] से तक रहा था जिसके सामने कुछ ही फासले पर एक लम्बी पुख्ता दीवार थी···किसी क़िले की फसील की तरह सख्त और मज़बूत··· जिसमें कोई सुराख नहीं था, दरार नहीं थी। कितनी बार मासूम की नज़रों ने उसको छेद कर दीवार के उस पार की दुनिया में झांकना चाहा था लेकिन हर बार उसकी नज़रें दीवार से टकरा-टकरा कर ज़ख्मी-ज़ख्मी सी नाकाम लौटी थीं। उस पार की दुनिया कितनी हसीन होगी···नाकामी के इस अहसास को कम करने के लिए वह ग़ैर-शऊरी[3] तौर से सोचने लगता—तस्वीर में कुछ खाके उभरने लगते और वह इन खाकों में तरह-तरह के रंग भरता। तस्वीर मुकम्मिल हो जाती। मासूम का सारा वजूद पिघल कर अहसासात का एक मुजस्समा बन जाता और दीवार को फलांग कर धीरे-धीरे उस वादी में उतरता

1. परिक्रमा। 2. तन्मयता। 3. न चाहते हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जहां उजले दिन थे और सुहानी रातें। फूल थे, कलियां थीं, शहद के छत्ते थे और बादाम के शगूफ़े थे। जहां हर शाम नीले सुरमई आसमान पर एक कौसे-कज़ा उभरती है और हर सुबह बादा-ए-गुल-रंग की तरह दमकती है और सारी फ़िज़ा पर एक नशा सा छा जाता है—जहां किसी माथे पर सिलवट नहीं, किसी दिल पर दाग़ नहीं और कोई जिस्म नंगा नहीं। लेकिन धीरे-धीरे एक धुंध सी छा जाती। धुआं सा उठता और फिर मुअल्लक होकर एक सख्त दीवार की सूरत इख्तियार करता। कबूतरों का जोड़ा अब काफ़ी ऊपर परवाज़ कर रहा था। नीले आकाश की यह लमुतनाही[4] वुस्अतें और सीमाब की तरह थिरकता हुआ यह परिन्दों का जोड़ा—मासूम कुछ देर के लिए दीवार की सख्ती और उस पार की दुनिया को भूल गया।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब से मासूम यहां क्याम करने आया था और जब से उसे उस दीवार की सख्ती और उस पार की किसी हसीन वादी का अहसास हो गया था तब से उसकी ज़िंदगी में एक अजीब सा उबालीपन और अजीब सी बेतरतीबी आई थी। कमरा देखो तो अजीब वीरानी सी टपक रही है। ड्रेसिंग टेबल पर जूते पालिश करने का ब्रश है और दांतों का ब्रश एक कोने में पॉलिश की डिबिया के साथ चिमटा पड़ा है। लिखने की मेज़ पर कोई तस्वीर औंधी पड़ी हुई है। किताबें, काग़ज़ात फर्श पर बेतरतीब से बिखरे हुए हैं।

परवीन अब उसकी उस बेदिली से काफी तंग आ चुकी थी। कभी-कभी उसे मासूम पर इतना गुस्सा आता कि वह लड़ने-झगड़ने के लिए तैयार हो जाती लेकिन दूसरे ही लम्हे उसकी यह कैफ़ियत हमदर्दी से बदल जाती। जब वह मासूम के चेहरे के उलझे हुए नक़ूश देखती जिनसे इन्तहाई कर्ब[5] और बेबसी झलकती होती और बग़ैर कुछ कहे ही मासूम के कमरे को फिर आरास्ता करती। कपड़ों को करीने से रखती। किताबें शेल्फ में समाती। लेकिन कमरे की यह हालत तभी तक रहती जब तक मासूम के कदम कमरे से बाहर रहते। उसकी ज़हनी कैफियत थी भी अजीब। दीवार के उस पार की दुनिया के बारे में सोचते ही उसकी तबीयत में एक नामालूम सा वालिहानापन बेदार हो जाता और वह इर्द-गिर्द की तमाम चीज़ों से बे-नियाज़ी बरतने लगता जहां तक कि परवीन से भी।

---

4. असीम। 5. पीड़ा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दफ़' [illegible] की बर्की हरकत बन्द हो गई और वह एक खास रफ्तार से नीचे आने लगे। नीचे और नीचे और साथ ही मासूम की निगाहें भी झुकती ही गई। एक रफ्तार से कबूतर दीवार के उस पार जा छुपे। मासूम को एक धचक्का सा लगा और नज़रें दीवार से टकरा कर पलट आईं जैसे कोई अंधा अपने अंधेपन को भूल कर दौड़ता चला जाए और अचानक ही एक आहनी दीवार से टकरा जाए और उसे अपने बेनूर वजूद का शदीद अहसास हो जाए। उसके होंट खुद-बखुद भिच गए और वह बेकरारी की सी हालत में नाखुनों से खिड़की की चौखट खुरचता रहा। "कसम खाकर कहती हूं, कल ही तरखान को बुलाकर यह खिड़की बंद न करवा दी तो कनीज़ को परवीन न समझना।" परवीन ने कमरे में दाखिल होते हुए एक अदा से कहा। मासूम खिड़की से हट कर एक अजीब अंदाज़ से मुस्कराया। "परवीन। तुम समझती हो कि हकीकत पर पर्दा डालने से उसकी अहमियत कम हो जाती है। आंखें मूंद कर रोशनी की हकीकत को झुठलाया तो नहीं जा सकता, परवीन।"

"और आपकी हमसे बेनियाज़ी। क्या समझूं इसे? यह कि हमारी कोई हकीकत नहीं? हमारी दुनिया दुनिया नहीं, सराब[6] है जहां सूरज नहीं चमकता, चांद नहीं खिलता..."

"नहीं परवीन, ऐसी बात तो नहीं," मासूम आजिज़ी से कहने लगा, "लेकिन हमारी दुनिया इतनी महदूद, इतनी तंग कि इंसान आसानी से छाती फैला कर सांस भी नहीं ले सकते। उलझाव सा पैदा हो गया है और एक बेतरतीबी सी आ गई है। क़रीना नहीं। कहीं कोई तरतीब नहीं और तभी..."

"और तभी आप इस सब से डरकर सराब के पीछे भागने में कोशां[7] हैं और तभी आप हक़ायक़ से बेखबर होकर सपनों की किसी अनजान दुनिया में बसेरा खोजते फिरते हैं। क्यों?"

मासूम के होंटों के कोने इस अंदाज़ से फैल गए जैसे परवीन ने कोई निहायत ही हल्की बात कही हो। "परवीन," वह एक अजीब अंदाज़ से कहने लगा, "तुम्हारी यह बातें आम इंसानी ज़ेहन की पैदावार हैं। इंसान अपने आप को धोखा देने के लिए अमूमन ऐसे ही जुमले तराशा करता है क्योंकि फितरतन

---

6 मृगतृष्णा। 7 कोशिश मन्द।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह शिकस्त खाने के लिए तैयार नहीं । वरना हकीकत तो यह है कि इस दुनिया में कोई ऐसी शै नहीं जो आज तरतीब पा सकी हो, जिसे घुटन का अहसास न हो । इसी अहसास की शिद्दत ने मेरे शऊर को टोका है लेकिन तुम समझती हो कि मैं हंगामें से डरकर किसी सराब के पीछे भाग रहा हूं ।" वह कुछ देर रुका तब दोबारा कहने लगा "लेकिन परवीन, जिस दिन यह दीवार वक्त की गरिफ्त[8] से आज़ाद हो कर ढह जायेगी उस दिन तुम्हारा सारा भ्रम टूट···।" कहते कहते वह रुक गया ।

परवीन ग़ैर मुत्तासिर सी छेड़ते हुए कहने लगी, "आप रुक क्यों गए । कहिए ना··· । आपकी यह बातें बड़ी पुरलुत्फ हैं जो सिर्फ आपके अहसास-ए-तबीयत की पैदावार हैं । जिनसे सिर्फ शिद्दते-एहसास झलकता है और आप समझते हैं कि आप फितरतन हसास आदमी वाक्या हुए हैं । चीज़ों की इस बेतरतीबी को जिस शिद्दत से महसूस करते हैं उस रफ्तार से आप इन्हें तरतीब नहीं दे सकते । हालात जिस तेज़ी से करवट बदलते हैं उस तेज़ी से आप उनका मुकाबला नहीं कर पाते । इससे आपके ज़हन में एक उलझन सी पैदा होती है और नतीजे के तौर पर आप इस सब से भाग कर सपनों के किसी तनहा गोशे में पनाह लेते हैं ।"

परवीन की इन बातों से मासूम को अपने ज़ेहन पर एक अजीब सा बोझ महसूस हुआ । बड़ी आजज़ी से कहने लगा, "परवीन, तुम्हारी इन बातों में किसी फलसफे की मोटी किताब का सा वज़न और उलझाव तो है लेकिन ऐसी कोई चीज नहीं जो दिल को छू जाये, जिससे धड़कनें तेज़ हों···।" "ए हे !" परवीन को उसकी इस बेबसी पर प्यार सा आ गया और उसने उसके गले में बाज़ू हायल करते हुए बात का रुख बदल दिया, "आप तो ऐसी बातें करते हैं जो औरत होने के नाते मेरी मीरास समझी जाती हैं ।" मासूम मुस्कराया । और दोनों कमरे के बाहर चले गए ।

उस रात मासूम बिस्तर पर देर तक करवटें बदलता रहा । उसे अपना सिर भारी महसूस हो रहा था । परवीन की बातों ने जैसे उसके दिल पर एक यख़बस्ता[10] वज़नी पत्थर रख दिया था और सब कुछ मुंजमिद[11] हो गया था । एक हसीन तस्वीर की नकाब-कुशाई से पहले ही जैसे परवीन ने

---

8. पकड़ । 9. डाल कर । 10. बर्फ की तरह ठंडा । 11. जम जाना ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उस पर खराशें डाल दी थी। मासूम देर तक गस्लबस्ता तसव्वुरात में हरारत लाने की सई [illegible] में [illegible] ने कई बार खिड़की के सामने खड़ी दीवार को फलांगा। यहां तक कि वह थक गया और अंग-अंग से टीस सी उठने लगी। माथे पर कुछ सिलवटें उभरीं और पलकें बोझिल होने लगीं। बाहर पतझड़ की खुश्क हवाओं ने खासा ज़ोर पकड़ा था और काले बादल चांदनी के ज़ीनों को आहिस्ता आहिस्ता तोड़ कर ज़मीन से अलग कर रहे थे; यहां तक कि आखरी ज़ीना भी टूट गया और चांद बादलों में कहीं छुप गया। तब गरज के साथ बूँदाबांदी शुरू हो गई। आसमान पर बादलों की एक और मोटी तह बिछ गई और बारिश तूफान का ज़ोर पकड़ गई और बिजली सी कौंद गई। मासूम के माथे पर बेतरतीब सिलवटें उभरीं और ग़ायब हो गईं। सुबह जब वह जागा तो परवीन उसके सिरहाने खड़ी अजीब अंदाज़ से मुस्करा रही थी। मासूम कुछ भी न समझ सका। परवीन उसे बाज़ू से पकड़ कर खिड़की की तरफ ले आई। खिड़की के करीब पहुँच कर वह लम्हा भर के लिए रुकी, फिर खटाक से खिड़की खोली। मासूम पर जैसे बिजली गिरी। एक धमाका हुआ और उसके तसव्वुरात का खज़ीना[13] लुट गया। दीवार गिर कर चूर चूर हो गई और सामने एक वसीह कब्रिस्तान था। बारिश की वजह से कुछ कबरें धंस गई थीं और जगह जगह ज़मीन में गड्ढे पड़ गए थे। उसने भीगी हुई निगाहों से परवीन की तरफ देखा और जवाबन परवीन ने मुस्करा कर उसके कंधे पर सिर रख दिया। कबूतरों का जोड़ा आज उनके छज्जे पर था।

13. कोष।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लम्हों की सलीब

रियाज़ पंजाबी

●

और मैं समन्दर की तरफ मुंह उठाये बड़ी देर से चुपके चुपके रो रहा था। आज क्रिसमस की रात थी। हर तरफ रोशनियां जगमगा रही थीं। फ़िज़ा में रंग-बिरंगे गुब्बारे तैर रहे थे। हर तरफ हंसी और कहकहे उबल रहे थे। नये और कीमती मलबूसात[1] पहने लोग चहकते हुए टहल रहे थे। हाथों में हाथ दिए, एक दूसरे से चिमटे हुए। होटल और बार-रूम खचाखच भरे पड़े थे। मुझसे चन्द कदम के फासले पर होटल ताजमहल के बाहर मोटरों की एक लम्बी कतार थी। लोग आ रहे थे, जा रहे थे। दूसरी तरफ गेटवे ऑफ इन्डिया पर नौजवान लड़कों और लड़कियों ने उधम मचा रखा था। वह चीख रहे थे, हंस रहे थे, गा रहे थे। उछल कूद रहे थे। एक दूसरे से जाने क्या क्या कह रहे थे।

आज की रात बहुत हसीन थी। हवा आहिस्ता आहिस्ता चल रही थी। हर तरफ फ़िज़ा में खुश्बुएं बिखरी हुई थीं। समन्दर की नर्म बाहों में नन्हा चांद लिपट लिपट कर मचल रहा था। ग़म के साये दूर समन्दर से परे कहीं तारीकियों में सो रहे थे। आज हर तरफ उजाले ही उजाले थे। अंधेरे सो रहे थे। उजाले जाग रहे थे और मैं—मैं इन उजालों से दूर ग़म की रात ओढ़े, दुख की चादर लिपटाये दर्द के आंसू बहा रहा था। आज की

1. पोशाकें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रात बहुत खूबसूरत थी और गुमनामियों का इंतज़ार था लेकिन मारिया ऊपर होटल ताज के बालरूम में फरनांडिस के साथ डांस कर रही थी। और मैं चुपके चुपके रो रहा था। अकेला, उदास, तनहा—मारिया ने कल शाम आफिस से निकलते वक्त आज रात का सारा प्रोग्राम मेरे साथ तय किया था। आज शाम मैंने उसे चर्च में भी देखा था। उसके सिर पर एक रेशमी स्कार्फ बंधा हुआ था और वह सीने पर हाथ बांधे बड़े एहतराम से सरमन सुन रही थी। उस वक्त वह प्यारी लग रही थी—बड़ी मुकद्दस ! उसके साथ उसकी मां और दो छोटे छोटे भाई भी थे। सरमन खत्म होते ही प्रेयर सुने बगैर मैं वहां से निकल आया था और वक्त से पहले ही चर्चगेट स्टेशन पर आ खड़ा हो गया था, जहां उसने मुझसे मिलने का वादा किया था। मैं बहुत देर तक बेचैनी से इंतज़ार करता रहा। मेरी नज़रें स्टेशन पर लगे क्लाक पर जमी हुई थीं। उसके आने का वक्त भी निकल गया, लेकिन वह नहीं आई। लोकल ट्रेन कई बार आ जा कर और लाखों आदमियों को उगल और हज़म करके आती जाती रही लेकिन मारिया नहीं आई। आहिस्ता आहिस्ता मुझे यकीन होने लगा कि उसके पोपले मुंह वाले मामा ने उसे अकेले जाने से मना किया होगा। और जब मुझे कतई यकीन हो गया कि मारिया अब नहीं आयेगी तो मैं उदास सा टहलता हुआ इस सड़क पर निकल आया। यूं ही, बेमकसद, होटल ताज के सामने आ खड़ा हो गया। और आने जाने वालों को देखता रहा।

रात आहिस्ता आहिस्ता सुबक - खरामी[2] से बह रही थी—उसके दामन में जूही, मोगरे और बीना की महक बसी हुई थी। खरामां-खरामां, धीरे-धीरे खुश्क रात बह रही थी। दूर दूर तक सेंट पाऊडर और 'यू डी कोलोन' की खुशबू फैली हुई थी। जिन्दगी की सख्तगीर और बेरहम नज़रें बचाकर यह लोग चन्द लम्हे चुरा कर लाये थे और इधर उधर घूम रहे थे। यही लम्हात चुरा चुरा कर आदमी जी लेता है। मैं आने जाने वालों को देख रहा था। खूबसूरत औरतें और बदसूरत मर्द—जवान लड़कियां और खिचड़ी से बालों वाले अधेड़ मर्द—जवान मर्द और बूढ़ी मेकअपज़दा औरतें आ रही थीं और हाथों में हाथ दिए होटल में जा रही थीं। कुछ लड़कियाँ खाली खाली सी, शायद किसी के इंतज़ार में इधर से उधर टहल

2 [illegible]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रही थीं । मैं यहीं खड़े खड़े सिर्फ आने जाने वालों को देख रहा था और सिगरेट पर सिगरेट फूंक रहा था । रात आहिस्ता आहिस्ता बह रही थी ।

अचानक एक लम्बी चमकीली कार रात के सीने पर तैरती हुई आहिस्ता आहिस्ता मुझ से थोड़ी दूर आ के रुक गई । मारिया उस गंजे, अधेड़ उम्र के फरनांडिस के साथ बाज़ू में बाज़ू डाले हंसती हुई कार से उतर रही थी । मैं जहां था वहीं सकते के आलम में खड़ा रह गया । मारिया ने अपने कपड़े बदल लिए थे । वह अब एक मिनी-स्कर्ट पहने थी जो घुटनों से ऊपर था । उसकी गोरी चिकनी सेहतमंद लम्बी टांगें चमक रही थीं । उसके सिर पर अब स्कार्फ भी नहीं था । उसके परेशां अधखुले बाल हवा में उड़ रहे थे और वह तेज़ तेज़ कदम उठाती हुई ऊपर ताज में चली गई थी । मैं बहुत देर तक यूं ही सकते के आलम में खड़ा रहा । अचानक किसी राहगीर के धक्के से चौंक गया और आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ने लगा । अपने कदम बेइरादा उठाते हुए बात कुछ कुछ मेरी समझ में आ रही थी - फरनांडिस मारिया के घर गया होगा और उसे अपने साथ लाया होगा । मारिया की पोपले मुंह वाली मां ने उन्हें हंसी खुशी जाने की इजाज़त दी होगी । जाने की इजाज़त कैसे न देती ? वह उस की बेटी का बास जो ठहरा । और मैं खड़े खड़े चार घंटे से मारिया का इन्तज़ार कर रहा था । मैंने किसी और गर्ल-फ्रैंड का सहारा भी न लेना चाहा—क्योंकि मारिया के सिवा मुझे और कोई लड़की अच्छी भी नहीं लगती है । और मारिया फरनांडिस के साथ आकर ऊपर ताज के बाल-रूम में डांस कर रही थी । ···चलते चलते अब मैं खड़ा हो गया । मैंने कहकहे लगाते हुए लोगों की तरफ देखा । एक दूसरे से चिमटे हुए जोड़ों की तरफ देखा जो इधर उधर टहल रहे थे । खामोश बहती हुई रात को महसूस किया । जूही, मोगरे और वीना की खुश्बुओं को सूंघा और ऊपर ताज की ऊंची बिल्डिंग की तरफ देखा जिसमें कहीं, किसी कमरे में मारिया डांस कर रही थी और खुशी से क्रिसमस की रात मना रही थी । मैंने गुस्से में अपने होंठ काट लिये । मुझे बेहद गुस्सा आने लगा । खूने मेरे रुखसारों में तमतमाने लगा । मेरी मुट्ठियां खुद-बखुद खुलने और बंद होने लगीं और मैंने गुस्से से दांत पीस लिए । मुझे कुछ करना चाहिये । मैंने सोचा, कुछ करना चाहिए वर्ना मैं गुस्से से पागल हो जाऊंगा । मेरे दिमाग़ की रगें जैसे तन गई थीं । मुझे कुछ करना चाहिए । कुछ खौफनाक खतरनाक धमाका तबाही तोड़ फोड़··· मुझे बेहद गुस्सा आ रहा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
था । सामने [illegible] खड़ी थी । इम्पाला के बाहर खिड़की से लगा ड्राइवर बड़े इतमिनान से सिगरेट पी रहा था । मेरे दिल में अचानक ख्याल आया कि मुझे इस इम्पाला को तबाह कर देना चाहिए । पहले इस के सारे शीशे चकनाचूर कर देने चाहिए, मैंने बड़ी तेजी के साथ सोचा, और फिर हर तरफ पत्थरों से मार मार कर इसका हुलिया बिगाड़ देना चाहिए । उसकी खिड़कियां, छत, डिकी—सब कुछ तोड़–फोड़ देना चाहिए । इसका कीमती इंजन निकालकर इसे एक टूटे–फूटे खिलौने की तरह समन्दर में डाल देना चाहिए । मेरे होठों पर एक इतमिनानभरी मुस्कराहट फैल गई ।

मेरा गुस्सा आहिस्ता आहिस्ता कम हो रहा था । मेरे दिल का बोझ भी कुछ कम होने लगा । दूसरे ही लम्हे अचानक मेरे जेहन में एक नई बात आ गई और मैं उछल पड़ा । मुझे बड़े इतमिनान से टंकी में आग लगानी चाहिए । पूरी गाड़ी जल के तबाह हो जायेगी । बहुत अच्छा तरीका है और यह तरीका मैंने एजीटेशन के दिनों सरकारी बसों में आग लगाते वक्त सीखा था । हां ! यह ठीक है कि मैं टंकी में आग लगा दूं । फिर देखता हूं कि गंजा फरनांडिस मारिया को किस तरह घर ले जाता है । सारी तफ़रीह का मजा चखा दूंगा, कम्बख्त को ! मैंने गुस्से से जमीन पर थूक दिया । मैं आहिस्ता आहिस्ता अपने कदम बढ़ाने लगा और कार के पास पहुंचने लगा । ड्राइवर अब भी खिड़की के सामने लगा सिगरेट पी रहा था । मैं कार के बिल्कुल बराबर में खड़ा हो गया । मैं टकटकी बांधे कार को देखता रहा । मेरा दिल बुरी तरह धड़कने लगा । माथे पर पसीने की बूंदें उभर आईं । मेरे हाथ कांप रहे थे । मैंने जेब में माचिस निकालने के लिए हाथ डाल दिए लेकिन माचिस नहीं मिल रही थी । मेरा जोश जाने कहां गायब हो गया था । मैंने कांपते हाथों से जेब से माचिस निकाल ली । घबराहट में वह मेरे हाथ से छूट कर नीचे गिर गई । ड्राइवर ने अचानक गर्दन मोड़ कर पीछे मेरी तरफ देखा और मैं कांप कर रह गया । मैं कुछ नहीं कर सकता, कुछ नहीं···मुझे महसूस हुआ कि अगर मैं जल्दी आगे नहीं बढ़ गया तो यहीं पर बेहोश हो के गिर जाऊंगा । मैंने आगे बढ़ना शुरू किया और आहिस्ता आहिस्ता आगे बढ़ता गया । अब कार मेरे बहुत पीछे खड़ी थी । मैंने माथे से पसीना पोंछ लिया और एक गहरी सांस छोड़ दी ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कार में आग लगाने से क्या फायदा ? कुछ भी नहीं, मैंने सिगरेट सुलगाते हुए सोचा। मारिया अगर फरनांडिस के साथ चली आई तो इस में भला कार का क्या कसूर है ? हां ! सारा कसूर उस गंजे फरनांडिस का है। फरनांडिस हमारे आफिस का बास है। मैं उसके आफिस में एक मामूली क्लर्क हूं और मारिया स्टैनो-टाइपिस्ट। गंजा फरनांडिस दिन में कई बार मारिया को किसी न किसी बहाने बुलाता रहता है। इसमें मारिया का कोई कसूर नहीं है क्योंकि वह उसका बास है और उसका हुक्म बजा लाना मारिया के लिए, उसके घर के लिए और उसकी अपनी नौकरी के लिए इतना ही जरूरी है जितना ज़िन्दा रहने के लिए खाने पीने की जरूरत। फरनांडिस कई कई बार एक ही ड्राफ्ट मारिया से लिखवाता और फिर फाड़ देता है। दरअसल वह मारिया को अपने पास ज्यादा वक्त बिठाये रखना चाहता है और मारिया मजबूर है। फरनांडिस को खुश रखे बगैर कोई भी आफिस में एक दिन भी नहीं टिक सकता है। मुझे प्रोमिला याद आ गई। वह सीधी-सादी संजीदा सी लड़की जिसे फरनांडिस ने एक महीने के अन्दर झूठे इल्ज़ामात लगाकर नौकरी से अलग किया था क्योंकि उसने फरनांडिस के साथ घूमने-फिरने की हर दावत और पेशकश को ठुकरा दिया था। वह हमेशा फरनांडिस को बड़ी खूबसूरती और शराफ़त से टाल दिया करती थी। और उसे नौकरी से अलहदा होना पड़ा था। फरनांडिस बहुत ही कमीना आदमी है।

मुझे ऐसा लगा कि फरनांडिस मेरा और मेरी खुशियों का बहुत बड़ा दुशमन है। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि फरनांडिस एक मक्रूह[3] राक्षस की तरह लम्बे लम्बे दांत निकाले मेरी बेबसी पर हंस रहा है और मेरा मज़ाक उड़ा रहा है। यह कमीना हर एक की खुशियों का दुशमन है। बदमाश कहीं का। मुझे फरनांडिस को खत्म करना चाहिए। उसको खत्म होना ही चाहिए-- फरनांडिस-- मैंने बड़ी तेज़ी से फिर सोचना शुरू कर दिया। मुझे आहिस्ता आहिस्ता फिर गुस्सा आ रहा था। दिमाग़ की रगें तन गई। नथुने खुद-बखुद फड़कने लगे। मैंने सोचा कि मैं बड़ी तेज़ी से होटल की सीढ़ियां चढ़ जाऊंगा। लाऊंज को पार करते ही बाल-रूम में घुस जाऊंगा और एक ही झटके से मारिया को फरनांडिस की बाहों से अलग

3. घृणित।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कर दूंगा। फरनांडिस को टाई से पकड़ कर बाल रूम से बाहर खींच कर मुक्के मार मार कर उसके सारे दांत तोड़ दूंगा— मेरी मुट्ठियां खुद-बखुद खुलने और बंद होने लगीं— और फिर उसे नीचे गिरा ठोकरें मार मार के उसकी हड्डी पसली तोड़ दूंगा। मैंने गुस्से में दांत पीस लिए। फिर···फिर एक ज़ोर की ठोकर मार के उसकी एक आंख भी फोड़ दूंगा और उसके मुंह पर थूकूंगा। मैंने गुस्से से जमीन पर ज़ोर से थूक दिया। और मारिया मेरे गले से लग जायेगी। मेरी अपनी मारिया, मेरी अच्छी मारिया···। ···मारिया···तसव्वुर ही में फरनांडिस एक मरे हुए चूहे की तरह मेरे सामने पड़ा था और मैं बुरी तरह हांप रहा था— और फिर— फिर मैं मारिया को लेकर वहां से भाग जाऊंगा। और फरनांडिस— फिर वह पुलिस में रिपोर्ट करेगा और दूसरे ही दिन वह मुझे नौकरी से भी अलहदा कर देगा। और मैं फिर बेकार हो जाऊंगा। ···बेकार— बेकारी का ख्याल आते ही मेरे सारे जिस्म में झुरझुरी सी दौड़ गई। मुझे उन दिनों की हालत याद आ गई जब मैं बेकार था। हाथ पैर ढीले पड़ गए। सारे जिस्म में सर्द सर्द सी लहरें दौड़ने लगीं। अन्दर का सारा तूफान शान्त हो गया। शोलों की लौ मद्धम पड़ गई और मैंने बेबसी से होंठ काटते हुए एक सिगरेट सुलगा लिया। सिर झुका के आहिस्ता आहिस्ता चलने लगा। खामोश। चुपचाप। मेरे दिल पर बहुत बड़ा बोझ था और मैं मारिया के बारे में सोचने लगा। मैंने दिल ही दिल में आज बहुत सारी बातें सोच रखी थीं जो मुझे मारिया से कहनी थीं। और मैं इस वक्त अकेला उदास-सा टहल रहा था और वह ऊपर डांस कर रही थी। बड़े मज़े से किसी की बाहों में थिरक रही थी। मारिया···कसूर···फरनांडिस···बोझ···कसूर तो फरनांडिस का भी नहीं है···? मैंने ठन्डे दिल से सोचा। वह बेचारा तो कतई बेकसूर है। उसकी कोई खता नहीं है। सारा कसूर उस कम्बख्त मारिया का है। यूंही बड़ी भोली भाली बनती है। इन्नोसेंट होने का पोज़ करती है। असल में यह लड़की काफी आवारा है। हर्राफ़ः[4] कहीं की! वह फरनांडिस के साथ जाने से इंकार कर सकती थी। कोई बहाना तराश सकती थी। वह उसे गोद में उठा कर तो नहीं ले जा सकता था। आवारा लड़कियां ऐसी ही हुआ करती हैं; किसी ने ज़रा सी दावत दी और झट तैयार हो गई। मेरे सामने कैसी मीठी मीठी बातें करती रहती है। कभी कभी खुद अपने हाथों

4. कुलटा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh-Funding by IKS-MoE-2025-Grant

रो मेरे बाल बना देती है। कभी टाई की नाट ठीक करती है और कभी

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अचानक मेरे सीने से लिपट कर फूट फूट कर रोती है जैसे मुझसे बहुत ही प्यार करती हो। हुंह ! मैं सब समझता हूं। वह मुझे बेवकूफ बना रही है। मुझसे फ्लर्ट करती है। वह'''वह'''लेकिन ? लेकिन ? लेकिन अन्दर ही अन्दर मेरे दिल में कोई चीज़ इस बात को मानने से इंकार कर रही थी। बहुत कोशिश के बावजूद भी मेरे दिल में मारिया के खिलाफ नफरत या इंतक़ाम का कोई जज़्बा पैदा न हो सका और मैंने सिरेगट को पैरों तले ज़ोर से कुचल दिया।

मैं आहिस्ता आहिस्ता टहलता हुआ समन्दर की लहरों को गिनता जा रहा था। समन्दर बहुत वसीह और फैला हुआ था। लहरें एक दूसरे से टकरा रही थीं और छपाक से फिर समन्दर में मुंह छुपा लेती थीं। फैला हुआ वसीह काला समन्दर'''मैं सारे कपड़े उतार के समन्दर में घुस जाऊंगा और बहुत दूर तक समन्दर के अन्दर निकल जाऊंगा। कोई बहुत बड़ी लहर आयेगी, अपनी बाहों में जकड़ के आहिस्ता आहिस्ता मुझे खा जायेगी। सुबह मारिया सुनेगी तो बहुत रोयेगी, पछतायेगी। मगर फिर रोने और पछताने से क्या होगा ? समन्दर मुझे निगल गया होगा। फिर आहिस्ता आहिस्ता मारिया भी मुझे भूल जायेगी। हो सकता है वह गंजे फरनांडिस के साथ ही शादी करले या फिर जार्ज के साथ, जो उसका खामोश आशिक है। और मुझे क्या मिलेगा ? कुछ भी नहीं। '''मैं मर जाऊंगा। मुझे कुछ फायदा नहीं होगा। नहीं, मुझे नहीं मरना चाहिए। एक लड़की के पीछे भला मैं अपनी जान क्यों देने लगा ? दुनिया में इतनी सारी लड़कियां है तो मैं एक बेवफा लड़की के पीछे क्यों मरने लगा ? अब मैं ज़रीना से दोस्ती बढ़ाऊंगा। बेचारी, मुझसे कितनी महब्बत करती है, लेकिन मुंह से एक लफ्ज भी नहीं बोलती है। चुपचाप मुझे घूरती है। ढेर सारे तोहफे चोरी छुपे लाके मुझको देती है। मेरी छोटी बहन इलिया को बुला के उसे पढ़ाती है। उसे टाफियां खिलाती है और मेरे बारे में पूछती रहती है। मुझे ज़रीना के प्यार की क़द्र करनी चाहिए। और फिर जब मैं ज़रीना के साथ घूमने फिरने निकला करूंगा तो मारिया हसद के मारे जल-भुन जाया करेगी। अन्दर ही अन्दर कुढ़ती होगी। और उसी लम्हे तसव्वुर में ही मारिया की दो बड़ी बड़ी फैली हुई आंखें मुझे हैरत से घूरती हुई मालूम हुईं। उसका उदास मासूम चेहरा'''उसके कांपते नाज़ुक होंठ'''उलझी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बिखरी एक लट···ज़रीना एक दम मेरे दिमाग़ से मफ़कूद हो गई। नहीं ! मैं मारिया को कभी नहीं छोड़ सकता···कभी नहीं। मारिया···मेरी अच्छी मारिया।···

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं अब रुआंसा सा होटल ताजमहल से ज़रा थोड़ी दूर समन्दर के किनारे खड़ा, होटल की जानिब देख रहा था। बहती हुई रात थम गई थी। फ़िज़ा में तारीकी फैल गई थी। साक़त लम्हों की काल कोठरी में क़ैद मेरा दम घुट रहा था। होटल के अन्दर डांस हो रहा था। धुनें तेज़ी से बज रही थीं। मेरे दिल पर हथौड़े बरस रहे थे। धुनें बदल रही थीं। तालियां पीटी जा रही थीं। मेरे कानों के पर्दे फट गए थे। माइक पर कुछ एनाउन्स हो रहा था। अब कोई नई धुन बजनी शुरू हो गई थी···शायद वाल्ज़ की धुन बज रही थी। मैं तसव्वुर ही में फरनांडिस और मारिया को डांस करते हुए देख रहा था। फरनांडिस का पूरा बाज़ू मारिया की कमर के गिर्द था। उसके हाथ में मारिया का हाथ था। एक···दो···एक···अब उसकी टांगें मारिया की टांगों से टकरा रही थीं। एक, दो, दो, एक···वह एक दूसरे के सीने के साथ लगे हुए थे। एक···एक, दो···सिर्फ उनके पैर हिल रहे थे। टांगें आहिस्ता आहिस्ता एक दूसरे से टकरा रही थीं। एक, दो— फरनांडिस उसे ज़ोर से भींच रहा था। एक, एक···वह एक दूसरे के साथ चिपके खड़े थे। एक, दो, एक, दो···मारिया के जिस्म की महक। उसके बालों की भीनी भीनी खुशबू— एक, दो···मेरी आंखें पथराई हुई थीं। मेरा दिमाग़ यख़बस्ता[5] हो गया था। सीने में ज़ोरों का दर्द उठ रहा था। हाथ बेबसी से लटके हुए थे। मेरा सिर फटा जा रहा था। उसी लम्हे शायद बाल-रूम की लाइट ऑफ कर दी गई। अब फरनांडिस ने अपने होंठ मारिया के होंठों पर रख दिए होंगे। कटे-फटे काले मोटे होंठ···पतले पतले सुर्ख होंठ···ख़ूंख़ार काला वहशी भेड़िया···नाज़ुक सहमा-दुबका खरगोश··· और खरगोश की गर्दन में पंजे गड़ गए थे। मैंने दर्द की शिद्दत से आंखें बंद करलीं और वहां से हट आया।

मैं आहिस्ता आहिस्ता टहलता हुआ गेटवे ऑफ इन्डिया के पास खड़ा हो गया। बेबसी के आलम में समन्दर की तरफ मुंह उठाये, मैं आहिस्ता

---

5. ठंड से जमा हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ग्राहिस्ता टाई की नाट खोलता गया और मैंने बोरीबंदर से खरीदी हुई कीमती टाई समन्दर में फेंक दी। बहुत मेहनत से संवारे हुए बालों को तितर-बितर किया और अपने दोनों हाथों से सिर को थाम लिया। मेरी आंखों में बेचारगी के आंसू आ गए और मैं समन्दर की तरफ मुंह उठाये चुपके चुपके रोने लगा…!

❖

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सड़क इन्साफ करती है

किशोरी मनचन्दा

सड़क तो सड़क ही होती है, चाहे वह घूमती ग्रौर बल खाती हुई सड़क हो या खते-मुस्तक़ीम[1] की तरह रवां-दवां। यह सड़क जिसकी बात मैं करने जा रहा हूं, बहुत ही लम्बी शाहराह[2] है। शहर से ग्राठ मील दूर उसी सड़क के किनारे एक लैदर फैक्ट्री वाक़ा है। मैं उसी लैदर–फैक्ट्री में एक क्लर्क का काम करता हूं ग्रौर सुबह को शाम करने के लिए हर रोज़ इस सड़क के घुमाव-फिराव गिनता रहा हूं। इस सड़क में इतने मोड़ हैं कि ऐसा लगता है जैसे कोई नागिन ग्रपने जिस्म को लचकाती, बलखाती ग्रागे ही ग्रागे बढ़ती चली जा रही है। लेकिन कितना फ़र्क है एक नागिन ग्रौर इस सड़क में ? नागिन के बल तो उसकी चाल ग्रौर जबिल्लत[3] का नतीजा हैं मगर इस सड़क की तो कोई जबिल्लत नहीं। यह तो बेबस है, बेजान है। इन्जीनियरों के शऊर, तजरुबे ग्रौर कावलियत की मरहूने- मिन्नत है। यह नागिन की तरह न तो चल सकती है ग्रौर न खुद किसी को नुक्सान ही पहुंचा सकती है···महज कदमों में बिछी रहती है। हां। ग्रगर इसके बेहिस ग्रौर सपाट सीने को ज़ख्मों से पाट दिया जाये तो यह नागिन से भी ज्यादा नुक्सानदेह साबित हो सकती है···होती है ग्रौर होती रहेगी, जब तक कि इसका खालिक इसके सीने पर ज़ख्म छोड़ता रहेगा···

---

1. सीधी रेखा। 2. राजमार्ग। 3. स्वभाव।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होता यूं है कि इन्सान की बनाई हुई मशीनें इसे ज़ख्मी कर देती हैं। फिर इसके मुग्रालिज[4] इन जख्मों की मरहम-पट्टी का फ़र्ज़ सर-अन्जाम देते हैं और ऐसा करते वक्त यह मुआलिज इस बात का खास ख्याल रखते हैं कि बज़ाहिर यह ज़ख्म भर तो जायें लेकिन जल्द ही फिर से हरे भी हो जायें और बड़े-बड़े गड्ढों में तब्दील हो जायें ताकि उन्हें फिर से ठेका मिल सके और यह खाली गड्ढे उनकी जेबों को पुर करने का मूजिब[5] बनते रहें। तब यह लामुतनाही सिलसिला शुरू हो जाता है। ज़ख्म भरते हैं, हरे होते हैं। सड़कों पर लगे लैम्पों की धुंधली रोशनी इन गड्ढों में गिरती है और मुसाफिरों को खबरदार करती है— बच कर चलना, कहीं चोट न खा जाना।

और अगर कोई लैम्प चोर खम्बे से लैम्प ही उतार चुका हो और सड़क पर दबीज़[6] तारीकी का राज हो तो मुसाफिर का खुदा ही हाफ़िज़ है। उसको ज़ख्मी होने से कोई नहीं बचा सकता और कई बार तो इन गड्ढों की बदौलत एक या दो नहीं बल्कि बीसों मुसाफिर ज़ख्मी हो जाते हैं। मौत की आग़ोश में चले जाते हैं जहाँ वह उन्हें एक मुशिफ़क़[7] मां-बाप की तरह कुछ देर तक तो थपक थपक कर सुलाती है, फिर जब जी में आता , उठा कर फिर से ज़िन्दगी की राहों में फैंक देती है किसी को फिर से इन्सानी शक्ल में और किसी को और सूरत में। इस तरह यह सिलसिला चलता ही रहता है। इन्सान आता है, जाता है। सड़क को अपने पांव तले रौंदता है। इसके कोमल चिकने और सपाट सीने को ज़ख्मी कर देता है। फिर इन ज़ख्मों को भरने के लिए उसके सीने पर बजरी, रेत और कोलतार के ड्रमों के मख़रूती[8] उभार उभार देता है। लेकिन यह उभार वक्ती होते हैं। आरज़ी होते हैं। यूं ही घाव भरते हैं, उभार हट जाते हैं। सड़क का सीना फिर से सपाट हो जाता है, उस औरत के सीने की तरह जो मर्द के जुल्म सहते सहते थक गई हो, हांप रही हो। आहिस्ता, आहिस्ता, धीरे, धीरे···मौत की तरफ··· जहां एक लम्हाती सुकून है···महज़ लम्हाती । फिर वही जद्दोजहद। फिर वही न खत्म होने वाली कशमकश।

यह कहानी—इसी बल खाती हुई सड़क की कहानी है। यह सड़क पहाड़ों को काट कर बनाई गई है। इसके दोनों तरफ बुलन्द-ओ-बाला पहाड़

---

4. चिकित्सक। 5. कारण। 6. गहरा। 7. कृपालु। 8. शंक्वाकार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

खड़े हैं। जो थोड़े [illegible] मुसाफिरों से भरी हुई बस इन मोड़ों से बचती-बचाती आगे ही आगे रेंगती चली जाती है और उसमें सवार इन्सानों को अक्सर यह ख्याल रहता है कि हमारी बस दूसरी तरफ से आ रही बस या ट्रक से टकरा कर हमारी रूहों को जिस्म की क़ैद से आज़ाद होने के लिए मजबूर न कर दे। और जब यह ख्याल दिल-ओ-दिमाग़ पर पूरी तरह हावी हो जाता है तो अपना नामा-ए-ऐमाल[9] आंखों के सामने फिरने लगता है और हर वह अमल जो रूह पर बोझ हो अज़ीयत और कर्ब का मज़ा चखाने लगता है।

इस वक्त मैं फैक्ट्री के चन्द दीगर मुलाज़मीन के साथ जिनमें फ़ैक्ट्री का मैनेजर भी शामिल है और जिसे हम 'साब' कहते हैं, बस में सवार हूं और इन सबका जायज़ा लिए जा रहा हूं। मिस्टर दर बार-बार कमल की तरफ देखता है और उसे खिड़की में से पहाड़ों पर नज़रें जमाये देख कर हर बार अपना मुंह बिगाड़ लेता है। सरला न जाने किन ख्यालों में खोई हुई गुमसुम बैठी है। प्रकाश नाथ और भगवत दयाल कमल के अब तक कुंवारा रहने पर रायज़नी कर रहे हैं। प्रकाश का ख्याल है कि कमल अब तक महज़ इसलिए कंवारी है कि उसे अपने मयार का कोई लड़का ही नहीं मिला और भगवत दयाल का कहना है कि लड़के तो बहुत मिल जाते हैं मगर उसे अभी तक यह पता ही नहीं चला कि उसका मयार क्या है? लेकिन कमल इन दोनों से बेनियाज़ कुदरती बहार देखे जा रही है और 'साब' रंगीन तसवीरों की किताब हाथ में लिए हुए अपनी सेक्रेटरी मिस प्रोमिला से न जाने किस राज़-ओ-नियाज़ में मसरूफ है। बस अपनी महदूद रफ्तार से चल रही है। अब वह मोड़ों से निकल कर निस्बतन सीधी सड़क पर आ गई है। ड्राइवर ने गियर बदल दिया है। रफ्तार बढ़ गई है। अचानक घंटी बजती है। ड्राइवर झल्ला कर ब्रेकों पर दबाव डालता है। बस रुक जाती है और चन्द मुसाफिरों को उतार कर चल पड़ती है।

फैक्ट्री की वसी'अ व अरीज़[10] इमारत अब नज़र आने लगी है। चन्द मिनट बाद बस फैक्ट्री के सामने से गुज़र कर लगभग पचास गज़ दूर वाक़ा बस-स्टाप पर खड़ी हो जाती है। फैक्ट्री में पहुंच कर हम दफ्तर

---

9 [illegible] 10 [illegible]

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

का रुख करते हैं। और हाजरी रजिस्टर पर दस्तखत करके अपनी-अपनी
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
मेजों की तरफ बढ़ जाते हैं। कमल की मेज़ मेरी बगल में ही है। कमल यहां रसीट-एण्ड डिस्पैच क्लर्क है। बड़ी हंसमुख और मिलनसार है।

"राकेश जी ज़रा चपरासी को बुला कर चाय के लिए तो कह दीजिए," वह अपने रजिस्टरों को ठीक करते हुए मुझसे मुखातिब होती है।

—खाली चाय या आमलेट भी ?

—खुद आपने खाना हो तो आमलेट भी मंगवा लीजिए। मैं तो सिर्फ चाय ही पिऊंगी।

मैं नन्दू को आवाज देकर चाय और बिस्कुट लाने के लिए भेज देता हूं।

पंद्रह-बीस मिनट के बाद नन्दू चाय ले आता है और कमल मेरी मेज़ के पास बिछी हुई कुर्सी पर आकर बैठ जाती है और हम नमकीन बिस्कुटों और चाय के मज़े लेने लगते हैं। अभी चाय का दौर चल ही रहा होता है कि प्रकाश नाथ वहां आ जाता है और हमें चाय पीते देखकर चहक उठता है— "ओहो! आज यह पार्टी किस खुशी में हो रही है ?"

"प्रोमिला और प्रकाश की शादी की खुशी में। इसके सिवा और मौका ही कौन सा हो सकता है चाय पीने का ?"

"राकेश साहब! कमल को समझा दीजिए कि मुझे बार-बार प्रोमिला का ताना न दे। यह समझती हैं कि मैं प्रोमिला को हासिल नहीं कर सकता। लेकिन आपको बता देना चाहता हूं कि प्रोमिला को प्रकाश से कोई भी जुदा नहीं कर सकता। प्रोमिला आखिर प्रकाश की ही होकर रहेगी।"

"मान लेता हूं भाई कि प्रकाश प्रोमिला का ही रहेगा लेकिन प्रकाश की ब्याहता सुदेश क्या करेगी ?"

"वही जो आज तक करती रही है · यानी ऐश! मिस्टर राकेश! तुम जैसे भोले इन्सान यह बात समझ ही नहीं सकते कि इस महंगाई के दौर में हर तरक्कीपसंद और ऐश-पसंद मियां-बीवी ने आपस में एक मुआहिदा कर रखा है कि वह एक दूसरे के मामलात में दख़ल नहीं देंगे बल्कि एक-दूसरे की मदद करेंगे। मसलन बीवी अगर अपनी राह पर चलती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

है, बड़े-बड़े [illegible] है और मियां
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दिन दुगनी, रात चौगुनी तरक्की करता जाता है···बीवी कारों और टैक्सियों में घूमती है और मियां स्कूटर पर टांग रखे टापता रहता है और प्रोमिला जैसी लड़कियों को फांसने की कोशिश करता रहता है···"

"मगर तुम्हें तो अभी तक कोई स्कूटर नहीं मिला, तुम्हारी बीवी जरूर टैक्सियों और कारों में घूमती दिखाई दे जाती है।··और हां! ऐसी औरत के घर बच्चे क्यों नहीं होते? जैसा कि आज तक तुम्हारे घर कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ और तुम उसके लिए पीरों, फकीरों के दर पर भी नाक रगड़ते रहे हो।"

"वह तो मैं सिर्फ अपने मां-बाप को मुतमईन करने के लिए करता रहा हूं। लेकिन हक़ीक़त यही है कि मेरी बीवी के बच्चा हो ही नहीं सकता। जिस धरती पर ब'यक़-वक्त किस्म-किस्म के बीज बिखेर दिए जायें, वहां कोई कोंपल नहीं फूट सकती बल्कि उन बीजों का ज़हर धरती की उपजाऊ शक्ति को ही खत्म कर देता है। यही हालत सुदेश की है और उस जैसी दूसरी औरतों की होती है। लेकिन इससे मर्द को क्या? वह तो ऐश करता है। उसे न तो गरीबी सताती है, न बच्चों की परवरिश की फ़िक्र। तुम्हारी तरह नहीं कि शराफत और ईमानदारी का ढोल गले में डाले बच्चों की परवरिश किए जाओ और खुद भूख और इफ़्लास[11] से लड़ते हुए मर-मर के जिए जाओ। यह मुझसे नहीं हो सकता। बाकी रही बात स्कूटर की, तो दोस्त! सुदेश की मेहरबानी से अगले हफ्ते स्कूटर मेरे नीचे होगा और प्रोमिला अपनी गोरी-गोरी बाहें मेरी कमर में डाले, स्कूटर पर बैठी मेरे साथ जा रही होगी। और तुम यह सब देख कर जलना!" यह कहते कहते वह बड़ी शान से साब के कमरे की तरफ चल देता है।

"बेइज़्ज़त," कमल ज़ेरे-लब बड़बड़ाते हुए जमीन पर थूक देती है। लेकिन उधर जाता हुआ प्रकाश यकायक पीछे की तरफ पलट आता है। जैसे किसी खिलौने को चाबी देकर उसका रुख बदल दिया गया हो।

"ओह राकेश! मैं साब का काम तो भूल ही गया, जिसके लिए उसने मुझे तुम्हारे पास भेजा था।"

---

11. निर्धनता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"कहो भई ! बड़े शौक से कहो, क्या काम है ?"

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"प्रोमिला का ओवरटाइम एकाऊंट अभी बना कर दे दो।"

"लेकिन उसने तो आज कोई ओवरटाइम किया ही नहीं।"

"नहीं किया तो क्या हुआ ? रामभरोसे तो अक्सर ओवरटाइम करता है। पिछले महीने का रामभरोसे का ओवरटाइम प्रोमिला को दिया जायेगा।"

"प्रोमिला को अपनी तरफ खींचने की क्या चाल चली है तुमने। क्या साब राज़ी हैं इस बात के लिए···?"

"वह राज़ी है ही। प्रोमिला की ज़रूरत उसे भी है और मुझे भी। इसलिए तुम जल्दी से एकाऊंट दे दो।"

"लेकिन उसका एकाऊंट मेरे पास तो नहीं है, वह तो सरला के पास है। उसके पास जाओ।"

"ओह ! खुदाया, यह किस मुसीबत में डाल दिया। वह चिमगादड़ तो सीधे मुंह बात ही न करेगी। या तो फाइलों में उलझी होगी या कोई धार्मिक किताब लिए पढ़ रही होगी। वह भी तुम्हारी ही तरह जज़बाती है। किसी ने किसी वक्त उसके साथ ज़बरदस्ती की थी, वह उस ग़म को अभी तक सीने से लगाए बैठी है। इस तरह अपने आपको सुखाने से आखिर फ़ायदा···? हंसे, खेले, मौज मनाये···बड़ी बेवकूफ़ है वह···तुम ज़रा मेरे साथ चलो तो बात बनेगी। क्योंकि तुम्हारा वह बहुत लिहाज़ करती है।"

"भई, प्रकाश नाथ ! इस काम के लिए तो तुम्हें अकेले ही जाना होगा। यह सरकारी काम है, उसे करना ही होगा और वह करेगी ही। बेखौफ़ होकर चले जाओ।"

प्रकाश अभी जाने के लिए पर तौल ही रहा होता है कि मि० दर आ धमकता है लेकिन प्रकाश को मेरे पास खड़ा देख नज़र चुरा कर जाने की कोशिश करने लगता है।

"ओ, मि० चूनी लाल दर। अब कहां खिसकने लगे हो। मैं जानता हूं कि तुम राकेश के पास मेरे खिलाफ़ कान भरने ही आए थे कि प्रकाश ने यह कर दिया है, वह कर दिया है। लेकिन इस सब का तुम्हें कोई फायदा नहीं पहुंच सकता। एकाउंटेंट की हैसियत से प्रोमिला के नाम का बिल तुम्हें ही बनाना है। और सुनो ! अगर ज़रा भी गड़बड़ करने की कोशिश की तो फौरन मुअत्तल करवा दूंगा।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"जाओ, जाओ — बहुत देखे हैं तुम जैसे मुअत्तल करवाने वाले। रामभरोसे का ओवरटाइम रामभरोसे के नाम से ही बनेगा। प्रोमिला के नाम हरगिज़ नहीं बनेगा, चाहे जो कुछ कर लो।"

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेकिन प्रकाश भी प्रकाश ही है। वह झट से पांच रुपये का नोट निकालता है और दर के हाथ पर रख देता है।

"क्यों वे चूनी, अब भी वह बिल बनेगा या नहीं ?"

"अब वह बिल फ़ौरन बनेगा प्रकाश साहब, फ़ौरन ही ! आप रामभरोसे के ओवरटाइम का एकाऊंट लाइये, मैं एक मिनट में प्रोमिला के नाम बिल बनाये देता हूं।"

यह सुन कर प्रकाश मानी-खेज़[12] नज़रों से मेरी तरफ देखता हुआ सरला की तरफ चला जाता है और मैं दर की तरफ मुखातिब होता हूं, "मुझे नहीं पता था कि तुम इतने ज़लील आदमी हो ?"

"मैं मजबूर हूं, राकेश ! बिल्कुल मजबूर हूं। तुम्हें नहीं पता कि मैं यहां आने से पहले हीरो बनने की धुन में बम्बई चला गया था। वहां मैं साल भर रहा। हीरो तो बन नहीं सका, हां ! एक दो फिल्मों में एक्सट्रा का रोल ज़रूर किया है। वहां पर ही मुझे शराब पीने की आदत पड़ गई। अब यह हालत है कि मुझे ठेके का आधा हर हालत में चाहिए। शराब अब मेरी ज़रूरत बन चुकी है। इसके बगैर मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता। और तुम्हें पता ही है कि मेरी तनख्वाह तो इतनी है ही नहीं कि उसमें से मैं बीवी-बच्चों का पेट पालकर शराब भी पी सकूं। इसलिए मुझे शराब हासिल करने के लिए कई-कई बार तो इन्तहाई तौर पर ज़लील हो जाना पड़ता है। मैं क्या बताऊं मुझे अपनी बीवी को भी मजबूर करना पड़ता है कि वह मेरे लिए शराब मुहय्या करे और जाने क्या कुछ करके वह मेरे लिए शराब मुहय्या करती है···मैं वह बयान नहीं कर सकता···" कहते-कहते वह अपनी आंखों पर हाथ रखकर रोने लगता है। और मैं सोचता हूं कि क्या इस दुनिया से पाकीज़गी, शराफत और इखलाक़···सभी कुछ खत्म हो जायेगा। क्या सभी लोग प्रकाश और दर बन जायेंगे ? लेकिन मुझे इसका कोई जवाब नहीं मिलता, अलबत्ता एक गुर्राहट ज़रूर सुनाई देती है। मैं सर उठा कर देखता हूं कि भगवत दयाल हैड-क्लर्क,

---

12. अर्थपूर्ण।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मेरे सामने खड़ा मुझे खा जाने वाली नज़रों से घूर रहा है। मैं बौखला कर खड़ा ही जाता हूं।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तुमने अभी तक खर्च की तफ़सील क्यों नहीं भेजी। मैं कब से इंतजार कर रहा हूं। तुम्हारी वजह से सारा काम रुका पड़ा है।

"पंडित जी, यह आपको पता ही है कि मेरी तरक्की वाजिब-उल्-अदा[13] है। लेकिन आपने वो कागज़ साब को पेश ही नहीं किए। मैंने उसके बारे में कितनी ही दफ़ा आपसे अर्ज़ की है, लेकिन आप ध्यान ही नहीं देते। मेरी पिछले महीने की रक़म मिलेगी तो वह भी खर्च में शामिल होगी ही, इसलिए, मैं इंतज़ार कर रहा हूं कि मेरी इंक्रिमैंट सैंक्शन करवायें और मैं स्टेटमैंट बना दूं।"

"ओह! यह बात है, तो सुन लो, तुम्हें इंक्रीमैंट कभी नहीं मिल सकती। काम तो करते नहीं हो और मांगते हो इंक्रीमैंट और वह भी सूखे में ही। तुम्हारे सामने ही दर की मुट्ठी गर्म हुई है। मगर तुम्हें समझ नहीं आई।"

'हुं', तो आप मुझ से रिशवत मांगते हैं। लेकिन याद रखिये साहब आपको मुझसे रिशवत हरगिज़ नहीं मिलेगी। रिशवत लेना और देना मेरे मज़हब में हराम है। इतनी नाजायज़ कमाई खाने के बाद भी आपका पेट नहीं भरा। फैक्ट्री की पिछली दीवार जो बनी थी, जिसमें मज़दूरी का काम हमारी फैक्ट्री के ही मजदूरों ने किया था और इस मज़दूरी का जो तीन सौ रुपये का जाली बिल बना था उसकी रक़म से आप लोगों का पेट नहीं भरा तो मुझ से पांच रुपये रिशवत लेकर आपका क्या बनेगा। पंडित जी, भगवान के न्याय से और उसके क़हर से डरिये। और मेहरबानी करके मेरी तरक्की मंज़ूर करवा दीजिए। मैं आपका शुक्रगुज़ार हूंगा···"

"अभी करवाता हूं···अभी करवाता हूं···" कहते-कहते वह अपने कमरे की तरफ चल देता है।

"राकेश साहब अब आप पर कोई न कोई मुसीबत ज़रूर आयेगी, आपको उससे उलझना नहीं चाहिए था।"

"कोई बात नहीं कमल, जो होगा देखा जायेगा। लेकिन मैं रिशवत किसी भी हालत में नहीं दूंगा···।"

---

13. देय।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लगभग आधा घंटा गुज़र जाता है कि सरला एक काम के सिलसिले
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
में मेरे पास आती है और दबे लफ़्ज़ों में मुझे इत्तिलाअ[14] देती है कि मैंने जो भगवत दयाल की शान में गुस्ताखी की है, उसकी सज़ा के तौर पर मुझे मुअत्तल कर दिया गया है। और चूंकि मैं सीनियर ग्रेड में हूं इसलिए साब ने मेरी मुअत्तली की तसदीक़ करवाने के लिए प्रकाश और भगवत दयाल को बड़े साहब के पास शहर भेजा है।

यह बात सुनकर मेरे होश उड़ जाते हैं। इंक्रीमैंट लेते-लेते तनख्वाह से भी हाथ धोने पड़ रहे हैं। मैं जल्दी से छुट्टी की दरख्वास्त लिख कर सरला को देता हूं और अपनी फाइलें सम्भाल कर तक़रीबन दौड़ता हुआ सड़क पर आ जाता हूं। अभी चंद क़दम ही चला हूं कि पीछे से एक बस आ जाती है। मैं उसे रुकने का इशारा करता हूं। बस रुक जाती है और मेरे सवार होते ही फिर से चल पड़ती है। मैं सीट पर बैठ जाता हूं। मुअत्तली के नतीजे में माली परेशानियां और बच्चों के मासूम चेहरे मेरी नज़रों में फिरने लगते हैं। मुझे ऐसा महसूस होने लगता है जैसे यह मुआ'शरा[15] अब शरीफ आदमियों के लिए नहीं रह गया है बल्कि यहां सिर्फ प्रकाश और दर जैसे लोग ही ज़िन्दा रह सकते हैं।

मैं अपने ख्यालों में उलझा होता हूं कि अचानक ही बस एक झटके से रुक जाती है और तक़रीबन सभी मुसाफ़िर नीचे उतर पड़ते हैं। मैं भी नीचे उतर आता हूं। अब जो मैं सड़क का मन्ज़र देखता हूं तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। मोड़ पर एक बस उल्टी पड़ी है। बेहिस और बेजान सड़क खून में नहाई हुई है और किनारे पर सात लाशें पड़ी हुई हैं और कुछ ज़ख्मी भी कराह रहे हैं। मैं भीड़ में से रास्ता बनाता हुआ उन लाशों के क़रीब पहुंचता हूं और प्रकाश और भगवत दयाल की लाशें देखकर मारे घबराहट के एकदम पीछे हट जाता हूं। और मेरी निगाहें बेइख्तियार इस घूमती बल खाती सड़क के सीने पर बने हुए दो गड्ढों पर जम जाती हैं, जो इस वक्त इंसानी खून से लबरेज़ हैं। ऐसा लगता है जैसे यह सड़क इंसान से इन्तिक़ाम लेती है, जो इसके सीने को ज़ख्मों से पाट देता है। इस तरह सड़क एक मुन्सिफ़ की तरह इन्साफ का हक़ अदा करती है।

---

14. सूचना। 15. सभ्यता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेज़ुबान

मालिक राम आनन्द

"सजरी खजर की गोल चिकनी रोटी बासी रात की परात में अच्छी नहीं लगती", रजब की फड़फड़ाती मूंछों तले मिनमिनाते होंठों पर बार-बार यह इल्फ़ाज़ आते और वह बकरे की गर्दन पर हाथ फेर-फेर कर, उसकी 'खुर' चाट-चाट कर खुरदरी हुई जीब को लपकते देख-देख कर, उसकी मिनमिनाहट की वजह से फड़फड़ाते टेटने को दबा-दबा कर शायद अपनी खिफ़त मिटाने की कोशिश कर रहा था। आज मुशताक़ की बहन गुलनारो की बारात जो आने वाली थी। "कट्टू पक्के ते चक्खे लोकां"...सवेरे उसकी आंखों की ओस उसके गुलाब जैसे गालों पर और भी निखार पैदा कर रही थी।

"रोदेयां झड़न मोती ते हसदेयां झड़न फुल्ल, रजब दीन जी ए दुनिया इक भुल्ल।" फिटे मुंह ते लख-लानत। बैतल बकरी भी कोई बुड्ढे बकरे के पल्ले बांधता है। उसके हड्ड में तो जवानी का गूदा ही नहीं है, हुं:, मत मारी गई है उस मुशताक़ की, गुलनारो फ़ज़ले के बीन (बीज) से क्या अपनी खेती लहरायेगी। उसके सिट्टों (सिट्टे) से तो आज तक कोई दाना तो कुजा दूधा भी नहीं फूटा। 'पोह'[1] के सिट्टों से कभी पेट भरा

1. पौष।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

है ? क्या सारे गांव में उसे और कोई गबरू नहीं दिखाई दिया।" रजब
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
ने अपनी पिलपिली छाती में छत्तीस इंच की फूक भरते हुए और बकरे को कीकर के सूखे पेड़ के और करीब ले जाते हुए, सोचते हुए, अपने आपसे कहा। उसकी मूंछें अब के अजीब तरह से फड़फड़ाई थीं जैसे बकरे ने छुरी देखकर कान फड़फड़ाये हों।

"किसे दंद वाले नाल वाह् नहीं पड़ा इसका।" सामने टैंट से सौंधे-सौंधे बास्मति चावलों की खुशबू ने उसके नथुनों में घुसने की कोशिश की। उंह्... हरामी न जाने कितने बकरे खायेंगे। सुबह का चौथा बेज़ुबान काटने जा रहा हूं। उसने छुरी की तरफ एक बार देखकर उसकी खून से बलबल करती जीब को, अपनी तसल्ली के लिए, अपनी रान पर फेरते हुए सोचा।

अरे हां! पिछले साल रहीमे कुम्हार की लड़की ने तो कमाल कर दिखाया था। न जाने वह वहां कैसे पहुंच गई थी। उस दिन भी मेरा चौथा बकरा कटा था। बेगमा ने, जहां मैं आवे के पास शीशम के पेड़ तले बेज़ुबान काट रहा था, उधर आकर आहिस्ता से चुपचाप बैठकर अपने हाथों से बेज़ुबानों का ताजा ताज़ा खून उठा उठा कर अपने कपड़ों के साथ मलना शुरू कर दिया था। मैं आवे की ओट में चुपचाप यह तमाशा देखता रहा। फिर वह तमाम लिबास को सुर्ख सुर्ख खून के छींटों से दाग़दार बनाकर पिछवाड़े की तरफ चली गई थी।

उस वक्त तो यह सारा खेल मेरी समझ में न आ सका लेकिन जब निकाह के लिए मौलवी गफ़्फ़ारा अपनी सियाह छदरी दाढ़ी और मूंछों में सोने के दो दांत छुपाये और अपने कानों पर पड़े बलोची किस्म के बालों के गुच्छे संवारता बेह्ड़े में वारद हुआ तो सबकी बांछें खिल गई थीं। और फिर जब उसने निकाह पढ़ाते पढ़ाते यूं ही बेगमा पर उचटती नज़र डाली तो उसकी दाढ़ी में खुजली सी होने लगी और उसकी मुश्ताक़ आंखें बगटुट उसके सारे पिंडे पर भागने लगीं। "तोबुस्तफ़ा" इस लड़की पर तो किसी आसेब का साया है। देखो तो इसके सारे जोड़े पर खून के छींटे डालकर किसी आसेब ने अपनी हैय्यत मनवाई है। यह निकाह शर'आ के हिसाब से नाजायज़ होगा जब तक इस लड़की पर से आसेब का साया न हटाया जाये मैं इसका निकाह पढ़ाने के लिए हरगिज़ हरगिज़ तैयार नहीं। अगर यह आसेब के होते ब्याह दी गई तो सारी उम्र यह साया इसके साथ
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चिपका रहेगा और हो सकता है गफ़ूरा बल्दे करीमा, सकना पिंड करम
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
दाद खान इस जहां से ही कूच कर जाये। इसलिए मैं यह नापाक और जानलेवा काम करने से बाज़ आया। इतना कह कर वह इस्तग़फ़ार अल्लाह इस्तग़फ़ार अल्लाह का वरद करता हुआ सबको परेशानी और फ़िक्र की डोली में हैरां और शशदर बैठा छोड़ कर डुड्ढ नाई के छज्जे की सीध में बढ़ता चला गया था।

गांव का मौलवी जो कहे वह पत्थर पर लीक होता है। और फिर पांचवें रोज़ बेगमा ने मौलवी गफ़्फ़ार से निकाह कर लिया था। तब मैं समझा कि यह पट्टी किस पीर-मुर्शद की पढ़ाई हुई थी लेकिन रजब की सोच बकरे की आखरी 'मैं' की तरह निकली और कीकर की शाखें आंतों और बकों की तरह उसकी आंखों में लहरा उठीं जिनके नीम मुर्दा छिदरे सायों में एक साया लिपटा हुआ शायद उसी की राह देख रहा था।

"अरे यह क्या ? यह तो गुलनारो है, मुशताक़े की बहन। यह यहां क्या कर रही है ?" उसकी तो मट्टी गुम हो गई। अपने टेटने को दो 'पोटों' से पकड़ते हुए उसने थूक हल्क के अन्दर निगलते हुए खंखारने की नाकाम कोशिश की ताकि गुलनारो उसकी तरफ मुत्तवज्जो हो सके लेकिन वह कीकर की और ओट में चली गई और वह बकरे को घसीटता हुआ इधर उधर कनखियों से देखता अपने 'डेलों' में एक अजीब सी चमक लिए पेड़ की तरफ बढ़ा था।

"गुलनारो···गुलनारो···तू यहां क्या कर रही है ?" उसने आहिस्ता से अपने टेटने पर हाथ रखते हुए उसे पुकारा।

"रज्जे, मैं तेरा ही इंतज़ार कर रही थी। क्या ऐसा नहीं हो सकता कि इससे पहले कि कोई दूसरा कसाई मुझे आ कर ले जाये तू मेरी गर्दन ही उड़ा दे। मुझे इस अज़ाब से नजात दिला दे रज्जे।" उसने दबी दबी आवाज़ में कहा।

"तेरा मग़ज तो ठीक है न ? उधर बेह्ड़े में तेरी बारात उतरी है और तू ··"

"आखर हराम के···है न···तू भी कसाई ही···मुझे मार के सवाब कमा ले। तेरे पर किसी को शक भी नहीं होगा। चल निकाल छुरी और कर दे काम तमाम" गुलनारो ने रजब की बात काटते हुए कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

"गुलनारो···तुझ पर छुरी चलाऊं ? तुझ पर तो छुरी भी फिसल फिसल जाये, इतनी चिकनी है तू ।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अगर छुरी नहीं चलाता तो चल, उधर कमांद में चल ।"

"अरे कोई देख लेगा तो क़यामत आ जायेगी"। उसकी आंखों में शरारत के डोरे शराबी बन कर रक्स करने लगे थे।

"अरे कसाई के बच्चे ! देखता नहीं कि मैं तुझे अपनी मर्जी से कह रही हूं— चल कमांद में। इस बेज़बान को इधर छोड़ दे, तुझे दुआएं देगा।"

न जाने रजबे कसाई पर गुलनारो का कौन सा सहर[2] चल गया था जो वह एक भेड़ की तरह गुलनारो के पीछे पीछे गन्ने के खेत की तरफ हो लिया था। उसके होंठों पर और दिल में अजीब से सरशार लहरिये लहरें मारने लगे थे। शायद गुलनारो के मक्खन जैसे चिट्टे पैरों को कमांद में घुसते देखकर उसे इन्हीं में जन्नत और आफ़ीयत नज़र आई थी और जभी वह दुनिया-ओ-माफ़िया से बेखबर खेत में घुसता चला गया। सिर्फ रजबे की दो आंखें···हवसज़दा आंखें···अरीज आंखें शायद उस बर बर देखते बकरे से जरूर मिली थीं जो कीकर के नीचे खड़ा उसको कमांद में घुसते हुए बड़ी हसरत और यास भरी निगाहों से देख रहा था।

सुबह तक जब सब लोग ढूंढ कर थक गए और उन्हें इन दोनों का कहीं निशान तक न मिला तो गांव के थाने का थानेदार अपनी बड़ी बड़ी मूंछों को ताव देते हुए कह रहा था, "बंद कर दे इस छोकरी को हवालात में। यह रजब कसाई का खून करके आ रही है।"

---

2. जादू।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूटे रिश्तों का रोग

ज्योतीश्वर पथिक

●

दरिया पार का कब्रिस्तान शहरे-खमोशां[1] की तरह वीरान रहता है मगर कभी कभी जब कोई लाश दफ़नाने के लिए गांव के लोग आते हैं तो मेरे ज़ेहन में अजीब सा तूफान जन्म लेता है। दिल के जज़्बात उमड़ आते हैं। मगर मैं मजबूर हूं। मैं वहां जा नहीं सकता। पार के गांव में मेरा माज़ी[2] दफ़न है। मेरी ज़िन्दगी के जवां-साल शबो-रोज़[3] सो रहे हैं। मगर इस माज़ी को पाने से महरूम हूं। मेरा गांव और वह गांव— दो मुल्क हैं— दो दिल हैं जो कभी एक थे। आज फिर उस गांव से एक लाश आई है। सभी के चेहरे उतरे हुए हैं और हाथ नमाज़े-जनाज़ा के लिए उठे हुए हैं··· शायद मरहूम की रूह की तस्कीन[4] के लिए दुआ मांगी जा रही है। काश कोई मेरे लिए भी दुआ मांगे ! काश मेरी रूह को भी तस्कीन हासिल हो सके !! मगर नहीं, अब शायद मेरी ज़िन्दगी में यह सब मुमकिन नहीं होगा क्योंकि हमने अपने माज़ी को जला डाला है, उसका खून किया है और ख्वाबों को हमेशा हमेशा के लिए तहे-ख़ाक़ कर दिया है। मैं सिगरेट सुलगा कर नाली में बहा देता हूं। दूसरे किनारे पे अली मुहम्मद मिलता है, जिसने कभी कोई काम नहीं किया। हमेशा लहरों को घूरते हुए शे'र गुनगुनाता रहता है। गांव के लोग उसे दीवाना कहते हैं, पागल कहते हैं मगर वह

---

1. शमशान। 2. अतीत। 3. रात-दिन। 4. सान्त्वना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कभी कभी जज़बात की रौ में बह कर बक पड़ता है, "तुम तबाह हो जाओगे। अल्लाह के बन्दो खुदा तुम्हें कभी माफ नहीं करेगा। तुम्हारे हाथ खून से रंगे हुए हैं, तुम गुनहगार हो।" गुज़श्ता[5] सत्ताईस बरसों से वह यही कहता चला आ रहा है। कभी उस का मुंह शुमाल की तरफ नदी के पार होता है और कभी अपने ही लोगों को गालियां दे दे कर वह उनका गिरेबान पकड़ लेता है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अली मुहम्मद, यह लाश किसकी है?"

"नूरां की। मर गई हरामज़ादी।" उसने हिकारत से गाली देते हुए कहा। नूरां···मेरे ज़हन में उस जवां साल औरत का सरापा घूम गया जो तक्सीमे-वतन के चन्द दिन पहले ही गांव में दुल्हिन बन कर आई थी। उसका खाविंद, गुल शेर खां, मेरा हम जमायत था। दोनों मौलसिरी के दरख्तों के तले बैठकर घंटों बातें किया करते थे। हाल के तसव्वुरात[6] पर मुस्तकबिल के ख्वाब देखा करते। गुल शेर खां हिसाब में कमज़ोर था मगर उसके बाप के पास चालीस भैंसों का गल्ला था, जिसे चराने के लिए बहुत से मुलाज़िम रखे हुए थे। इसलिए गुल शेर खां को पढ़ाई में बहुत कम दिलचस्पी थी। मगर चौधरी शमशेर खां को ज़िद थी कि वह गुल शेर खां की शादी उसी सूरत में करेगा जब वह मैट्रिक पास कर लेगा। गुल शेर खां ने अपनी पसन्द, नूरां, की बाबत अपने बाप से बात कर ली थी। मगर जब तक मैट्रिक पास न करता उसकी शादी नूरां से तय नहीं हो सकती थी। दोनों पीपल के दरख्त के नीचे बैठ कर प्यार के अहदो-पैमान[7] किया करते। माज़ी, हाल और मुस्तकबिल की पहेलियां बूझते। इन्हीं दिनों मेरा और गीता का रूमान भी परवान चढ़ने लगा। मगर मैं गुल शेर खां की तरह बेबाक नहीं था। और मेरे दिल की यह बात गुल शेर खां से छुपी नहीं थी। वह अक्सर कहा करता, "तू बुज़दिल है साले। तेरी जगह मैं होता तो उसे भगा कर ले जाता।" कभी कभी गुल शेर खां जज़बाती हो जाता और कहा करता, "न साली मैट्रिक पास होगी और न मैं शादी करूंगा।" और मैं मज़ाक में कहा करता, "गुल्लेया, मैट्रिक का इम्तिहान भी फरहाद की नहर बन कर रह गया।" "मगर मैं नूरां को हासिल करके रहूंगा, दोस्त।"

6. कल्पना। 7. कसमें-वादे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आखिर गुल शेर खां की उम्मीदों ने रंग लाया। उसने मैट्रिक पास कर ही लिया। जब उस का नतीजा रेडियो पर सुना गया तो वह खुशी से पागल हो गया और उसके बाप ने मुझे गले से लगा कर कहा था, "अल्लाह तुम्हें बरकत दे, बरखुरदार! हमारे घर का पहला मैट्रिक पास है यह।" फिर शहनाइयां बजीं। औरतों ने गीत गाए और बारात सजाई गई। नूरां गुल शेर खां की दुल्हिन बन गई। दोनों की उमंगें आसमान से बातें करने लगीं। इश्कपेचां की बेलों में दोनों के दिल उलझ कर रह गए। फिर एक तूफान आया। गुल शेर खां और मैं जानी दुशमन बन गए। उसने मेरा घर जला डाला, मैंने उसका मकान फूंक दिया। दोनों ने एक दूसरे के लिए छुरे निकाल लिए, एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए। नारों से नारे टकराने लगे। छुरों से छुरे उलझने लगे। गोलियां चलीं और घर के दरो-दीवार खसो-खाक हो कर रह गए। यह आग हमने नहीं लगाई थी। यह खून हमने नहीं किया था। यह गोलियां हमने नहीं चलाई थीं। मगर जब होश आया तो मैं दरिया के इस पार था और गुल शेरा उस पार। फिर कुछ बरसों तक फासले बढ़ते गए। दोनों को पनाहगज़ीनों के कैम्पों में ले जाया गया। दोनों पेट की आग बुझाने के लिए तगो'दौ[8] करते रहे।

फसादात की आग बुझी और हम सरहद पर आकर दोबारा आबाद हो गए। इत्तेफ़ाक से गुल शेर खां और नूरां ने भी वहीं डेरा डाल लिया। एक दिन दोनों की नज़रें मिलीं। दोनों की पलकें एहसासे-नदामत[9] से झुक गईं। गिले-शिकवे जाते रहे। मगर हम दोनों गले मिल कर रो न सके। दोनों के दिलो-दिमाग़ पर एक गुबार सा छाया हुआ था।

"नूरां कैसी है, गुल्लेया?"

"बिल्कुल तगड़ी है।" गुल शेर खां ने जवाब दिया, "खुदा का फ़ज़ल है यार। तुमने अभी शादी की है या नहीं?" गुल शेर खां ने सवाल किया।

"हां गुल्लेया! भगवान की दया है। चार बेटे हैं।"

"हम तो अभी अल्लाह की मेहरबानी से महरूम हैं। कभी कभी बुजुर्ग कहते हैं कि दूसरी शादी कर लो। मगर जब नूरां का ख्याल आता है तो दिल मसोस कर रह जाता हूं। बेचारी का दिल टूट जायेगा।"

---

8 प्रयत्न । 9 पछतावा ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

काश ! मैं नूरां का दर्द बांट सकता। काश ! मैं गुल शेरे के जज़बात को तस्कीन दे सकता। मगर, नहीं नहीं मैं मजबूर हूं। हमारे दरमियान नदी है, नाला है, मुल्कों की दीवार है। और अब तो दिल भी बट गए हैं। मगर इंसान वही है। लाख शैतान बने, फिर भी वह इन्सान ही रहता है। दरिया पार के लोग नूरां के मजार पर मिट्टी डाल कर वापिस जा रहे हैं। ममता की प्यास लिए नूरां हमेशा हमेशा के लिए मनों मिट्टी के तले दब गई। मैं उसका आखरी दीदार भी न कर सका। अली मुहम्मद ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगता है, 'तुम सब का यही हश्र होगा सालो। तुम सब गुनहगार हो, तुम्हारे ज़मीर गंदे हैं। तुम्हारे ऐमाल गदे हैं।" और बलूची संतरी उसे धक्का देकर दूर जाने को कहता है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अली मुहम्मद बराबर बके जा रहा है, "तुम चुग़द हो। तुम्हें सिर्फ नफ़रत करना आता है। तुम्हारा सरापा नफ़रत है। तुम्हें अल्लाह कभी माफ नहीं करेगा···।" अभी चन्द रोज़ की बात है कि मैंने सुना था कि गुल शेर खां को एक रेल डकैती में कत्ल कर दिया गया। वह अपनी फ़सल बेच कर शहर गया था। नूरां के लिए जेवर लाना चाहता था। लायलपुर का फरनीचर अपने कमरे में सजाना चाहता था। मगर रात के सफर में उसे कत्ल कर दिया गया। नूरां दीवानावार मारी मारी फिरती रही। रिश्तेदार दिलासे दे कर चलते बने। मां-बाप ने खून के घूंट पी कर सब्र कर लिया। मगर नूरां कहीं की न रही। उसके सामने पहाड़ सी जिन्दगी पड़ी थी। अगर मेरा बस चलता तो मैं नूरां को किसी स्कूल की टीचर बना देता। कम-अज-कम अपने बच्चों को पढ़ाने का काम ही उसे देता। मगर नहीं, मैं मजबूर था, बेबस था। और मैं कुछ न कर सका। पुलिस वालों ने ब्यान लिए और अपने काग़ज़ात का पेट भर कर चलते बने। भाई-बंद काम में मसरूफ हो गए। और नूरां वहीं की होकर रह गई। कुछ दिनों तक, चाहते हुए भी, नूरां की खबर न मिल सकी। सरहद पर ज़बरदस्त निगरानी थी। पुलिस की गश्त जारी थी। मैंने मुफ्त में धर लिए जाने के डर से कभी वहां का रुख नहीं किया। अभी कल ही मैंने अर्चना से नूरां के बारे बात की थी। वह यह हालत सुन कर फूट फूट कर रोने लगी। औरत आखर औरत के दर्द को पहचानती है। मगर उसके पास इसका कोई हल नहीं था। काश ! वह दीवाली की रात हमारे हां आ सकती ? हम ईद के दिन उनके हां दावत खा सकते। गुल शेर खां के हां बनने वाले पकवानों के नाम सुनते ही मुँह में पानी आ जाता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मगर यह माज़ी की बातें हैं। हाल धुँधला है और मुस्तकबिल…? और अली मुहम्मद चिल्ला उठता है, "ऐ नफरत करने वालो तुम महब्बत करना नहीं जानते। तुम रिश्ते तोड़ना जानते हो, दिलों को जोड़ना नहीं जानते। तुम्हारी ज़बान बंदूक है और तुम्हारी ज़बान गोली है। बम हैं, धमाके हैं और बस…! नूरां की मौत मेरे लिए एक नया सवालिया निशान बन कर रह गई है। क्या उस गांव के सभी लोग मर गए हैं जो वो एक बेवा की ज़िन्दगी को नहीं बचा सके। मगर मैं कुछ नहीं जान सकता। कोई कुछ नहीं बता सकता। मैं मजबूर हूं, अली मुहम्मद मजबूर है, सब मजबूर हैं। शाम होने लगी है और क़ब्रिस्तान के क़रीब की मस्जिद का मौलवी नूरां की क़ब्र पर चिराग जला कर फ़ातिहा-ख्वानी[10] कर रहा है और मैं सिर्फ टकटकी बांधे उस तरफ देख रहा हूं। मेरे माज़ी की एक मजबूत कड़ी टूट कर गिर पड़ी है।

❖

10. मुर्दे की नियाज़ पढ़ना।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकांकी-नाटक

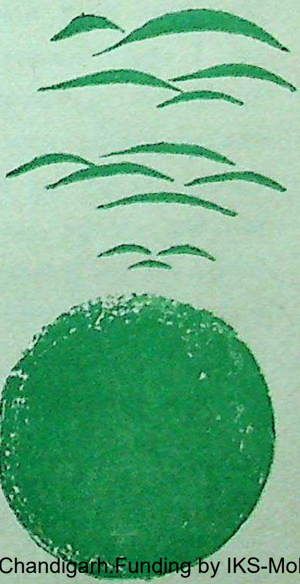

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घरौंदे

अली मुहम्मद लोन

●

पात्र

हबीब	बाबा
सुन्दरी	गिल्ली
मां	गफ़्फ़ार

[कश्ती का अन्दरूनी हिस्सा, सामने लकड़ी की दीवार में खिड़कियों पर चट्टाइयां पड़ी हुई हैं। इसी दीवार पर लगे हुए एक तख्ते से ताक़चे का काम लिया जा रहा है। इस पर तांबे और अलमूनियम के बर्तन औंधे सीधे रखे हुए हैं। स्टेज के दाएं और बाएं बाजुओं में दो दरवाज़े नज़र आते हैं जो कश्ती के दूसरे हिस्सों में खुलते हैं। बाएं कोने में चूल्हा है जिस पर सुन्दरी भात और साग पका रही है। सुन्दरी···25 साल की एक खूबसूरत औरत, फिरन पहने हुए, जिसका रंग ज्यादा इस्तेमाल से बिगड़ गया है। सर पर एक मैली सी ओढ़नी के नीचे से सुर्ख रंग का 'कसाबा'[1] दिखाई दे रहा है जिस पर चांदी के दो बड़े पिन लगे हुए हैं। सुन्दरी की आंखें बड़ी हैं लेकिन उनमें उदासी है। उसके कानों में दो बड़ी बड़ी बालियां लटक रही हैं। सुन्दरी ताक़चे पर से कोई चीज़ उतारकर ओखली में पीसने लगती है। हबीब बाएं दरवाज़े से गुनगुनाते हुए दाखिल होता है। हबीब की उम्र कोई बाईस साल के करीब होगी। उलझे हुए बाल, वहशतनाक आंखें। चेहरे से तल्खी का इज़हार हो रहा है।]

1. सर के तज़इयन के लिए कश्मीरी ब्याहता औरतें सुर्ख कपड़े का बना हुआ एक दायरा सा पहनती हैं जिसे 'कसाबा' कहते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हबीब : [अपने आपसे गुनगुनाते हुए और चट्टाई उठाते हुए] सु छु तत्ते ते वु छस यत्ते···बार साहिबो वन् यो ज़ार···बार साहिबो वन् यो ज़ार[2]···[फिर स्टेज के मरकज़ में रुककर सुन्दरी से···] सुन्दरी ! क्या पक रहा है आज ?

सुन्दरी : [पीसना बन्द करके पिसी हुई चीजें हांडी में डाल कर] भला बताओ तो क्या पक रहा होगा ?

हबीब : [तल्ख लहजे में] वही साग होगा।

सुन्दरी : [अपने काम में मशगूल है] और नहीं तो क्या गोश्त पकाऊं तेरे लिये। बाबा की नौकरी जब तक नहीं लगेगी, जब तक साग ही पकेगा भैया !

हबीब : लेकिन कब तक सुन्दरी ? [मुँह खोलते हुये] यह देखो··· यह···साग खाते खाते मुंह का ज़ायका ही खराब हो गया है। ऐसा जान पड़ता है कि मुंह के अन्दर कभी गोश्त की बोटी गई ही नहीं। [आह भरते हुए] अच्छा भई, देखें कब तक यह घास खाई जायेगी हम से [फिर गुनगुनाने लगता है]···बार' साहिबो वन् यो यार।

सुन्दरी : क्या गा रहे हो हबीब ?

हबीब : उन मज़दूरों के गीत जो मल्ल'अ सुल्तान का बोट साफ कर रहे हैं। वह अभी थोड़ी देर पहले यही तो गा रहे थे। शायद इस खुशी में कि सूरज पहाड़ों के उधर लुढ़क रहा है और उन्हें आज की मज़दूरी के पैसे मिलने वाले ही हैं। क्या तुमने नहीं सुना ?

सुन्दरी : नहीं तो !

हबीब : कैसे नहीं सुना होगा। आवाज़ तो साफ आ रही थी।

सुन्दरी : मैं न जाने किस काम में उलझी हुई थी।

हबीब : चट्टाई उठा कर सुन लिया होता।

सुन्दरी : [उदास लहजे में] चट्टाई उठती तो मां जाने क्या क्या कहती। अच्छा हुआ जो मैंने मज़दूरों का गीत नहीं सुना [मज़दूरों का गीत दूर से सुनाई देता है] अरे ! यह तो फिर वही गीत गाने लगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

2. वह (महबूब) वहां है और मैं यहां हूं। दुहाई है। दुहाई है।

हबीब : हां ! लो, अब चट्टाई उठा कर सुनो। आवाज़ साफ आयेगी।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : [घबराते हुये] न बाबा चट्टाई उठी तो गज़ब हो जायेगा। मुझे गीत नहीं सुनना है। मुझे अब गीतों से नफ़रत सी हो गई है।

हबीब : बड़ा अच्छा गीत है सुन्दरी···लाल' ग्योव पांपिर वत्ते क्वंग पोशब र'ट नाल मत्ते। सु छु तत्ते ते वु छस यत्ते···बार साहिबो··· कैसा गीत है सुन्दरी ?

सुन्दरी : [कुछ खो सी जाती है]

हबीब : मैंने कहा गीत कैसा है···? सुन्दरी, तुम्हें पसन्द आया ?

सुन्दरी : [पहले की तरह]···

हबीब : [चौंकते हुये] सुन्दरी···

सुन्दरी : [अपने आप में आते हुए] क्या है भैया ?

हबीब : सुन्दरी ··तुम्हारा चेहरा···तुम उदास क्यों हो गईं ?

सुन्दरी : मैं क्यों उदास होने लगी [चूल्हे में फूंक मारने लगती है] ··· और फिर देखो तो मैं हंस रही हूं।

हबीब : मैं जानता हूं सुन्दरी। यह गीत बिछुड़े हुओं की याद दिलाता है न ! इसीलिए तुम उदास हो गईं। लेकिन क्या करें सुन्दरी। अभी वह गीत किसी ने लिखा ही नहीं, जिसके गाये जाने से बिछुड़े हुए मिल भी जायें !

सुन्दरी : [टालते हुये] जाने क्या कह रहे हो तुम···जब से तुम्हारा स्कूल छूटा है अजीब बातें करने लगे हो।

हबीब : [तन्जिया हंसी के साथ] सच ! तुम्हें मेरी बातें अजीब लगती हैं ?

सुन्दरी : हां !

हबीब : लेकिन मैं जो कुछ कह रहा हूं, ठीक कह रहा हूं। अभी वह गीत किसी ने लिखा ही नहीं जिसके गाये जाने से बिछुड़े हुये मिल जायें और जब तक ऐसा गीत लिखा नहीं जाता···तुम्हारा लाला पाम्पोर की राहों के उस पार ही रहेगा और तुम उससे मिल न सकोगी।

---

3. लाला (महबूब) पाम्पोर की ओर चला गया। ज़ाफ़रान के फूलों ने उसे गले लगाया। वह वहां रह गया और मैं यहां अकेली रह गई। दुहाई है, दुहाई है···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सुन्दरी : [बुरा मनाते हुये] बको मत !

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हबीब : अब मैं बक रहा हूं ?

सुन्दरी : और नहीं तो क्या ? कैसी बुरी बुरी बातें मुंह से निकालते हो। जाओ मुझे काम करने दो।

हबीब : तुम्हारी यही बात तो मुझे एक आंख नहीं भाती। ज़रा सी बात पर रूठ जाती हो।

सुन्दरी : यह ज़रा सी बात कही तुमने···

हबीब : ···और नहीं तो क्या बड़ी बात कही मैंने ?

सुन्दरी : जाओ मैं नहीं बोलूंगी तुमसे।

हबीब : अरे बाबा तो ना बोलो। मगर यह तो बताओ सुन्दरी मुझ से रूठ कर फिर किस के साथ बातें करोगी ? **[सुन्दरी की खामोशी से तंग आते हुए]** बोलो··खामोश क्यों हो गई ? मुझ से रूठ कर किस से बातें करोगी ?

सुन्दरी : तुम्हें इससे मतलब ?

हबीब : है क्यों नहीं ? तभी तो पूछ रहा हूं। बोलो डल के इस खामोश पानी से बातें करोगी ?

सुन्दरी : नहीं तो।

हबीब : तो क्या ज़बरवन् के इन काले पत्थरों को पुकारोगी।

सुन्दरी : बेजान चीज़ों को पुकारने से क्या हासिल ?

हबीब : डल के पानी से नहीं, ज़बरवन् के पत्थरों से नहीं···तो आखिर किस से बातें करोगी ?

सुन्दरी : किसी से बोलूं, मगर तुम से नहीं बोलूंगी।

हबीब : **[शरारतआमेज हंसी के साथ]** तुम लाख छुपाओ सुन्दरी, मैं जानता हूं···तुम किससे बातें करोगी।

सुन्दरी : **[चौंकते हुए]** किस से ?

हबीब : लाला से, और किस से !

सुन्दरी : लाला से ? मगर···मगर वह तो···वह तो यहां हैं ही नहीं।

हबीब : वह नहीं, उसकी तस्वीर तो तेरे पास है।

सुन्दरी : तस्वीर ? कैसी तस्वीर ?

हबीब : वाह सुन्दरी ! ऐसी भोली बनती है जैसे सचमुच कोई तस्वीर तेरे पास है ही नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : मैं सच कहती हूं हबीब, मेरे पास कोई तस्वीर नहीं।

हबीब : झूठ, बिल्कुल झूठ! [उसके करीब जाकर सरगोशी में] सिंगार मेज की दराज में क्या छुपा रखा है तुमने ?

सुन्दरी : हट यहां से, नहीं तो मारूंगी लकड़ी।

हबीब : देखा! मैं न कहता था···

सुन्दरी : [तंग आते हुए] जाते हो यहां से या मैं मां को पुकारूं।

हबीब : अरी, मां को किसलिए पुकारती है। लो मैं चुप रहता हूं। ··· नहीं···मगर खाना जल्दी पकाओ ज़रा···मुझे बड़े ज़ोरों की भूख लग रही है।

सुन्दरी : तो मैं क्या करूं ?

हबीब : अच्छा भई, पकाओ अपनी मर्जी से [वक्फा] लेकिन एक बात तो बताओ सुन्दरी !

सुन्दरी : फिर वही शरारत वाली बात होगी ?

हबीब : नहीं, बड़ी संजीदा बात है। तुम अभी अभी कह रही थीं न कि बेजान चीज़ों को पुकारने से कुछ हासिल नहीं होता। फिर यह ··लाला की तस्वीर के साथ तुम क्या क्या बातें करती रहती हो। देखो भई छुपाना मत। मैंने तुम्हें कई बार इस तस्वीर को अपने आंसुओं से भिगोते हुये देखा है।

सुन्दरी : [उदासी के साथ] तुमने ऐसा क्यों कहा, पगले ? जाने मैंने उस तस्वीर से क्या कुछ कहा होगा।

हबीब : हां ! कौन जाने तुमने क्या कुछ कहा होगा। लेकिन मैंने जो सुना वह तो यही था [औरतों की नक्ल उतारते हुये]··अब तो आ जाओ लाला। कब तक अपनी सुन्दरी से रूठे रहोगे। ···लेकिन सुन्दरी उस बेजान तस्वीर ने तो कोई जवाब न दिया।

सुन्दरी : [तड़पते हुये] हबीब ! उसे बेजान मत कहो। वह तो मेरी ज़िन्दगी है, मेरा सब कुछ है।

हबीब : [तन्जिया] उंह···ज़िन्दगी। कब तक इन बहलावों के सहारे रहोगी बहन ?

सुन्दरी : जब तक आखरी सांस है और फिर हबीब तुमने तो मेरी ही बातें सुनी हैं। यह नहीं सुना कि उस तस्वीर ने मुझ से क्या कुछ कहा है। सुनोगे तो उसे बेजान न कहोगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हबीब : क्या कहा उस तस्वीर ने ?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : जब भी मैं उस तस्वीर को अपने दोनों हाथों में लेकर टकटकी बांधकर देखती हूं तो जैसे उसकी आंखें कहती हुई सुनाई देती हैं— आंसुओं को रोक ले सुन्दरी, मैं बहुत जल्द आ रहा हूं। बहार के साथ [आवाज़ भर जाती है] लेकिन हबीब बहार तो आ गई मगर वह ··वह···

हबीब : मगर लाला नहीं आया अभी तक, यही न ?

सुन्दरी : हां ! वह अभी तक नहीं आये हबीब !

हबीब : तुम पिछली सात बहारों से लाला का इन्तज़ार कर रही हो। उसे आना होता तो अब तक आ भी चुका होता। कौन जाने सुन्दरी, जिस तूफ़ान ने सारे पंजाब का दिल हिला दिया था उसने तुम्हारे लाला को भी अपनी लपेट में ले लिया हो ?

सुन्दरी : नहीं, मेरा दिल गवाही दे रहा है कि वह ज़िन्दा हैं और एक दिन ज़रूर आयेंगे···

[वक्फा··इस दौरान अंधेरा कश्ती में फैलने लगता है। मजदूरों का गीत फिर तेज़ होता है। चूल्हे की आग फिर भड़क उठती है। हबीब चट्टाई को उठा कर बाहर झांकता है। सुन्दरी अपने चेहरे को दोनों हाथों में लेकर गीत सुनती है। आग की रोशनी में उसकी मोटी मोटी आंखों से आंसुओं के चन्द क़तरे गिरते हुए दिखाई देते हैं। चूल्हे की आग और ज्यादा भड़क उठती है। हबीब कुछ सूंघ कर खिड़की पर चट्टाई गिरा देता है और सुन्दरी की तरफ देखकर घबराये हुये अन्दाज में कहता है···]

हबीब : अरी देखना सुन्दरी, भात जल गये शायद ?

सुन्दरी : **[चौंकते हुए और हांडी का ढक्कना उठाते हुए]** अरे अब क्या होगा ?

हबीब : आंच कम कर दो पहले।

सुन्दरी : **[आग पर पानी के छींटे मारते हुए]** मगर अब होगा क्या ? बू तो सारी कश्ती में फैल गई है। मां ने सूंघा तो···?

हबीब : कुछ नहीं होगा। मैं जो यहां हूं···"बार साहिबो वन् यो ज़ार··· सु छु तत्ते वु छस यत्ते··बार साहिबो···" **[गाते हुये बायें दरवाजे से निकल जाता है]**

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सुन्दरी : [भात की हांडी चूल्हे से उतारकर उस पर एक और बर्तन चढ़ा देती है] "बार साहिबा वन् यो ज़ार···" दुहाई देकर कुछ होता तो मैं भी मायके के टुकड़ों पर पलने के बजाए अपने घर की मालकिन होती। घर में वह होते, बच्चे होते·· सब कुछ होता··[रोने लगती है]

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां : [दायें दरवाज़े से दाखिल होते हुए] सुन्दरी !

सुन्दरी : [चौंकते हुए और अपने आंसूओं को पोंछ कर] इलाही खैर !

मां : [चिल्लाते हुये] अरी ओ सुन्दरी···

सुन्दरी : क्या है मां ?

मां : क्या हो गया है तुम्हें ?

सुन्दरी : कुछ नहीं मां···कुछ भी तो नहीं···वह ज़रा आंच तेज़ हो गई और···और भात जल गये ··

मां : आंच तेज़ हो गई · क्यों ? तुम्हारे होश कहां रहते हैं ?

सुन्दरी : [रुक रुक कर] वह मां · वह ··वह हबीब आया था। बातों में लगाए रखा मुझे·· और ··आंच तेज़ हो गई।

हबीब : [बायें दरवाज़े से दाखिल होते हुए] हां मां ! सुन्दरी ठीक कह रही है। कसूर मेरा ही है। मैंने ही उसे बातों में लगाए रखा था।

मां : अरे जा जा। तू क्या इसे बातों में लगायेगा ? यह तो तुम जैसे दस लौंडों को अंगुलियों पर नचायेगी।

सुन्दरी : मां !

मां : [भड़कते हुये] मैं जानती हूं तुम किन ख्यालों में खोई रहती हो ?

हबीब : जानती हो मां तो कुछ करती क्यों नहीं ? क्या तुम यह चाहती हो कि सुन्दरी हमेशा इन्हीं ख्यालों में खोई रहे ?

सुन्दरी : खुदा के लिए खामोश हो जाओ हबीब ··!

हबीब : [सुन्दरी की बात सुनी-अनसुनी करते हुए] तुम्हें और कुछ कहना है मां ··?

मां : हुंह् ! तुम्हारा तो दिमाग ही फिर गया है। जब देखो उल्टी-सीधी बातें करते हो··जाओ मैं तुम्हारे मुंह नहीं लगती।

हबीब : मुंह लगो भी तो क्यों कर। मैं तुम्हारा अपना बेटा हूं न।

सुन्दरी : खुदा के लिए हबीब !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE 2025-Grant

मां : अच्छा तो बात यहां तक बढ़ गई है कि तुम ही मुझे उसकी तरफ से सौतेली मां का ताना देने लगे हो। मैं अच्छी तरह जानती हूं कि यह पट्टी भी उसी की पढ़ाई हुई है। खैर आने दो उन्हें। मैं आज फैसला करके ही रहूंगी। इस घर में अब या तो सुन्दरी रहेगी या मैं। देखना··आने तो दो उन्हें··[**जाती है**]

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : हबीब यह तुमने अच्छा नहीं किया !

हबीब : लो ! अब तुम भी उल्टा मुझी पर बरस पड़ोगी। तुम्हारे लिए ही तो कहा है !

सुन्दरी : लेकिन हबीब इसके बावजूद भी तुम मुझे बचा न सके। मां अब बाबा से जाने क्या क्या कहेगी।

हबीब : यही तो रोना है सुन्दरी, बात हम तक ही रहती तो क्या होता ?

सुन्दरी : हां भैया ! बाबा बेकारी के हाथों तंग आ चुके हैं। सात साल की बेकारी·· उस पर मां की जली कटी बातें सुनेंगे तो कितने परेशान होंगे ?

हबीब : दरअसल सुन्दरी यह रोज़ रोज़ के झगड़े भी तो बाबा की बेकारी का ही नतीजा हैं। कारोबार होता, खाने पीने की फिक्र से आज़ादी होती, मसरूफियत होती तो लड़ाई झगड़े के लिए किसे फुरसत थी। यह सब सोचकर मुझे मां की हालत पर भी रहम आता है। बाबा की बेकारी तो हम सब के लिए जान लेवा बन रही है। उस पर हर तरफ से कर्ज़ख्वाहों के तकाज़े··· अच्छा भला आदमी परेशान हो जायेगा, इन हालात में।

सुन्दरी : हां भैया ! मां मुझ से उलझती है। शायद इसलिए कि मैं आज सात साल से यहां पड़ी पड़ी उनका इंतज़ार कर रही हूं। बाबा मेरे बोझ को आखिर कब तक उठाते फिरेंगे ? [**जज़बाती अंदाज में**] हबीब ! तुम्हारे लाला आयेंगे भी · या मैं···यूं ही राह ताकती रह जाऊंगी।

हबीब : कौन जाने सुन्दरी··

सुन्दरी : मैं भी कभी कभी उदास होकर अपने आप से कहती हूं कि जाने वाले वापस कब आते हैं, पगली, जिस राह पर जा रही है उसकी मंजिल कहीं नहीं···।

हबीब : फिर ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सुन्दरी : फिर···एक उम्मीद···एक आस मुझे सोचने पर मजबूर करती
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है कि वह आयेंगे, जरूर आयेंगे···

हबीब : कौन जाने सुन्दरी, कौन जाने···?

[अंधेरा कश्ती में और गहरा हो जाता है। चूल्हे की रोशनी में सुन्दरी और हबीब आसेबों की तरह नजर आते हैं। मजदूरों का गीत आखिरी बार फ़िज़ा में गूंजता है ·· सु छु तत्ते बु छस यत्ते बार साहिबो वन् यो जार ·· गीत खत्म होता है तो हबीब और सुन्दरी हरकत करते हैं। सुन्दरी उठ कर एक तरफ लटकती हुई लालटेन को उतार कर उसे पहले की तरह अपनी जगह पर लटकाती है]

सुन्दरी : [चूल्हे की आग को फिर भड़काते हुये] मजदूरों का गीत भी खत्म हो गया···

हबीब : यह गीत खत्म नहीं होगा सुन्दरी। जाने यह लोग कब से इस गीत को गाते आ रहे हैं। इन्हें कल फिर इसी गीत को गाते-गाते दिन को रात में तब्दील करना होगा। तुम्हारे इन्तज़ार की तरह इन गीतों का सिलसिला भी यूंही चलता रहेगा···जाने कब तक ? [फिर लहजा बदलते हुये] सुन्दरी···

सुन्दरी : हां, हबीब !

हबीब : एक बात पूछूं ?

सुन्दरी : कौन सी बात भैया ?

हबीब : सात साल थोड़ी मुद्दत नहीं होती। तुम थक तो नहीं गईं सुन्दरी ?

सुन्दरी : सात साल क्या सारी उम्र भी इन्तज़ार करना पड़े तब भी न थकूंगी।

हबीब : मगर ··

सुन्दरी : [बात काटते हुए] पगले, कौन थकता है ? बाबा और मैं इस उम्मीद में डाकखाने, बोट एजेंसियों और होटलों का चक्कर काटते रहते हैं कि कब कोई खत या तार उनके नाम आये और हमारे हाऊस-बोट की रौनक लौट आये। खत या तार नहीं आता मगर बाबा फिर भी उम्मीद का दामन नहीं छोड़ते।

हबीब : उम्मीद का दामन ! झूठी तसल्लियों से क्या होता है सुन्दरी। कभी मैं भी इस उम्मीद में छावनी में बोझ ढोने गया था कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हमारे दिन फिरेंगे और मैं रोज़ जिस बोझ तले दबने जाता हूं, उससे नजात मिल जायेगी। मैं अपनी तालीम को पूरा कर सकूंगा। लेकिन सुन्दरी दिन फिरते हैं न मेरी पीठ पर से मार डालने वाला बोझ गिरता है। मैं कालेज में दाखिल होता हूं, न मेरी तालीम पूरी होती है। सुन्दरी मैं भी बहुत दिनों तक उम्मीद के इन घरौंदों में भटकता रहा लेकिन हालात की एक हल्की सी आंधी ने इन तमाम घरौंदों को ज़मीन के साथ हमवार करके रख दिया।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : उम्मीद के इन घरौंदों से निकलकर तो आदमी मर जाता है। फिर जैसा तुम…?

हबीब : जाने भी दो सुन्दरी। क्या रखा है इन बातों में।

[दूर से बाबा के पुकारने की आवाज़ आती है— हबीबा…हबीबा…। हबीब चौंक कर चट्टाई उठा कर जवाब देता है]

हबीब : [चिल्ला कर] अभी आया बाबा…[सुन्दरी से] सुन्दरी ज़रा शिकारा तो खोल दे, मैं बाबा को इस पार उतारूं।

सुन्दरी : [सामने की दीवार से लोहे की एक जंज़ीर को खोलते हुये] तुम बोट में उतरो तो…

[हबीब चट्टाई को उठाकर बाहर बोट में कदम रखता है और फिर चट्टाई गिराते हुये कहता है…]

हबीब : लेकिन सुन्दरी मैं जब तक बाबा को ले आऊं तुम मेरे लिए भात परोस कर रखना। सच कहता हूं बड़े ज़ोरों की भूख लग रही है मुझे। देखना…भूलना मत…

सुन्दरी : अरे बाबा, नहीं भूलूंगी। तुम बाबा को ले तो आओ पहले।

हबीब : [बाहर से ही] अभी पलक झपकने में ले आऊंगा बाबा को। तुम भात परोस कर तो रखो।

मां : [दाएं दरवाज़े से दाखिल होते हुए] सुन्दरी !

सुन्दरी : क्या है मां ?

मां : मां की लगती ! समावार में कोयले डाल दिये या नहीं ?

सुन्दरी : किसलिये मां ?

मां : अरी वह जो थक-हार कर आ रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : मगर मां चूल्हा तो अभी तक जल रहा है। चाय पतीली में यूं गर्म होगी···

मां : तो अभी तक गर्म नहीं हुई क्या ?

सुन्दरी : अभी हो जाती है मां ! [**उठ कर ताक़चे से पतीली उठाकर लाती है और उसे चूल्हे पर रख कर उसमें चाय उंडेलती है**] लो मां ! अभी गर्म हो जाती है चाय !

मां : तो अब तक क्या कर रही थी तू ? मुझे जी भर कर कोसा होगा तुम दोनों ने।

सुन्दरी : नहीं तो मां···

मां : नहीं तो क्या···तुम लोग मुझे अपना दुश्मन जो समझते हो।

सुन्दरी : खुदा के लिए चुप रहो मां ! बाबा आ रहे हैं !!

मां : [**आहिस्ता आहिस्ता लहजा तेज हो जाता है**] चुप रहूं, क्यों ? अरी, तू कौन होती है हुक्म चलाने वाली। मैं चुप नहीं रहूंगी। सब कुछ कह के रहूंगी उनसे···

सुन्दरी : [**हाथ जोड़ते हुये**] मां ! मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूं। बाबा से कुछ न कहना।

मां : मैं तो एक एक बात कह के रहूंगी।

सुन्दरी : मां ! अगर तुम को मुझ पर रहम नहीं आता तो बाबा के हाल पर ही तरस खाओ। वह थक हार कर आ रहे हैं। उस पर यहां झगड़ा देखेंगे तो कितना परेशान होंगे वह ?

मां : अरे वाह !··· बड़ी आई है बाबा से हमदर्दी जताने वाली। इतना ही दर्द था तुम्हारे दिल में तो आज सात साल से हमारे सीने पर मूंग दलने के लिए यहां न बैठी रहती, कहीं अपना ठौर ठिकाना करने चली गई होती।

सुन्दरी : उनके चले जाने के बाद बाबा के सिवा मेरा इस दुनिया में था ही कौन···

मां : जहन्नुम में भी जाती तो तुम्हें सहारा मिलता।

सुन्दरी : मां !

मां : यह जवानी और बढ़ बढ़ कर बातें करने और हुक्म चलाने की आदत ! अरे तुम्हें तो किसी राजा की बीवी होना चाहिये था··· राजा की बीवी !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सुन्दरी : मां ! यह तुम क्या कह रही हो ?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां : अब भी कुछ नहीं बिगड़ा, सुन्दरी। चाहो तो और लड़कियों की तरह हाऊस-बोटों में...

सुन्दरी : [तड़पते हुये] मां ! खुदा के लिए अब खामोश हो जाओ। मुझ से बरदाश्त नहीं होगा।

मां : बरदाश्त नहीं होता तो चली जाओ यहां से... [सुन्दरी रोती है] ...अब यूं टसुवे बहाने से काम नहीं चलेगा। आखर कब तक तुम्हें खिलाते पिलाते रहेंगे ? एक एक चीज़ बिक रही है। चीनी के बर्तन, छुरियां, कांटे, मेरे कंगन, गिल्ली के झुमके... सब ही तो गए हाथों से।

सुन्दरी : [रोते हुये ही] मां ! तुम्हारी चीज़ों के साथ मेरी चीज़ें भी तो सुनार हड़प कर गया !

मां : बड़ा कारून का खज़ाना लुटाया है तुमने...चांदी के कड़े और सोने का हलकाबंद ही तो था। अरे, वह चंडाल लाया ही क्या था तेरे लिए ?

सुन्दरी : मां ! मैं तुम्हारे टुकड़ों पर पड़ी हूं...उन्हें चंडाल न कहो... उन्होंने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा ?

मां : और नहीं तो क्या बनाया है ? तुझ जैसी आफ़त को हम पर लाद कर चला गया। जाना ही था तो तुम्हें भी साथ लेकर मरता।

सुन्दरी : वह भी तुम्हारे लिए ही यहां से दूर— पंजाब चले गये। बोट रहन न हो चुका होता, पंडित का कर्जा न बढ़ता तो वह काहे को घर छोड़कर पराये देस जाते ?

मां : अरी वह कर्जा क्या चुकाता, उलटा अपनी जान से हाथ धो बैठा।

सुन्दरी : [भड़कते हुए] जान से हाथ धो बैठें उनके दुशमन। खबरदार जो तुमने उनके बारे में कोई ऐसी-वैसी बात मुंह से निकाली। मैं अब तक चुप रही। लेकिन अब...तुम हद से बढ़ रही हो।

मां : क्या कहा ? मैं हद से बढ़ रही हूं...[रोने की तैयारी करते और माथे पर जोर से हाथ मारते हुये] हाय हाय मेरे फूटे भाग ! छोकरी [illegible] हाय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अल्लाह ! अब इस घर में मेरा गुज़र नहीं होगा। मुझे अपने पास बुला ले। [रोती जाती है]

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : तुम्हारी अपनी बेटी मेरी जगह होती तो पता चलता···

मां : [ज़ोर ज़ोर से रोते हुये] हाय हाय अब तो बात बात पर सौतेली मां का ताना देने लगी है।

सुन्दरी : नहीं तो और क्या करूं ? तुम्हारा बर्ताव ही जो ऐसा है।

मां : [फिरन के दामन से नाक साफ करते हुये] हां···हां सात साल से तुम्हें खिलाती पिलाती और हिफ़ाज़त जो करती आ रही हूं। मैं न होती तो तू भी औरों की तरह हाऊस-बोटों में धंधा करने को मजबूर हो जाती या किसी मूये के साथ भाग गई होती।

सुन्दरी : भागें तेरे होते-सोते। मैं क्यों भागने लगती।

मां : हाय अल्लाह ! अब गालियों पर भी नौबत आ गई। [सुन्दरी के बालों को पकड़ते हुये और दो चार हाथ मार कर] कलमुंही, नागिन की जनी, ठहर तो ! तुझे कच्चा न चबाऊं तो रज़ाक हांगलू की बेटी नहीं···बदबख्त, तेरी जवानी खाक में मिले। बिजली गिरे तुझ पर···मौत आ जाये तुझे···।

[बाबा और हबीब दायें दरवाज़े से दाखिल होते हैं। हबीब दौड़कर मां का हाथ रोक लेता है। सुन्दरी बाबा के साथ लिपट कर रोने लगती है]

सुन्दरी : बाबा !

बाबा : गिल्ली की मां ! आज तो झगड़ा न किया होता !!

मां : [रोते हुये] हाय हाय···तुम भी बेटी की तरफदारी करने लगे। क्यों नहीं ! इस घर में एक मैं ही तो पराई हूं।

हबीब : मां, क्या हो गया है तुझे। कोई सुन लेगा तो क्या कहेगा ?

मां : सुने मेरी बला से। मैं कब डरती हूं किसी से। तुम लोगों ने तो मेरी बात सुनी ही नहीं, उलटे मुझ पर ही बरस पड़े।

बाबा : [सुन्दरी को अपने से अलग करते हुये, कमरे के वस्त में आकर] आज मैं किसी की नहीं सुनूंगा। आज मैं सब कुछ भूल जाना चाहता हूं···सब कुछ भूल जाना चाहता हूं···सात साल की बेकारी···कर्जख्वाहों के तकाज़े, लड़ाई झगड़े सब कुछ भूल जाना चाहता हूं। आज मैं खुश हूं···बहुत खुश। [जेब से एक लिफ़ाफा निकालकर उसे हिलाता है] आज मैं खुश हूं···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हबीब : तुम्हें भी तो खुश होना चाहिए मां, चिट्ठी आई है !

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुन्दरी : [सब कुछ भूल-भाल कर] चिट्ठी···

मां : [यकीन न करते हुए] झूठ !

हबीब : नहीं मां, बिल्कुल सच ! क्यों बाबा विज़िटर आ रहे हैं न ?

बाबा : हां विज़िटर आ रहे हैं; मुद्दत के बाद···

मां : [आंसू पोंछकर] विज़िटर आ रहे हैं ?

सुन्दरी : मेरे अल्लाह ! तुमने बेकसों की फरियाद भी सुन ली। मुद्दत के बाद आरज़ू पूरी की है उसने। ···अब तो सारे दुःख दर्द दूर होंगे ··।

मां : चिट्ठी आई···विज़िटर आ रहे हैं···तो तुम लोग खड़े खड़े मुंह क्या तक रहे हो। सुन्दरी जल्दी से दूसरी पतीली चूल्हे पर चढ़ा और हबीब तुम दौड़ के चाय और खांड लेकर आओ··· यह लो पैसे !

हबीब : अभी लाया मां। [जाता है]

मां : [बड़े प्यार के साथ] सुन्दरी, जल्दी कर बेटी। उन्हें भूख लगी होगी। सुबह के घर से निकले हैं।

सुन्दरी : अच्छा मां !

मां : या तू रहने दे। मैं खुद ही पतीली चूल्हे पर चढ़ा देती हूं। तू अलमारी से अण्डे निकालकर फेंट ले। रोज रोज साग-सब्जी अच्छी नहीं लगती···!

सुन्दरी : [हैरान होकर] अण्डे ? मगर मां वह तो···

मां : [बात काट कर] अरे, मैं जो कहती हूं, वही कर। अण्डे अब दुकानदार के पास नहीं जायेंगे। अब तो सब कुछ पैसे के एवज आयेगा। क्यों गिल्ली के बाबा ?

बाबा : हां, गिल्ली की मां ! अब पैसों की बारिश होगी। इतना पैसा आयेगा···इतना पैसा आयेगा कि सारे कर्ज़ चुका डालेंगे। सुना है कि बम्बई के सेठ बड़े फ़याज़ होते हैं। घोड़ों की दौड़ और जुए पर लाखों रुपये लुटाते हैं।

मां : अच्छा !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बाबा : हां तो और क्या···तुम बेफिक्र रहो गिल्ली की मां। मैं सुनार से एक एक चीज़ छुड़ा लाऊंगा।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मां : सबसे पहले सुन्दरी का हलकाबन्द और गिल्ली के झुमके छुड़ा लाना, गिल्ली के बाबा · तीन सौ की चीज़ें डेढ़ सौ में दबा बैठा है।

बाबा : हां! हां!! पहले सुन्दरी का हलकाबन्द छुड़ा लाऊंगा। वह तो सुन्दरी की अमानत है हमारे पास।

[**सुन्दरी अण्डे निकालकर एक बर्तन में फेंटती है। मां चिलम में तम्बाकू भर कर हुक्का बाबा के आगे रख कर खुद भी बैठ जाती है। सुन्दरी अण्डे फेंटते हुए बाबा से कहती है**]

सुन्दरी : बाबा! गिल्ली आज फिर गुब्बारों के लिए मचल गई!

बाबा : अरे हां! वह कहां है?

मां : बेदज़ार में मल्ला' सुल्तान के बच्चों के साथ खेल रही होगी। मैं अभी बुलाती हूं···[उसे पुकारते हुये] गिल्ली···गिल्ली··· गिल्ली बेटा···[**दूर से गिल्ली की आवाज़ आती है**]

गिल्ली : आती हूं ··

मां : जल्दी आ बेटी···तुझे बाबा बुला रहे हैं···

गिल्ली : [**दूर से ही**] बाबा आ गए···बाबा आ गए···

मां : [**उदास हो कर**] गुलाब जैसी बेटी चीथड़ों में लिपटी हुई है, गिल्ली के बाबा···!

बाबा : अरे तो इसमें पूछने की कौन सी बात है। इधर सेठ ने हाऊस-बोट में कदम धरा, उधर गिल्ली के लिए सुर्ख शींट की सलवार और कमीज़ आयेगी। लाल रंग की टोपी, चांदी की बालियां··· सभी कुछ तो लाऊंगा उसके लिए। गिल्ली की मां, अब तो चन्द दिनों की बात है। पंद्रह दिन···और···उसके बाद सब कुछ आयेगा···सब कुछ···

गिल्ली : [**अन्दर आते ही बाबा से लिपट जाती है**] बाबा·· बाबा···

बाबा : मेरी बच्ची कहां गई थी··[**उसे गले से लगा लेता है**]

गिल्ली : [**अपने आप को बाबा की गिरफ्त से छुड़ाते हुए**] देखो बाबा, अज़ीज़ी के पास इतना बड़ा गुब्बारा है। उस पर चान्द तारे बने हुये हैं। वह तो मुझे उसको छूने भी नहीं देती···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बाबा : अच्छा !

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गिल्ली : हां बाबा !

बाबा : तो क्या हुआ मेरा बच्ची ! मैं तेरे लिए बहुत से नीले पीले गुब्बारे लाऊंगा। इतने कि तू उनका हार बनाकर गले में डालती फिरे। तू भी अज़ीज़ी को उन्हें हाथ लगाने न देना वर्ना वह सब उड़ जायेंगे। [बाबा मुंह से आवाज़ पैदा करता है। गिल्ली और मां हंसती हैं। फिर गिल्ली का चेहरा उदास सा हो जाता है। वह बाबा की तरफ मुल्तिजियाना अंदाज़ में देखते हुये डरते डरते कहती है…]

गिल्ली : पर बाबा तुम तो रोज़ ही कहते हो। लाते कभी नहीं। अगर तुम मेरे लिए गुब्बारे ले आओ बाबा तो मैं अज़ीज़ी को दिखाऊंगी। और उसे हाथ भी लगाने न दूंगी।

बाबा : अब तो जरूर लाऊंगा बेटा। गुब्बारे ही नहीं, इतनी बड़ी विलायती गुड़िया भी जो चाबी से सिर को हिलायेगी, हाथों को हिलायेगी और आंखों को घुमायेगी।

[बाबा आंखों को घुमाते हैं। गिल्ली फिर हंसने लगती है। सुन्दरी अण्डों को फैंट कर एक तरफ रख देती है]

सुन्दरी : हबीब नहीं आया अभी तक ?

मां : आता ही होगा सुन्दरी [फिर कुछ याद करके] हां गिल्ली के बाबा…कर्जे अदा होंगे तो हबीब की शादी रचायेंगे।

बाबा : देखना किस शान से शादी करूंगा हबीब की। एक ही बेटा है मेरा…इस धूम धाम से शादी करूंगा कि मल्ला' सुल्तान भी दांतों तले अंगुली दबा कर कहने पर मजबूर होगा कि ग़ैरत वाले देखे हैं पर खालिक जैसा कोई नहीं।

सुन्दरी : मेरा राजा भैया दूल्हा बनेगा। घर में चांद सी भाभी आयेगी।

मां : [ख्यालात की रौ में बहते हुए] कश्ती के आगे अग्नबोट चलेगा, फिर बाजा होगा और उसके बाद गाने वालों की टोली और पास ही हबीब दूल्हा बना बैठा होगा। शर्म से सिर नीचे किए हुए, होठों पर हसी और आंखों में खुशी लिए हुए। मेरे अल्लाह ! कब से आस लगाए बैठी थी मैं। [बाहर कश्ती खेने की आवाज़ आती है]…शायद हबीब आ गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बाबा : [चट्टाई एक तरफ उठाते हुए] देखूं तो···कौन है भई ? अरे गफ़्फ़ारा ! क्या हाल है।

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गफ़्फ़ार : [बाहर से ही जोर जोर से आवाज देते हुए] ठीक है मल्ला' खालिक ! तुम सुनाओ ?

बाबा : शुक्र है अल्लाह-ताला का। आज चिट्ठी आई है बम्बई से।

गफ़्फ़ार : चिट्ठी मुबारक हो मल्ला' खालिक·· किसी अमरीकन की है ?

बाबा : एक देसी की है। अपनी फैमिली के साथ आ रहा है। पन्द्रह दिनों में···

गफ़्फ़ार : चलो अच्छा हुआ। अमरीकन न सही, देसी ही सही। कारोबार तो चलना चाहिए।

मां : [अंदर से ही आवाज देती हुई] आओ गफ़्फ़ार जू, चाय पीकर जाओ···

गफ़्फ़ार : नहीं, अब देर हो गई। यह लो ! तुम्हारा हबीब भी तो आ गया···

बाबा : भई आओ ना···

गफ़्फ़ार : नहीं भई। अब तो किसी दिन आ ही जायेंगे। शुक्र करो कारोबार की सूरत तो निकल आई।

बाबा : किस मुंह से शुक्र करूं गफ़्फ़ार···

मां : हमारी तो आस ही डूबती जा रही थी।

गफ़्फ़ार : अच्छा ! सलामा-लेकम !

[हबीब हाथों में चीजें लिए अन्दर आता है। बाबा चट्टाई गिरा कर फिर हुक्का पीने लगते हैं]

हबीब : [सुन्दरी से] यह लो सुन्दरी खांड, यह चाय और यह कुलचे !

बाबा : अरे ! कुलचों की क्या जरूरत थी ?

मां : ओऽहो ! यही आदत तो मुझे एक आंख नहीं भाती। आज कुलचा आ गया तो क्या हुआ। गिल्ली के बाबा मेरे पास पैसा होता तो आज की खुशी लुटाती।

बाबा : अच्छा भई तुम्हारी मर्जी।

हबीब : [बाबा के करीब जाते हुए] वह चिट्ठी तो दिखाओ बाबा।

बाबा : [जेब से निकालते हुए] यह···यह लो···मैंने डाकखाने के मुंशी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

से भी यह पढ़वाई है। हां ! सुनो, कल से तुम छावनी नहीं
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जाओगे।

हबीब : [चिट्ठी से बेन्याज़ हो कर हैरान होते हुए] क्या कहा बाबा ? मैं छावनी नहीं जाऊंगा ?

बाबा : हां हां तुम छावनी नहीं जाओगे ··

हबीब : मगर बाबा फिर खायेंगे क्या ?

बाबा : पगले अब तो दूसरों को खिलाने के काबिल हैं हम लोग। तुम फिक्र काहे को करते हो ? हां ! देखो, कल से बोट धुलेगा। मैंने मज़दूरों से भी कह दिया है। वह कल सुबह आ जायेंगे।

सुन्दरी : सच बाबा ! हमारा हाऊस-बोट भी धुलेगा !!

बाबा : हां बेटी ! हबीब, यह लो सोडा और साबुन ··मैं साथ ही लाया हूं, बाज़ार से।

हबीब : किस से ले आए ?

बाबा : मही-उद्-दीन से।

हबीब : मगर उसने तो यह देने की कसम खा रखी थी !

बाबा : चिट्ठी देखकर तो वह भी खुश हो गया। कहने लगा— तुम्हारे कारोबार से हमें भी तो फायदा होता है। फिर उसने चुपके से चीज़ें मेरे हवाले कीं और बोला— अपनी दुकान है जो जी में आये ले लो मल्ला' खालिक। ·· हां ! गिल्ली की मां, वह ब्रश सम्भाल कर रखे हैं ना ?

सुन्दरी : बाबा ! वह मैंने सिंगार मेज़ में रखे हैं।

हबीब : [छेड़ते हुये] और क्या कुछ रखा है सिंगार मेज़ में सुन्दरी ?

सुन्दरी : अपनी भाभी के गहने। [सब हंसते हैं]

मां : अरे तो इस में हंसने की कौन सी बात है। आज न सही कल तो हबीब की बहू आ ही जायेगी।

हबीब : [शर्माते हुए] जाने दो मां ! हां तो बाबा, मैं सचमुच कल मज़दूरी के लिए न जाऊं ?

बाबा : हां ! तुम बोझ ढोने के लिए पैदा नहीं हुये थे। जैफ़रसन कहा करता था···

हबीब : जैफ़रसन झूठ कह रहा था बाबा। तुम ने खामख्वाह उसकी बात को पत्थर की लकीर बना के रख दिया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबा : अरे ! ऐसा नहीं करते पगले !! जैफ़रसन कभी झूठ नहीं कहता था ।

हबीब : उसने सच कहा होता बाबा तो मैं स्कूल छोड़ कर मज़दूरी करने के लिए मजबूर न हो जाता । मैं आज तक बहुत कुछ पढ़ लिख चुका होता बाबा !

बाबा : अब भी कुछ नहीं गया बेटे । सेठ साहब को आने दो । देखना तुम्हें फिर स्कूल भेज दूंगा । एक ही साल में तुम कालेज चले जाओगे और जैफ़रसन की बात सच होकर रहेगी ।

हबीब : सच बाबा । तो क्या मैं कालेज जा सकूंगा ?

[सुन्दरी चाय प्याली में ले आती है और बाबा के आगे रख देती है । बाबा चाय पीने लगते हैं । गिल्ली उसके पास ही बैठी हुई अपने बाबा की बातें सुन रही है ।]

सुन्दरी : मां तुम भी पियोगी ?

मां : नहीं बेटी । हां ! गिल्ली के लिए थोड़ी सी लाओ ।

सुन्दरी : अच्छा मां !

[प्याली गिल्ली को देती है]

बाबा : **[चाय पीते हुये]** जितनी देर में हाऊस-बोट साफ़ किया जायेगा तुम दरियां और पर्दे उस्ताद रसूल के पास पहुंचा देना या उसके पास आदमी भेज देना । मैं यहां न हुआ तो उससे कहना कि ड्राइंग रूम के पर्दों को सुर्ख रंग दे और बैड-रूम के पर्दों को लाइट-ब्लू । जैफ़रसन कहा करता था कि सुर्ख रंग भूख को बढ़ाता है और नीला रंग नींद को बुलाता है । क्यों याद है न तुम्हें हबीब ! अभी कल ही की तो बात मालूम हो रही है वह !

मां : **[उदास होकर]** मगर इतनी सी देर में हम पर क्या कुछ बीती···

बाबा : भूल जाओ इन बातों को गिल्ली की मां । अब तो सारे गिले शिकवे दूर होंगे···हां ! यह तो बताओ, अब और किन चीज़ों की ज़रूरत होगी क्राकरी और छुरियां तो महीउद्-दीन से ले आऊंगा लेकिन लैम्पों के शेड ?

हबीब : लैम्पों के शेड तो हैं बाबा !

CC-0.Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबा : हूंह । उनका रंग उड़ गया है । जैफ़रसन कहा करता था कि लैम्पों के शेडों का रंग हमेशा सब्ज होना चाहिए…ऐसा कि देखते ही आंखों को ठंडक महसूस हो ··[फिर यकायक कुछ याद करते हुए]··हबीब तुम्हारी मज़दूरी के पैसे ?

हबीब : अभी तो पहली में बारह दिन हैं बाबा··

बाबा : बारह दिन ! खैर कोई बात नहीं ! कहीं न कहीं से तो पैसा आ ही जायेगा । और भी तो पैसों की जरूरत होगी । किसी से मांग लूंगा ।

हबीब : सुन्दरी…

सुन्दरी : क्या है भैया ?

हबीब : ज़रा लालटेन इधर लाओ···

सुन्दरी : अभी ठहरो भैया । मुझे अण्डे तलने दो···

हबीब : [यकीन न करते हुए] अण्डे !

मां : हां, हां ! इसमें हैरान होने की कौन सी बात है !

हबीब : मगर सुन्दरी तो कह रही थी कि आज भी रोज़ की तरह घास ही पक रही है।

मां : घास ?

सुन्दरी : [हंसते हुये] मां हबीब साग-सब्जी को घास ही कहता है। [सब हंसते हैं]···और लाऊं बाबा ?

बाबा : हां बेटी थोड़ी सी और लाओ, गिल्ली के लिए भी···

गिल्ली : मुझे नहीं चाहिए ।

सुन्दरी : भर गया मेरी नन्ही का पेट ?

हबीब : अण्डों के सालन के लिए तैयारी कर रही होगी । क्यों गिल्ली ?

गिल्ली : बाबा, मेरे लिए गुब्बारे लायेंगे…नीले, पीले और लाल गुब्बारे ।

हबीब : अच्छा !

गिल्ली : हां ! ···क्यों बाबा ?

बाबा : हां ! हां !! जरूर लाऊंगा ।

[सुन्दरी अण्डों को बर्तन में डाल देती है । फिर लालटेन हबीब को देकर वापस चूल्हे के पास चली जाती है]

हबीब : [लालटेन मां को पकड़ाते हुये] मां ! जरा इसे तो सम्भालो । मैं खत पढ़ूंगा···

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

[हबीब खत पर नज़र डालता है। लालटेन की रोशनी में उसका चेहरा यकायक भयानक हो जाता है। वह ख़त को हाथों में लेकर इस तरह खड़ा रहता है जैसे किसी ने उसके जिस्म से जान निकाल ली हो।]

मां : [हबीब के चेहरे की हालत देखकर] हबीब !

हबीब : [होश में आते हुए और दर्द भरे लहजे में] बाबा !

मां : क्या बात है हबीब ! तुम्हारा चेहरा ज़र्द क्यों पड़ गया ?

बाबा : [यकायक चौंकते हुए] क्या हुआ हबीब ?

सुन्दरी : [चूल्हे को छूकर हबीब के पास आते हुए] भैया !

गिल्ली : [अपनी ही धुन में] बाबा मेरे लिए गुब्बारे लायेंगे, विलायती गुड़िया लायेंगे···इतनी बड़ी।

हबीब : [बड़ी उदासी के साथ बाहों को ढीला छोड़ते हुए] बाबा !

मां : क्या बात है हबीब ? चिट्ठी में क्या लिखा है ?

हबीब : [बाबा से—जो एक बुत की तरह हबीब की तरफ देख रहे हैं] यह चिट्ठी तुम्हारे नाम नहीं लंकास्टर के मालिक के नाम है।

मां : [माथे पर हाथ मारते हुए] मेरे फूटे भाग। [लालटेन हाथ से छूट जाती है। वह गिर पड़ती है]

सुन्दरी : [रोते हुये] बाबा यह क्या हो गया ?

गिल्ली : [अंधेरे से डरकर और सुन्दरी को रोते देखकर] मां···बाबा···

हबीब : बाबा···कश्ती में अंधेरा फैल गया···तुम्हारे गुब्बारे भी फूट गए गिल्ली ··

गिल्ली : [रोते हुए] मां मेरे गुब्बारे···बाबा मेरी गुड़िया ··

सुन्दरी : [रोते हुये] हाय अल्लाह ! यह क्या हो गया ?

[लालटेन उठाकर फिर जलाती है]

हबीब : [आंखों से वहशत बरसती है] सुन्दरी···उम्मीदों के घरौंदे एक बार फिर मसमार हो गये। बाबा ! तुम खामोश क्यों हो गए ? कुछ तो बोलो बाबा···इन खोई खोई नज़रों से खला में न झांको···

गिल्ली : बाबा, मेरे गुब्बारे···मेरी गुड़िया···

[वक्फा ! जिसके दौरान बाबा के सिवा सब सिर झुकाए हुए रोते हैं। फिर बाबा यकायक उठ खड़े होते हैं। उनके चेहरे पर इरादे की झलक है]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मां : अब कहां जाओगे, गिल्ली के बाबा ?

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबा : तुमने सुना नहीं···गिल्ली के लिए गुब्बारे लाने हैं···और विलायती गुड़िया भी···

हबीब : [डरते हुए] बाबा !

बाबा : डरो मत बेटे ! तुम ही तो कह रहे थे कि उम्मीदों के घरौंदे मसमार हो गये। आओ मुझे पार उतार दो···

सुन्दरी : कहां जा रहे हो इस वक्त बाबा ?

बाबा : नये घरौंदों की तलाश में।···हबीब ! मुझे पार उतार दो।

हबीब : बाबा !

बाबा : हां मेरे बच्चो ! तुम्हारे लिए ऐसे घरौंदे तलाश करूंगा जिन पर मायूसियों के तूफ़ान न मंडला सकेंगे। ऐसे घरौंदे तामीर करूंगा जो झूठी उम्मीदों के सहारे खड़े न हों···

हबीब : पर बाबा, ऐसे घरौंदे कहां मिलेंगे ?

बाबा : क्यों नहीं मिलेंगे। मेरी उम्मीद अभी तक ज़िन्दा है।

[बाबा और हबीब दरवाज़े से निकल जाते हैं। सुन्दरी लालटेन को हाथ में लेकर खड़ी रहती है। उसके चेहरे पर उम्मीद की एक झलक पैदा होती है]

[पर्दा गिरता है]

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकादमी आॅफ आर्ट, कल्चर एण्ड
लैंग्वेजिज़, जम्मू

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant